|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पूज्य सम्राट

संस्थापक–श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | अगस्त–2019

दिव्याशीष–लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

पिपलौदा
चातुर्मास
–प्रवेश

धानेरा
चातुर्मास
–प्रवेश

पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजन

- श्री नवकार महामंत्र आराधना पिपलौदा व धानेरा में प्रारंभ श्रावण शुक्ला 7 बुधवार दि. 7 अगस्त 2019
- श्री नवकार महामंत्र आराधना पिपलौदा व धानेरा में पूर्ण श्रावण शुक्ला 15 गुरुवार दि. 15 अगस्त 2019 रक्षा बंधन ■ पक्खीधर भाद्रपद कृष्णा 4 सोमवार दि. 19 अगस्त 2019
- पर्वाधिराज पर्यूषण प्रारंभ भाद्रपद कृष्णा 11 सोमवार दि. 26 अगस्त 2019
- वीर जन्म वाचन बड़ा कल्प भाद्रपद कृष्णा 30 शुक्रवार दि. 30 अगस्त 2019
- संवत्सरी महापर्व भाद्रपद शुक्ला 4 सोमवार दि. 2 सितम्बर 2019

Received
05/9/19

3122

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला–जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट. सरसी जिला–रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गडसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा पाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

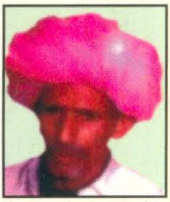

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा दाधाल

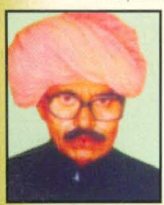

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

34250

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

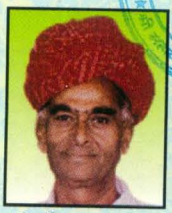
श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्दूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

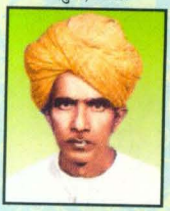
शा. धेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी लंकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

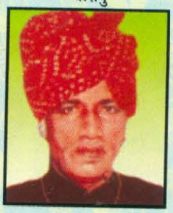
स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

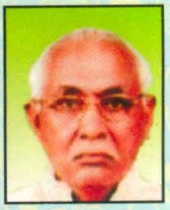
श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

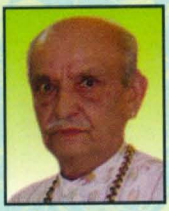
श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा–थलवाड़ा, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी थाणवसा विजयवाड़ा

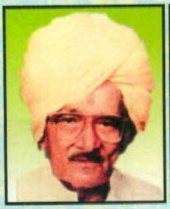
संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा वादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, थानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

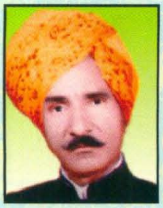

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

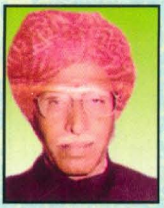

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाघाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

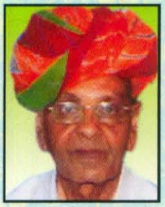

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

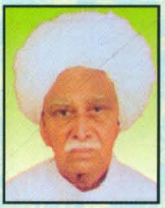

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

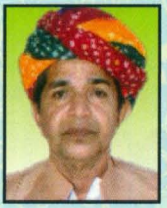

श्री उगमराजजी तीलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेवाजी
डामाणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, राधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

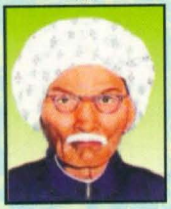

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, ढीसा

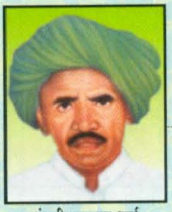

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

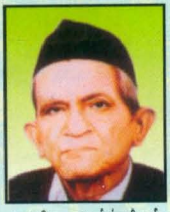

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

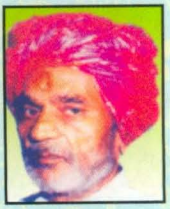

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

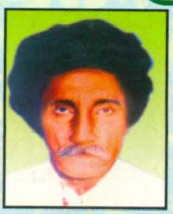
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

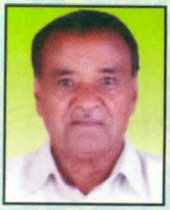
मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तळेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

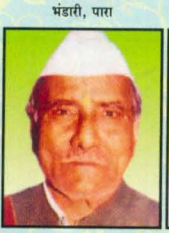
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

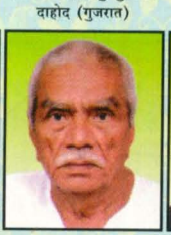
श्री मानसिंहजी राजगढ़

स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

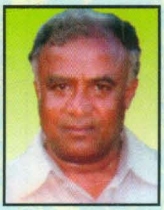

स्व.श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

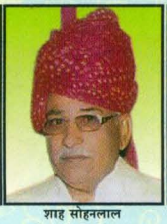

शाह सोहनलाल
मिश्रचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
अगस्त-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 8
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

मांस सर्वाधिक महंगी वस्तु

राजसिंहासन पर

मगध के सम्राट श्रेणिक पूर्ण छटा के साथ बैठे हुए थे। उन्होंने कहा-

राज्य में खाद्यान्न का अभाव है, प्रकृति भी रूठी हुई है, क्या इसका कोई विकल्प है।

सभी मौन ! लेकिन एक सामन्त ने कहा-

'जी ! हुजुर मांस, इसका कोई खर्च नहीं होता।'

सभी सहमत दिखाई दिये लेकिन प्रधानमंत्री अभय कुमार एकदम चुप्प !

महाराज श्रेणिक ने अभय कुमार की ओर देखा ! अभय कुमार ने कहा- 'मैं कल उत्तर दूंगा।'

सभा विसर्जित हो गई। रात्रि हो गई। अभयकुमार मांस की सलाह देने वाले सामन्त के घर पहुंचा। उसने कहा- 'शाम को महाराजा श्रेणिक बहुत बीमार हो गये हैं। राजवैद्य का कहना है कि किसी राजवंशी के हृदय का दो तोला मांस मिल जाए तो ईलाज हो सकता है। आपके हृदय का दो तोला मांस दे दीजिये, आप को एक लाख स्वर्ण मुद्राएं मिल जाएंगी।

सामंत के होश उड़ गये। उसने अभय कुमार के पैर पकड़ लिये और कहा- मुझे बचाओ ! ये एक लाख स्वर्ण मुद्राएं मुझसे ले जाओ ।

इस तरह रात्रि भर अभयकुमार कई अधिकारियों के यहाँ घूमता रहा, सवेरे तक एक करोड़ स्वर्णमुद्राएं एकत्र हो गईं। अगले दिन अभय कुमार ने राज्यसभा में इन स्वर्णमुद्राओं का ढेर लगा दिया। राजा उसकी ओर देखने लगा। अभयकुमार ने पूरी कहानी सुना कर कहा-

'यह दो तोले माँस का मूल्य। जान सभी को प्यारी है। मांस सबसे महंगा सिद्ध हुआ है ।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	संपादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	9
2.	वर्षायोग जीवन का त्यौहार बनाने का सुअवसर है (मुनि श्री सौरभसागरजी म.)	11
3.	प्रश्नोत्तरी	12
4.	अशुभ वचनयोग-29 (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	13
5.	गणधरवाद (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	16
6.	मैं जानता हूँ (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	19
7.	सिद्धार्थमय बन जाएँ (जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	21
8.	अण्डे मांसाहार ही हैं (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	23
9.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	25
10.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरु)	26
11.	चातुर्मास की महिमा (श्री रणजीतसिंह सोजत्या)	27
12.	महाराजा श्रेणिक (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	29
13.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	31
14.	रक्षां गिरः पान्तुवः (मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.)	33
15.	किं स्वरुपम् 'मान'-(पुण्यसम्राट ज्ञानञ्जनम् पव-पाटण)	35
16.	आत्मसाधना का वर्षायोग-चातुर्मास	36
17.	पूजा के दसत्रिक तथा उनके भेद (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.)	38
18.	कालचक्र तथा उसके आरे (मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)	40
19.	श्री जयंतसेन जयनाद (जैनेश अजय जैन, इन्दौर)	42
20.	जयंतसेन हस्ताक्षर	43
21.	त्रिस्तुतिक संघ का भाल (श्रीमती पद्मा हेमेन्द्र सेठ)	44
22.	जयंत गुरु वंदनावली (घेवरचन्दजी नाहर, जमरवण्डी, कर्नाटक)	45
23.	श्री जयंतसेन जीवन झलक-(10) (साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	46
24.	धर्म है सुखों का बड़ा महल और उत्कृष्ट मंगल (श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)	47
25.	शान्ति और क्रान्ति के अग्रदूत दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाला)	49
26.	आध्यात्मिक पर्व पर्युषण (श्री जोगीराम जैन)	53
27.	पर्युषण पर्व आ रहा है (श्री अचलचन्द जैन, सायला)	54
28.	राजेन्द्र जयंत का साथ हमने पाया... (प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल, नयागांव)	55
29.	चातुर्मास-श्रमण संस्कृति का प्रतीक (प्रस्तुति-श्री अरविंद शास्त्री)	56
30.	गुजराती संभाग	57-72
31.	कुमकुम सने पगलिये	73-97
32.	परिषद प्रांगण से	98-99
33.	श्री संघ सौरभ	100
34.	जैन विश्व	101-102
35.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	103-104

सम्पादकीय

सिर्फ एक शब्द बदलवाना भी कठिन

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

जैन समाज को हकीकत की जमीन पर आने की दिशा में चिन्तन-मनन करना चाहिये। हम आत्ममुग्धता से ग्रसित हैं। सभी राजनैतिक दल तथा राजनैतिक नेता अपने चन्दे (आर्थिक योग) की तृषा जैन समाज से तृप्त करते हैं अतएव जैनों के गले में हाथ डालकर चलते हैं, हम इसी में धन्य हो जाते हैं। जैनों को राजनैतिक हैसियत देने या सत्ता में भागीदार बनाने की उदारता का सभी कौनों पर अभाव है। यही कारण है कि हमारे तीर्थों की पवित्रता तथा अस्मिता पर शासकीय स्तर से भी हमले किये जाने का किसी को संकोच नहीं है। विधानसभाओं में तथा लोकसभा में जैनों की शक्ति नगण्य है। हम अपनी घटती हुई जनसंख्या तथा भारत जैसे देश में कुल जनसंख्या में अपने नगण्य प्रतिशत के प्रति चिन्तित नहीं हैं। कोई भी दिल से यह नहीं चाहता कि जैन किसी भी पंक्ति पर अग्रणीयता प्राप्त करें। जैनों को चिढ़ाने में हर एक कोताही कर लेता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्ष से ही जैनों की ओर से यह मांग बुलन्द होती रही है कि पूरे देश में तीर्थंकर श्री महावीर देव के जन्मोत्सव दिवस को शासकीय अवकाश घोषित किया जाए। तब यह अवकाश केवल कुछ राज्यों में था, केन्द्र शासन या रिजर्व बैंक जैसे संस्थानों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जैन समाज बराबर मांग करती हुई आ रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बहत्तरवें वर्ष में भी स्थिति है कि केन्द्र शासन ने स्वयं इसे अवकाश घोषित कर दिया है लेकिन कई राज्यों में अभी भी अवकाश सूची में यह पर्व या अन्य कोई जैन पर्व नहीं है। इसी तरह श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक दिवस को श्री महावीर जयंती नाम से निरंतर सम्बोधित किया जा रहा है, इसे शास्त्रीय नाम से परिवर्तन करवाने में जैन समाज की न तो सक्रिय पहल है, न ही मांग है जन्म कल्याणक शब्द का उपयोग ही सर्वथा उपयुक्त तथा उचित है। हमारी जैन शब्दावली में जो आगमों से उद्भूत हुई है, जयन्ती शब्द कहीं नहीं है। हम जयन्ती शब्द का प्रयोग या इसके प्रयोग को स्वीकार कर अपने सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, वीतरागी महापुरुषों की आशातना कर रहे हैं। तीर्थंकर देव लोकोत्तर महापुरुष हैं, उनके जन्म को कल्याणक मानना ही हमारी आस्था का संरक्षण है। उनके लिये

मृत्यु, देहान्त या देहावसान शब्दों का प्रयोग भी गरिमाहीन है। वे मोक्ष में पधारे हैं, उनके लिये मोक्ष कल्याणक का प्रयोग किया जाना चाहिये। जन्मोत्सव, जयन्ती, देहावसान, मृत्यु जैसे शब्द हमारे नहीं हैं, और यदि हमारे नहीं हैं तो इनका प्रयोग हमारे तीर्थंकर देवों (श्री आदिनाथजी, श्री पार्श्वनाथजी, श्री महावीर स्वामी आदि) के साथ उपयुक्त किया जाना हमारे धार्मिक विश्वास के साथ खिलवाड़ है। यह खिलवाड़ वर्षों से हो रहा है, दुःख है प्रजातंत्र में भी हम इसका समाधान नहीं कर पा रहे हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'श्री महावीर जयंती' शब्द को 'श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक' करने के लिये भारत शासन अथवा राज्य सरकारों को किसी प्रकार का आर्थिक कदम उठाने की आवश्यकता नहीं है। उस हेतु न बजट में प्रावधान की अनिवार्यता है, न ही किसी समाज विशेष की इस मांग से कोई प्रतिद्वन्दीता है। न किसी के किसी नीतिगत विषय का इससे खण्डन होता है। शब्द में परिवर्तन के लिये केवल एक परिपत्र प्रसारित किये जाने की जरूरत है। इतनी छोटी सी बात को जैन समाज स्वीकार नहीं करवा पा रही है। और हम आत्मुग्धता में लगातार दावा करते हैं कि देश का छत्तीस प्रतिशत आयकर जैन समाज जमा करती है, इतने प्रतिशत हिस्सा शासन के राजस्व में हमारा है, हमारे इतने इंजीनियर, डॉक्टर, कलेक्टर हैं आदि-आदि । इनसे हमारे गौरव में कोई अभिवृद्धि नहीं होनी है।

जैन समाज के कार्यक्रमों में राजनेताओं को आमंत्रित कर तथा उन्हें सम्मानित करने की होड़ चलती रहती है। कई पूज्य आचार्यगण अथवा प्रभावशील मुनि-साध्वीगणों के दर्शनार्थ राजपुरुषों का आगमन होता रहता है। इनकी चर्चाएं भी होती हैं। यह सही है कि आचार्यगण जीवदया की ओर राजनेताओं का ध्यान आकर्षित करते हैं तथा यांत्रिक या अन्य कत्लखानों की संख्या व क्षमता बढ़ाने का उपदेश देते हैं और मांसाहार के प्रचलन को हतोत्साहित करने का परामर्श देते हैं। हम नहीं कहते कि इसका कितना सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुआ लेकिन यह तो तथ्य है कि हम 'श्री महावीर जयंती' शब्द के हठाग्रह को बदलवा कर श्री महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव करवाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं।

इस वर्ष गुजरात राज्य शासन ने अवश्य अधिकृत रूप से 'श्री महावीर स्वामी जन्मकल्याणक' शब्द का उपयोग किया है। मुख्यमंत्री श्री विजयजी रूपानी की प्रशंसा की जानी चाहिये । (श्री रूपाली स्वयं जैन श्रावक हैं।)

सुरेन्द्र लोढ़ा
(संपादक) ■ ■

वर्षायोग जीवन का त्यौहार बनाने का सुअवसर है

(मुनि श्री सौरभसागरजी म.)

वर्षायोग धर्म के संविभाग का समय है। प्रकृति से निवृत्ति की ओर जाने का सुअवसर है। स्वयं को पाप से मुक्त करने की कला के जागरण का समय एवं संत समागम के अद्भुत क्षण का नाम वर्षायोग है। वर्षायोग में साधु आषाढ़ सुदी चतुर्दशी से कार्तिक वदी चतुर्दशी तक एक स्थान पर रहता है और ज्ञान, ध्यान, तपस्या करके श्रावकों को भी उस मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

वर्षायोग शब्दों से मिलकर बना है एक वर्षा दूसरा योग। वर्षा का अर्थ है पानी का बरसना और योग का अर्थ है जोड़ अर्थात आकाश से वर्षा होती है और वह धरती से जुड़ जाती है, तो धरती से अंकुरण की उत्पत्ति होती है। उसी प्रकार संत की वाणी रूपी वर्षा श्रावक रूपी भूमि में पहुंच जाती है तो धर्म संस्कारों का अंकुर प्रस्फुटित हो जाता है। वर्षायोग श्रमण और श्रावक के संयोग का दिन है। वर्षायोग धर्म संस्कार जागृत करने का एवं संत सान्निध्य का पावन अवसर है। जिस प्रकार बरसात में मेघ वृक्षों, पर्वतों और भवनों को धोते हैं उसी प्रकार चौमासे में संत अपने ज्ञान और आचरण की बरसात कर जनमानस के दिल व दिमाग को स्वच्छ करते हैं। धर्म से परिपूरित करते हैं, वर्षायोग जीवन को त्यौहार बनाने का अवसर का सुअवसर है। इस अवसर पर श्रावक संत की सन्निधि में बैठकर अपने बर्बाद हो रहे जीवन को आबाद करता है और आषाढ़ के माह में धर्म की बाढ़ में बहकर सावन तक पावन होकर भाद्रपद में भद्रता को जागृत कर लेता है। जो भद्र होने से वंचित रह जाता है वह क्वांर तक कोरा और कार्तिक तक कायर होकर धर्म से पलायन कर जाता है। यह चार माह कायर होने को नहीं वीर होने को मिले हैं। इसलिए पुरुषार्थ करें और अपनी आत्मा को जागृत करें। ■■

चातुर्मास को सार्थक बनाने के लिए व्यक्तिशः कम से कम निम्नलिखित दृढ़ संकल्प होने चाहिए।

(1) प्रतिदिन एक सामायिक करना।
(2) नियमित प्रवचन सुनना।
(3) पखवाड़े में कम से कम एक उपवास का आयंबिल करना।
(4) निश्चित पृष्ठों का प्रतिदिन स्वाध्याय करना।
(5) विशेष तिथियों एवं पर्वों पर विशेष संयम एवं त्याग करना।
(6) रात्रि भोजन नहीं करना।
(7) कम से कम पक्खी का प्रतिक्रमण अवश्य करना।

प्रश्नोत्तरी

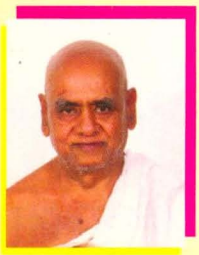

पल्योपम कितने वर्षों का ?

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. अहोरात्रि (दिन-रात) किसको कहते हैं ?

उ. तीस मूहूर्त की एक अहोरात्रि (एक दिन और एक रात्रि) होती है।

प्र. पक्ष किसे कहते हैं ?

उ. पन्द्रह दिन-रात का एक पक्ष होता है।

प्र. मास किसको कहते हैं ?

उ. दो पक्ष का एक मास होता है।

प्र. वर्ष कितने मास का होता है ?

उ. बारह मास का एक वर्ष होता है।

प्र. युग कितने वर्ष का होता है ?

उ. पाँच वर्ष का एक युग होता है।

प्र. पल्योपम कितने वर्षों का होता है ?

उ. असंख्यात वर्षों का एक पल्योपम होता है।

प्र.सागरोपम किसको कहते हैं ?

उ. दस कोड़ा कोड़ी (कोटा कोटी) पल्योपम का एक सागरोपम होता है।

प्र. कोड़ा-कोड़ी किसको कहते हैं ?

उ. एक करोड़ को एक करोड़ से गुणने पर जितनी संख्या आवे, उसे कोड़ा कोड़ी कहते हैं।

प्र. उत्सर्पिणी काल किसको कहते हैं ?

उ. शरीर संस्थान आयु आदि जिसमें बढ़ते जायें, उसे उत्सर्पिणी काल कहते हैं। यह दस कोड़ा कोड़ी सागरोपम का होता है।

प्र. उत्सर्पिणी काल में कितने आरे होते हैं ?

उ. छह आरे होते हैं। जिनके नाम इस प्रकार हैं- 1. दुषभ दुषम 2. दुषभ, 3. दुषभ सुषभ 4. सुषभ दुषभ 5. सुषभ, 6. सुषभ सुषभ

प्र. अवसर्पिणी काल किसको कहते हैं ?

उ. जिस में शरीर की अवगाहना, बल आयु इत्यादि घटते जायं उसे अवसर्पिणी काल कहते हैं। यह भी दस कोड़ा कोड़ी सागरोपम का होता है। ■■

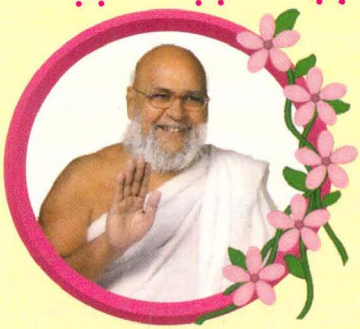

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (29)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

एक नगर था उसमें एक राजा राज करता था। रानी थी, जो बहुत सुन्दर होने से राजा को बहुत प्यारी थी।

शुद्ध हवा में भ्रमण करने से सभी प्राणी स्वस्थ रहते थे। किन्तु बगीचे के बिना शुद्ध हवा नहीं मिल सकती- यह बात राजा को मालूम थी इसलिए लाखों रुपयों की लागत से उसने एक सार्वजनिक बगीचा बनवा दिया था। उसमें स्त्री-पुरुष भ्रमण किया करते थे परन्तु सामान्य नागरिकों के साथ घूमना रानी को अपनी महत्ता के अनुरूप नहीं लगा इसलिए राजा से अनुरोध कर रानी ने स्वयं अपने घूमने के लिए एक उद्यान बनवा लिया। उद्यान में एक दो मंजिल की इमारत भी बनी थी।

एक दिन बगीचे में बैठी रानी की साड़ी पर जब किसी पक्षी ने बीट कर दी तो क्रुद्ध होकर उसने राजा से कहा कि इस बगीचे के सारे पक्षियों को मरवा दिया जाए। राजा ने वैसा आदेश दे दिया। उसके आधार पर अन्य पक्षी तो शीघ्र पकड़ में आ गए, परन्तु बाज थोड़ी देर बाद पकड़ा गया। इसका कारण पूछने पर उसने बताया- 'आप जैसे मनुष्यों के राजा है, वैसे मैं भी पक्षियों का राजा हूँ। मेरे सामने एक प्रश्न आया कि दुनिया में नर अधिक हैं या नारियाँ । मैंने उत्तर दिया कि नारियाँ अधिक है, क्योंकि जो नर-नारियों की आज्ञा मानते हैं, वे भी नारियों में ही गिने जाएँगे ।'

यह सुनकर राजा ने आदेश दिया कि इस बाज के साथ सारे

पक्षी छोड़ दिए जाएँ परन्तु रानी ने इसे अपना अपमान समझा और आत्महत्या की धमकी देकर वह इमारत की सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। उससे डरकर राजा ने फिर से पक्षियों को पकड़वाया तो बाज फिर देर से पकड़ में आया। इस बार कारण पूछने पर उसने बताया- 'राजन् ! दुनियाँ में मुँह अधिक हैं या मलद्वार ? इस प्रश्न के उत्तर में मैंने मलद्वार अधिक बताए, क्योंकि वे मुँह जिनसे कही गई बात बदल दी जाती है, मलद्वारों में ही गिने जाएँगे।'

राजा समझ गया। पक्षी मुक्त कर दिए गए। रानी ने भी अपनी हठ छोड़ दी। बाज ने वचन चातुरी से सब पक्षियों के प्राण बचा लिए। 'उत्तराध्ययनसूत्र' के रूप में शिष्यों को अपने अन्तिम सारगर्भित महत्त्वपूर्ण उपदेश उपक्रम करते हुए वीतरागदेव प्रभु महावीर फरमा रहे हैं :-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुव्वि सुणेह मे ।।

संयोगों से प्रमुक्त अनगार भिक्षुओं को मैं विनय का स्वरूप बताने वाला हूँ। मुझे क्रमशः सुनें।

अपने अपवित्र संयोग से आत्मा को कलुषित करने वाले अशुभ वचनयोग का यहाँ विवेचन चल रहा है।

हम विचार कितना भी करें, परन्तु कहें उतना ही, जितना कर सकते हो। जो कार्य नहीं कर सकते, उसे मुँह से प्रकट करने का कोई अर्थ नहीं। ऐसी बातें मुँह से सुनकर लोग ताली पीट सकते हैं, प्रशंसा कर सकते हैं, शाबाशी दे सकते हैं, परन्तु भविष्य में जब कहे अनुसार हम कार्य नहीं कर पा रहे हैं- ऐसा लोग जानेंगे, तब वे हमारी निन्दा भी दुगुनी करेंगे। फिर हम पछताते हैं कि यदि वैसा हमने न कहा होता तो अच्छा रहता। अपनी सामर्थ्य से बढ़-चढ़कर बात कहने से मौन रहना अच्छा था... आदि, परन्तु बाद में पछताने से कोई लाभ नहीं होता।

किसी विचारक का यह कथन शत-प्रतिशत सत्य है कि जब तक हम बोलते नहीं, तब तक शब्दों पर हमारा अधिकार रहता है, परन्तु बोलने के बाद हम पर शब्दों का अधिकार हो जाता है। फिर वीर पुरुष प्राणों की भी परवाह न करके अपने वचन का पालन करते हैं -

रघुकुल रीति सदा चलि आई,
प्राण जाहिं पर वचन न जाईं ।।

- रामचरितमानस

जिस राम के वियोग में महाराज दशरथ ने प्राण छोड़ दिए, उस राम को भी अपने वचन का पालन करने के लिए छोड़ दिया। कैकेयी को दिए वचन का पालन करने के लिए राम को वनवास दे दिया था-चौदह वर्ष के लिए। वचन-पालन का एक आदर्श उन्होंने सबके सामने रखा।

(क्रमशः)

■ ■

पर्युषण पर्व

आध्यात्मिक पर्वों के सिरमौर पर्व का नाम है	- पर्युषण पर्व
जिनानुयायियों का महापर्व है	- पर्युषण पर्व
आत्मजागरण का महापर्व है	- पर्युषण पर्व
वृत्तियों को उपशांत करने की साधना का महानुष्ठान है	- पर्युषण पर्व
आत्मदोषों के परिहार का साधना पर्व है	- पर्युषण पर्व
विश्वमैत्री पर्व का दूसरा नाम है	- पर्युषण पर्व
आत्मभावों में रमण करने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
क्षमा लेने देने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
वर्ष भर के ज्ञात-अज्ञात भूलों पर पश्चाताप करने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
प्रमाद या स्वार्थवश किये गए भूलों को भूलने का पर्व है	- पर्युषण पर्व
वर्ष भर के साधना के लेखा-जोखा का पर्व है	- पर्युषण पर्व
बैर को मिटाने का महापर्व है	- पर्युषण पर्व

प्रेषक - महेश नाहटा, नगरी (छत्तीसगढ़)
मो. 94062-01351

प्रवचनकार

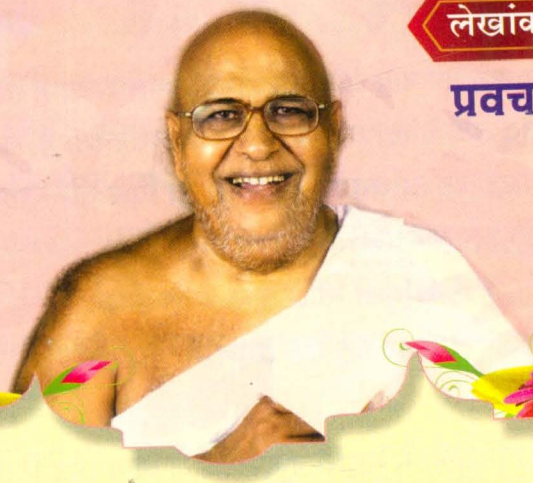

गणधरवाद

स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीशश्वरजी म.सा.

व्यक्त- पृथ्वी आदि भूतों को सचेतन सिद्ध करने का प्रसंग होने से सर्वप्रथम पृथ्वी को ही सजीव सिद्ध करना चाहिए था, लेकिन उसके बदले पहले वृक्षों में और उसके बाद विद्रुम-प्रवाल, नमक आदि रूप पृथ्वी में जो सजीवता सिद्ध की उसका क्या कारण ?

महावीर- वनस्पति यह लौकिक प्रसिद्ध प्रमाणानुसार पृथ्वी भूत का ही विकास होने से उसका समावेश पृथ्वी भूत में है। यह स्वतंत्र भूत नहीं है। इसलिए तथा वनस्पति में जैसे स्पष्ट चैतन्य लक्षण दिखते हैं, वैसे विद्रुम आदि में दिखते भी नहीं हैं। इसलिए पहले वृक्षों में सजीवता सिद्ध की है।

व्यक्त- यह तो समझ लिया। किन्तु जल को भी सचेतन कैसे सिद्ध करते हैं ?

महावीर- जमीन खोदने पर जमीन से सजातीय ऐसा स्वाभाविक रीति से निकलने वाला होने से पानी मेंढ़क की तरह सजीव है अथवा मछलियों की तरह बादलों में से गिरने वाला होने से पानी सजीव हैं।

व्यक्त- वायु को सजीव कैसे माना जाये ?

महावीर- जैसे गाय दूसरे की प्रेरणा के बिना अनियमित रूप में तिर्यकगमन करती है वैसे ही वायु भी गति करने वाली होने से सजीव है।

व्यक्त- और अग्नि सजीव कैसे है ?

महावीर- जैसे मनुष्य में आहार आदि से वृद्धि और विकास दिखता है, वैसे ही अग्नि में भी लकड़ी ईंधन के आहार से वृद्धि और विकास दिखता है। जिससे वह मनुष्य की तरह सजीव है।

पृथ्वी आदि चारों भूत जीव द्वारा उत्पन्न किये गये और जीव के आधार भूत शरीर हैं, क्योंकि वे अभ्रविकार (मेघ आदि) से भिन्न मूर्त जाति के द्रव्य हैं जैसे गाय आदि का शरीर। ये शरीर जब तक शस्त्रोपहत न हो, तब तक सजीव है और शस्त्रोपहत होने पर निर्जीव होते हैं।

दूसरी बात यह है कि पृथ्वी आदि एकेन्द्रिय जीव यदि संसार में न हों, तो संसार का विच्छेद हो जायेगा। क्योंकि संसार से बहुत से जीव मोक्ष जाते रहते हैं और नये जीव तो उत्पन्न होते ही नहीं तथा लोक भी बहुत परिमित है अतः उसमें स्थूल जीव तो स्वल्प ही रह सकते हैं।

जिससे संसार जीवरहित हो जायेगा। किन्तु संसार का जीव रहित हो जाना तो कोई नहीं मानता। इसलिए पार्थिवादि एकेन्द्रिय जीव की अनन्त संख्या माननी चाहिए। ये जीव भूतों को अपना आधार रूप शरीर बनाकर उनमें उत्पन्न होते हैं।

भूतों के सजीव होने पर भी अहिंसा का सद्भाव

व्यक्त- किन्तु यदि पृथ्वी आदि भूतों में आपके कथनानुसार अनन्त जीव हों तो आहारादि लेने से साधु को भी उन अनन्त जीवों की हिंसा का दोष लगता है। और तब तो अहिंसा का अभाव ही हो

जायेगा।

महावीर- अहिंसा का अभाव नहीं होता, क्योंकि मैंने पहले ही कहा है कि शस्त्रोपहता पृथ्वी आदि भूतों में जीव नहीं होता। वे सब भूत निर्जीव हैं।

तथा हिंसा-अहिंसा का विवेक तुम्हें करना चाहिए। लोक जीवों से संकुल-व्याप्त है, इतने मात्र से ही हिंसा होती है, यह नहीं समझना चाहिए।

इसके अतिरिक्त किसी जीव का घात हुआ, इतने मात्र से वह हिंसक हो गया, ऐसा भी नहीं है और किसी जीव का घात न हो, इतने मात्र से वह निश्चय से अहिंसक है, ऐसा भी नहीं है तथा जीव बहुत अल्प हो, तो हिंसा न हो और अधिक हो, तो हिंसा होती है, ऐसा भी नहीं है।

व्यक्त- तो फिर किसी को हिंसक अथवा अहिंसक कैसे समझना चाहिए ?

महावीर- जीव की हत्या न करने पर भी दुष्ट भाव के कारण कसाई की तरह कोई हिंसक कहलाता है और जीव का वधक होने पर भी शुद्ध भाव के कारण सुवैद्य की तरह कोई अहिंसक ही कहलाता है। इस प्रकार अनुक्रम से शुद्ध और दुष्ट भाव के कारण जीव हत्या करते हुए भी कोई अहिंसक और जीव हत्या न करते हुए भी कोई हिंसक कहलाता है।

व्यक्त- किसी के मनोभावों को कैसे जानें ?

महावीर- पाँच समिति और तीन गुप्ति से सम्पन्न ऐसे साधु अहिंसक होते हैं, किन्तु उससे विपरीत जो असंयमी होता है, वह हिंसक कहलाता है। उक्त संयमी द्वारा जीव का घात हो या न हो, किन्तु उससे वह हिंसक नहीं कहलाता। क्योंकि हिंसा-अहिंसा का आधार तो आत्मा के अध्यवसायों पर है। बाह्य निमित्त रूप जीवघात तो व्यभिचारी है।

(क्रमशः) ■ ■

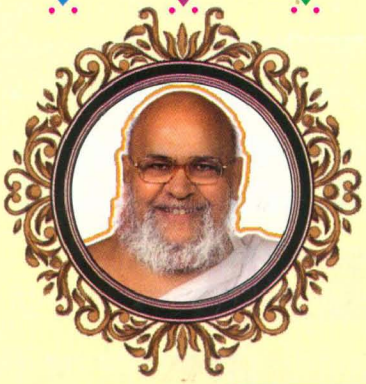

लघु कथाएँ

मैं जानता हूँ

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

असा पंचाँरो मूँ कारो

किसी साधु ने एक बालक को दीक्षा दी। उसे साधुवेश पहनाया और नमस्कार महामन्त्र सिखाया। उस बालमुनि को शब्द का उच्चारण ठीक से करना नहीं आता था। वह नवकार मन्त्र बोलता जरूर था, पर बिल्कुल अशुद्ध बोलता था। उसे शुद्ध उच्चारण सिखाने का बहुत प्रयत्न किया गया, पर उसका उच्चारण शुद्ध नहीं हुआ।

एक दिन वह साधु कुछ श्रावकों से धर्म चर्चा कर रहा था। वह बाल मुनि दूर बैठा नवकार का रटन कर रहा था। उसकी आवाज सबको सुनाई दे रही थी। नवकार मन्त्र बोलते-बोलते उसने कहा-

असा पंचांरो मूँ कारो (एसो पंच नमुक्कारो)

उस साधु ने जब यह सुना तो अपना सिर पीट लिया। उसने कहा-अरे! इन पंचों का मुँह क्यों काला हो ? मुँह तो मेरा ही काला होना चाहिये, जिसने बिना सोचे समझे, बिना परीक्षा किये तुझ जैसे को शिष्य बनाया।

गलत उच्चारण से अर्थ का अनर्थ हो जाता है, इसलिये शुद्ध उच्चारण पर हमेशा जोर देना चाहिये। जब तक अर्थ का ज्ञान नहीं हो, तब तक मन्त्र का रटन निष्फल होता है। यों तो एक तोता भी सिखाने पर 'राम-राम', 'सीताराम', 'राधेश्याम' आदि मनुष्य की तरह बोल लेता है, फिर भी उसकी मुक्ति नहीं हो पाती। इसका कारण यह है कि वह इन शब्दों का अर्थ नहीं जानता। राम, सीता, राधा, कृष्ण कौन थे? उन्होंने कौन

से ऐसे कार्य किये, जिनसे उनका नाम आज भी स्मरणीय बना हुआ है ? आदि बातें वह नहीं सोच सकता। यदि मनुष्य भी इसी प्रकार बिना सोचे समझे मन्त्र का उच्चारण करेगा, तो उसका भी उद्धार नहीं होगा। इसलिए इष्टसिद्धि के लिए शुद्ध उच्चारण और अर्थज्ञान दोनों आवश्यक हैं।

सरौते में फँसी सुपारी

शास्त्र वचन है- 'मातृदेवो भव।' इसका अर्थ है- तू माता को देव मान और उसकी उपासना कर।

इस शास्त्र वचन के अनुसार वह हमेशा अपनी माता की सेवा भक्ति करने लगा। यह देखकर उसकी पत्नी से न रहा गया। वह ईर्ष्या की आग में जलते हुए क्रोध से दाँत पीसती हुई बोली -

मेरा घरवाला नहीं, निज माता का कन्त।
यह मेरा नहीं, अपनी माता का पति है।

यह सुनकर वह अपनी पत्नी की भी सेवा करने लगा, क्योंकि उसने मनुजी का यह वचन भी सुन रखा था-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

जहाँ स्त्रियाँ पूजी जातीं, वहाँ देवता रमण करते हैं। प्रसन्न होते हैं। उसकी पत्नी भक्ति से अब उसकी माता को जलन हुई। वह कहने लगी-

परणीने न्यारो हुओ, मात-पिता से खेटा।
मेरा घर जाया नहीं, निज नारी का बेटा।।

वह बेचारा अब क्या करे ? दोनों ओर से ताने सहता हुआ वह अपना कर्त्तव्य पालन करता रहा। उसकी स्थिति सरोते में फँसी सुपारी के समान हो गई थी।

सच ही तो है, दूसरों की बातों की परवाह न करने वाला ही तो अपने कर्त्तव्य का व्यवस्थित पालन कर सकता है। दुनिया तो दोनों ओर से ढोल पीटती है। यदि मनुष्य उसकी चिन्ता करेगा तो आगे नहीं बढ़ सकेगा। ■■

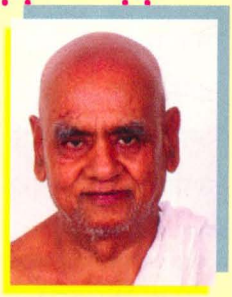

सिद्धार्थमय बन जाएँ

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 13.01.2017

आना खुशी है, जाना अखुशी ! आता है वो जाता है। जाता है वो आता है। अनादि का क्रम चल रहा है। न गम रखना, न मन को कम होने देना। योग आने का मिला तो उसे सार्थक और सफल कर लेना ही जीवन श्रेय पथ है। योग का प्रयोग आत्मसात करने में गुरुवाणी को श्रवणकर सिद्धान्तमय सिद्ध अर्थ में प्रवृत्त होकर सिद्धार्थमय बन जायें।

दिनांक 14.01.2017

राज करना सहज नहीं, सरल है। परन्तु राज करने की कला है तथा अन्तरात्मा से प्रगटे ज्ञान का प्रकाश है तो सहज और सरलता में सावधानी का शंखनाद राज्य को करने का सच्चा पथिक बनाता है। सच्चा पीथगामी ही राज्य की धूरी सम्हाल सकता है एवं जनजीवन का आधार बन सकता है। यदि सम्यग् प्रकाश का अभाव है तो स्वयं का तथा अन्य की हानि का कारक बनकर सर्वत्र आत्मगुणों का घातक बन जाता है।

दिनांक 15.01.2017

कईयों के राज चले गये। क्यूं ? जाने का कारण क्या ? राज माने सत्ता प्राप्त होने के बाद उसे सम्भालने की योग्यता न हो तो मिला हुआ राज्य क्षण में चला जाय इसमें दोष किसका ? योग्यता को प्रगटाओ, जीवन बन जायेगा। यश, मान, सम्मान प्रतिष्ठा की ध्वजा और मानवता की सफलता का सौपान प्राप्त हो जायेगा सुयोग्यता लाओ और राज पाओ।

दिनांक 16.01.2017

दृष्टि खुली है और दोनों दृष्टि में अविकार के भावों का झरना बह रहा है तो वही निष्पक्ष का प्रतिपादन करता है, तब किसी भी प्रकार का अंश मात्र भी भेद नहीं होता है। अभेदी समदृष्टि वाला संसार में स्वपर का कल्याणकारी माना गया है। उसी आत्मा को सत्यात्मा का पथगामी कहा गया है।

दिनांक 17.01.2017

अति सर्वत्र वर्जयेत !

हर बात की सीमा, हर कार्य की एक सीमा होती है। सीमा के बाहर और जरूरत से ज्यादा हानिकारक बन

सकता है। सुश्र जीव अपनी सीमा में रहकर कार्य करता है। अज्ञ जीव सीमा को छोड़कर आगे दौड़ता है इसीलिये अनेक प्रकार की उपाधि का भोगी बनता है। सोचलें हम क्या करना चाहते हैं ?

दिनांक 18.01.2017

अन्तरात्मा में सच्ची निष्ठा ही प्रतिष्ठा है। निष्ठा पूर्वक की जाने वाली प्रतिष्ठा जीवमात्र के लिये, संघ-समाज के लिए हितावह होती है। आत्म शुद्धि को प्रगटाने वाली आत्मा में निष्ठा उत्पन्न होती है तब प्रतिष्ठा का सच्चा आनन्द आता है। वही प्रतिष्ठा सफलता की कीर्ति प्रसारित करती है।

दिनांक 19.01.2017

माँ के संस्कार ही बालक का जीवन बनाते हैं। माँ के संस्कार में कमी है तो वह बालक भी संस्कार हीन ही रहता है। बच्चा बिगड़ता नहीं बिगाड़ा जाता है। सोचें ! जन्म से टी.वी., थोड़ा बड़ा हुआ मोबाइल, बाद में फैशन के वेश आदि लाकर देते कौन हैं ? खान-पान, रहन-सहन सभी घर के वातावरण आजादी की शिक्षा देखा - देख बालक में आ जाते हैं। इनके भाग्य का चिंतन करो, इनका आखिर अन्त क्या होगा ?

दिनांक 20.01.2017

असंस्कार के कारण विवेक का अभाव। विवेक विहीन व्यक्ति की प्रवृत्ति अशुद्ध होती है। किसी वस्तु स्थिति का ज्ञान नहीं होता, बिना सोचे समझे नहीं करने का वह कर बैठता है। बैठना, उठना, खड़े रहना, बोलना, खाना-पीना, पहनना, ओढ़ना, बिछाना आदि हर प्रवृत्ति में विवेक चाहिये। विवेक नहीं होने के कारण ही कार्य बिगड़ता है। विवेकवान बनो और जीवन का सच्चा सुख पाओ। ■■

मृत्यु की मृत्यु

अब हम अमर भये न मरेंगे, अब.
या कारण मिथ्यात दीयो तज, क्युं कर देह धरेंगे। अब. 1
राग दोस जग बंध करत है, इनको नास करेंगे,
मर्यो अनंत कालतें प्रानी, सो हम काल हरेंगे। अब. 2
देह विनाशी हुं अविनाशी, अपनी गति पकरेंगे,
नासी जासी हम थिर वासी, चोखे व्है निखरेंगे। अब. 3
मर्यो अनंतवार बिन समज्यो, अब सुख दुःख विसरेंगे,
आनंदघन निपट निकट अक्षर दो, नहीं समरे सो मरेंगे। अब. 4

उत्तम आहार-शाकाहार-24

अण्डे मांसाहार ही हैं

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

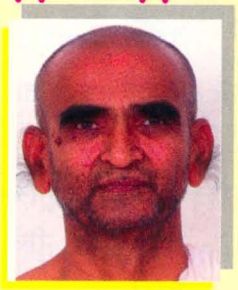

आज विश्व मांसाहार का सेवन कर अंधकार के दलदले में फंसता जा रहा है और विभिन्न प्रकार की बीमारियों से ग्रसित हो रहा है। आज का शिक्षित मानव भी इस घिनौने कृत्य में अपनी भूमिका अदा कर रहा है विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कत्लखानों में मारे जाने वाले पशुओं में कफ, न्यूमोनिया, कैंसर, अल्सर, टी.बी. पेचिस, जोड़ दर्द, दमा आदि जैसी 160 घातक बीमारियों का पता लगाया है।

कई लोग ऐसे भी हैं जो अण्डे को शाकाहारी मानते हैं और उसका सेवन करते हैं पर उन्हें शायद इस बात का ज्ञान नहीं है कि पेड़ पौधों से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ ही शाकाहारी होती हैं। अण्डा तो मुर्गियों के योनिमार्ग से पैदा होता है यह तो अपूर्ण भ्रूण होता है अर्थात एक जीव होता है इसके खोल में 25-30 हजार तक सूक्ष्म छिद्र होते हैं जिनसे यह ऑक्सीजन लेता है और कार्बनडाईऑक्साइड छोड़ता है अधिक तापमान में यह सड़ने लगता है। अण्डों का सेवन करने से विभिन्न प्रकार की बीमारियों से मानव ग्रसित हो जाता है जैसे हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, एग्जिमा, एलर्जी, कब्ज, पेचिस, आंतों की सड़न जैसी बीमारियाँ हो जाती है अधिक मांस प्राप्त करने के लिए पशुओं पर विभिन्न प्रकार की रासायनिक दवाओं का प्रयोग कर उन्हें व्यस्क बनाया जाता है और केमिकल के घोल से अण्डों का निर्माण किया जाता है। जिन्हें आज की जनसंख्या बड़े चाव से बनाकर उनका सेवन कर बीमारियों के गर्त में गिरते जा रहे हैं शाकाहारी पदार्थों में मांसाहारी पदार्थों की अपेक्षा अधिक प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट और खनिज लवण पाए जाते हैं मनुष्य शाकाहारी प्राणीवर्ग का सदस्य है शाकाहार इसका प्राकृतिक भोजन है और वैज्ञानिक दृष्टि से भी मांसाहारी और शाकाहारी जीवों की शरीर संरचना में मूलभूत अंतर है जैसे-

मांसाहारी प्राणी-

1. दांत नुकीले तथा पंजे व नाखून तेज होते हैं।
2. जबड़े सिर्फ ऊपर नीचे हिलते हैं।
3. भोजन निगलते हैं।
4. जीभ से चप-चप कर पानी पीते हैं।
5. पेट में आंतों की लम्बाई छोटी होती है।
6. लार में हाइट्रोक्लोरिक एसिड

अधिक होता है।

7. पसीना नहीं आता।

शाकाहारी प्राणी –

1. दांत और नाखून चपटे होते हैं।
2. जबड़े ऊपर, नीचे, दाएँ – बाएँ हिलते है।
3. भोजन चबाकर खाते हैं।
4. होठों से पानी पीते हैं।
5. आंतों की लम्बाई शरीर से तीन गुना लंबी होती है।
6. जिगर व गुर्दे छोटे होते हैं।
7. लार क्षारीय होती है।
8. पसीना आता है।

इस प्रकार शाकाहार और मांसाहार की संरचनाओं में काफी अंतर है मानव यह सोच लेता है कि मांस का सेवन करने से वह ताकतवर बन जाएगा परन्तु ऐसा कुछ नहीं है यह मानव का भ्रम मात्र है पृथ्वी का सबसे ताकतवर जानवर हाथी है जो पूर्ण रूप से शाकाहारी है। मांसाहार शरीर को प्राणघातक बीमारियों जैसे हृदयरोग, अस्थमा, फेफड़ों का कैंसर, ब्लड प्रेशर, उत्तेजना जैसी बीमारियों के अलावा कुछ भी नहीं दे सकता। भारत जैसे देश में जहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक है ऐसे में अधिक अनाज की आवश्यकता होती है परन्तु मांसाहार के लालच में मानव अनाज की बर्बादी कर रहा है क्योंकि 1 किलो मांस उत्पादन में 10 किलो अनाज या 5 किलो सोयाबीन की आवश्यकता होती है साथ ही पानी की बर्बादी तो और भी अधिक मात्रा में होती है। जबकी हमारा देश भारत पहले से ही जल व अनाज की कमी व संकट से जूझ रहा है मांसाहार से हमारे पर्यावरण पर भी बहुत अधिक हानिकारक दुष्परिणाम देखने को मिल रहे हैं अतः हमें हमारे भारत देश का आर्थिक, सामाजिक और अगर संपूर्ण विकास करना है तो मांसाहार पर पूर्णतः प्रतिबंध लगना चाहिए तभी हम हमारी पृथ्वी को और मानव जीवन को खुशहाल और निरोगी बना पाएंगे।

हिन्दू धर्मशास्त्रों ने सभी जीवों को ईश्वर का अंश मानकर मार्हिस्यात सर्वभूतानि किसी जीव की हिंसा न करो का आदेश दिया है स्कंदपुराण में लिखा है– जो दूसरे का मांस खाकर अपना मांस बढ़ाना चाहता है वह उतने दिन नरक में सड़ता है जैन धर्म की तो नींव ही अहिंसा है, सभी तीर्थंकार भगवंतों ने जगत के सब जीवों की रक्षा और दया के लिए ही धर्मदेर्शना दी है। कुरान शरीफ (22.37) में स्पष्ट लिखा है कि किसी पशु को मारने में धर्म नहीं है अपनी रूह को कुर्बान करो, क्योंकि मारे गए पशु का खून और मांस खुदा तक नहीं पहुँचेगा, इंसान की इबादत ही वहाँ तक पहुँचेगी।

(क्रमशः) ■ ■

अध्यक्षीय पाती

सकारात्मक सोच को अपनाएँ

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

वर्तमान में दार्शनिक, विचारक तथा समाज सुधारक व्यक्ति के सोच पर बहुत चिन्तन कर रहे हैं तथा सभी सकारात्मक सोच पर भरपूर बल दे रहे हैं। सकारात्मक सोच के लिए एक तरह से आंदोलन छिड़ा हुआ है, सभी व्यक्ति को आदेश दे रहे हैं कि नकारात्मकता त्याग दें। नकारात्मक को जीवन दूषित करने वाला विचार माना जा रहा है तथा ऐसा है भी।

जीवन का कोई क्षेत्र हो, व्यक्ति नकारात्मक बन कर खोता ही है। आज के बुद्धिजीवी युग में तो प्रत्येक व्यक्ति नकारात्मकता से दूर रहकर अपनी छवि बनाना चाहता है। वह जानने लगा है कि नकारात्मकता को ओढ़ना असफलता को न्यौता देना है। इससे दुश्मन बढ़ते हैं, लोग पास बैठने से परहेज करने लगते हैं, नकारा को हर कोई निरस्त करते चलता है। जिनके विचारों में नकारात्मकता भरी हुई है तथा जो इस अनुसार द्वन्द, विवाद तथा झगड़े करने की युक्तियों का ही प्रकार करते हैं, इनको समाज हाशिये पर पटक देता है, न तो उनकी सलाह की कोई कद्र होती है, न ही कोई सलाह मांगने या मानने के लिये तत्पर रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के मैदान में समस्याओं से जूझना होता है, वह समस्याओं से घिरा रहकर शांति तथा संतोष की अनुभूति नहीं कर सकता। समस्याओं का समाधान सिर्फ प्रकारात्मक सोच से ही संभव है। सकारात्मक सोच व्यक्ति को सफलता की दिशा में ले जाती है। नकारात्मक विचार हमारे क्षुद्र स्वभाव का उत्पाद है। जो इस तरह सोचने के अभ्यासी होते हैं, वे उनके सामने कोई विषय आये उस पर नकारात्मक चिन्तन ही करते हैं तथा नकारात्मक चिन्तन करते-करते उस मनः स्थिति तक पहुंच जाते हैं जो उनके निष्कर्ष तथा निर्णय त्रुटीपूर्ण बना देते हैं। नकारात्मक चिन्तन वाला व्यक्ति कभी भी सही दिशा में प्रवृत्त नहीं हो सकता। वह सभी के प्रति द्वन्द का मनोविज्ञान लेकर चलता है तथा ऐसी स्थिति स्वयं के लिए उत्पन्न कर लेता है जो निराशा व हताशा से परिपूर्ण करने वाली होती है वह तनाव को बढ़ाते जाता है।

अतः समाज के उत्थान तथा अपनी स्वयं की प्रसन्नता, सफलता तथा मृदुता के लिए सकारात्मक सोच को अपनाने का अभ्यास करें।

■■

अध्यक्षीय संदेश

सभी सीखें 'जीवन में अनुशासन'

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संगठनों/संस्थाओं/मंडलों/परिषदों के सुव्यवस्थित तथा सुसंगठित रहने के लिए 'अनुशासन एक बुनियादी तत्व है। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, उसमें अनुशासन का होना अत्यावश्यक है। समाज की गणना तो है ही, इसकी एक छोटी इकाई 'परिवार' भी अनुशासन के अभाव में सही रीति से संचालित नहीं हो पाते हैं। अनुशासन, व्यक्तिगत स्तर का गुण है। व्यक्ति को चाहे वह अकेला हो या समूह (भीड़) में वह मौजूद रहे, सदा अनुशासन की मर्यादाओं का पालन करते हुए, उसे सर्वाधिक महत्व देते हुए ही गतिशील होना चाहिए। उसके आचरण से उसका संस्कार झलकना चाहिए। यह संस्कार, अनुशासन से ही धनीभूत हो सकता है।

जिस देश/समाज/संगठन/समूह/या व्यक्ति में अनुशासन नहीं, वह अराजक है। उसकी आवाज का कोई महत्व नहीं होता है। उसे इज्जत की दृष्टि से देखा ही नहीं जाता तो उसकी बात मानने का तो कहीं कोई प्रसंग ही तैयार नहीं हो पाता है। आमतौर पर उसके प्रति अभिमत स्वीकारणीय नहीं होता। कभी-कभी तो अनुशासनहीन समूह को उद्दण्ड घोषित कर दिया जाता है। इस स्थिति में उसके उद्देश्यों को प्रतिध्वनित करने के प्रयासों को गंभीरता से नहीं लिया जाता है। ऐसे समूह को कभी कोई सफलता प्राप्त नहीं होती है। प्रत्येक बालक या छात्र को प्रारंभ से ही विद्यालय में तथा उसके पश्चात् महाविद्यालय स्तर पर भी अनुशासन का पाठ ही प्रमुखता से पढ़ाया जाता है। अनुशासनहीनता की स्थिति में छात्र को दंडित किये जाने का प्रावधान भी रहता है। जीवन का सही विकास, अनुशासन के धरातल पर होता है। अनुशासन, बाल्यकाल से संस्कार रूप में प्राप्त होता है।

अनुशासन से तात्पर्य रोबोट की भांति मूर्तिवत बने रहना या मशीन की तरह आचरण करना नहीं है। इसके अन्तर्गत हमारे विचार, विचारों की दिशा, व्यवहार, मुख से प्रस्फुटित भाषा, आचरण, खाने-पीने-पढ़ने, चलने-फिरने सहित सभी आवश्यक क्रियाओं का संयम से सज्ज, सकारात्मक होना आवश्यक है। कहीं भी अनियंत्रण अथवा स्वच्छंदता नहीं दिखाई देनी चाहिए। बड़ों के साथ सम्मान का व्यवहार, वरिष्ठजनों की प्रतिष्ठा का ध्यान रखना ये सभी अनुशासन के अंग हैं। अनुशासन केवल बाल्यावस्था की अनिवार्यता नहीं है। व्यक्ति प्रौढ़ हो जाए या वृद्धावस्था तक पहुंच जाए, उसका अनुशासन से जुड़ा रहना अभिष्ट है।

आशा है जीवन सद्गुणों तथा सुसंस्कारों से जुड़कर सार्थकता की ओर अग्रसर होगा।

चातुर्मास की महिमा

(श्री रणजीतसिंह सोजत्या)

चातुर्मास का मंगल प्रारंभ आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा के मंगलकारी दिन से होता है। चातुर्मास यानी आत्म-घर में प्रवेश करने का दिवस। चातुर्मास यानी जीवन परिवर्तन का मौका तथा प्रत्येक दृष्टि से आनन्द, प्रफुल्लता और उत्साह का मधुर सिंचन करने वाली धन्य घड़ियां। धर्म का बीजारोपण करने की ऋतु।

जैनशासन में चातुर्मास का बहुत महत्व है। तारक तीर्थंकर भगवन्तों ने जैन मुनियों के लिए विहार की आचार संहिता का आयोजन किया है। मुनियों से नवकल्पी विहार करने को कहा है। किस कारण से ? एक स्थान पर स्थिर रहने से अप्रीति उत्पन्न होती है, राग-मोह से ग्रसित हो जाता है। कभी-कभी तो राग (अनुराग) के कारण खतरा भी पैदा होने का डर होता है, इसलिए इन आठ महीनों में विचरण करने को कहा है। चातुर्मास कल्प में चार महीनों तक एक ही स्थान पर रहना होता है। इन दिनों में जीवों की उत्पत्ति बहुत होती है।

वीतराग भगवान की आज्ञा में विचरते हुए जैन संत और सतियाजी चातुर्मास के चार महीनों में ज्ञान, दर्शन, चरित्र की आराधना करते हुए एक स्थान में स्थिर होते हैं। पानी से भरे घनघोर बादल एक ही स्थान पर बरसते नहीं हैं, परन्तु अलग-अलग स्थानों पर बरसते हैं। भ्रमर एक ही पुष्प का रसास्वादन नहीं लेता बल्कि अनेक पुष्पों का रस चूसकर आनन्द से घूमता है, उसी प्रकार जैन संत अपने ज्ञान का लाभ एक ही स्थान पर बैठकर देते नहीं हैं। आठों महीने ग्रामानुग्राम विचरण (भ्रमण) करते हैं और चातुर्मास में एक स्थान में रहकर ज्ञान गंगा का प्रवाह बहाते हैं। भाग्यशाली आत्माएँ ऐसी वीरवाणी का रसास्वादन कर सकते हैं।

चातुर्मास में जोरदार बारिश आती है, तब किसान आनन्द के साथ आलस्य-प्रमाद को दूर फैंक देते हैं। नयी चेतना, उत्साह के साथ खेत में पहुंच जाते हैं। निरन्तर परिश्रम करने में संलग्न हो जाते हैं। किसान के लिए यह चार महीने बहुत मूल्यवान होते हैं। इन चार महीनों में अगर वह कठिन परिश्रम करे तो शेष आठ महीने उसके सुख से बीत सकते हैं। यदि वर्षा आने पर भी प्रमाद त्याग न करें, खेत में बुवाई न करे एवं फसल उत्पन्न नहीं होवे तो उसमें अपराध किसका ? किसानों का ही ना ? चार महीने व्यर्थ में गंवा देते हैं तो पूरा वर्ष व्यर्थ जाता है। खेत को हरा-भरा रखने के लिए किसान को हरदम जागृत रहना

पड़ता है। इस प्रकार जीवन भी एक खेत-धर्मरूपी बीजारोपण का समय यानि चातुर्मास। साधु-साध्वियों के चातुर्मास प्रवेश होते ही श्रावक-श्राविकाओं के हृदय प्रफुल्लित हो उठते हैं। हृदयरूपी क्षेत्र में मंगल धर्म की स्थापना करने के लिए संत जिनवाणी की वर्षा करते हैं। वह जिन वाणी रूपी वर्षा फलदायी कब होती है जब श्रावक जिनवाणी का ठीक-ठीक अमल (स्वीकार) करे तब । उसका सम्पूर्ण लाभ उठाने के लिए आलस्य, प्रमाद विकथाओं के बादलों को बिखेर डालना पड़ेगा। यदि धर्म का बीजारोपण करना हो, जीवन रूपी खेत को हरा-भरा और सुशोभनीय बनाना हो तो बहुत ही सतर्क रहकर, जागृत बनकर उस वाणी का लाभ लेना पड़ेगा। चौमासे के चार महीने यदि जिनवाणी के श्रवण बिना, व्रत-नियम से रहित जाए तो समझ लेना कि पूरा साल व्यर्थ गया।

इन चार महीनों की कीमत नहीं समझी तो पूरा साल व्यर्थ ही जाएगा। चौमासे में संत सतियांजी शाश्वत भाव सम्पत्तियों से धर्मोपदेश बाजार खड़े करेंगे। इस शाश्वत भाव सम्पत्ति में मुख्य रूप से दान, शील, तप और भाव आत्म उपदेशी जिनवाणी के द्वारा बेचा जायेगा।

शरीर के रोगी को जैसे डॉक्टर जांचकर दर्द का निदान कर दवाई देता है। तब उस रोगी को यदि शातावेदनीय का उदय हुआ हो तो उसका दर्द मिट जाता है, वैसे ही आत्मा के दर्दी को गुरु का उपदेश सुनने से उसका भाव दर्द दूर हो जाता है और शाश्वत सुखों को प्राप्त करता है। ऐसी भाव सम्पत्ति को ग्रहण करने हेतु बालक, युवक, प्रौढ़, वृद्ध आदि श्रावक-श्राविकाएँ खूब उत्साही बनकर अपनी शक्ति अनुसार तन-मन-धन से दान-शील तप- सदाचार के भाव प्रकट कर लाखों गुना शाश्वत भाव सम्पत्ति ग्रहण कर आत्मिक लाभ प्राप्त करते हैं। ऐसी महान् शाश्वत भाव सम्पत्ति लेशमात्र भी जिसमें कम नहीं हो सकती, चोर डाकू का डर नहीं रहता, बेचना नहीं होता, क्लेश झगड़े बिल्कुल नहीं होते स्वास्थ्य बिगड़ता नहीं, सरकारी टेक्स नहीं लगता और परलोक में भी साथ आने वाली ऐसी शाश्वत भाव सम्पत्ति का अखूट खजाना पाकर आत्मिक लाभ प्राप्त करने का सुनहरा अवसर जिसमें प्राप्त हो वे ही चातुर्मास के मंगलकारी दिन धर्म आराधना से संवर और निर्जरा करके भाव सम्पत्ति प्राप्त कर इस भव (जन्म) में एकावतारी बनने का सुअवसर मिला है।

इस सुअवसर को पुद्गलानन्द में व्यर्थ न गंवाकर किन्तु आत्मानन्दी बनकर धर्माराधना करने हेतु गुरु भगवन्त के उपदेश का प्रवाह निरन्तर बहाते हैं। इस अमूल्य अवसर का लाभ नहीं उठाया तो फिर पछतावा ही करना पड़ेगा। ■■

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

महाराजा श्रेणिक अपने महल में राज सिंहासन पर बैठे कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने राज्यमंत्रियों के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे उनके दरबार में 500 मंत्रियों के आसन लगे हैं जिनमें मंत्री, महामंत्री और नगर के गणमान्य नागरिक विराजमान हैं धर्म, राजनीति, साहित्य, कला आदि विविध विषयों पर चर्चा चल रही है। उसी समय द्वारपाल ने आकर कहा 'महाराज की जय हो कोई भरत नाम का चित्रकार आया है जो महाराज के दर्शन करना चाहता है।' महाराज को थोड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्होंने भरत चित्रकार का नाम पहले भी सुन रखा था महाराज ने द्वारपाल से कहा कि जाओ चित्रकार को आदर सहित दरबार में ले आओ, राजा के कहे अनुसार भरत चित्रकार दरबार में उपस्थित हुआ चित्रकार ने राजा को प्रणाम किया और विनम्रतापूर्वक कहा 'महाराज ! मैं लिच्छवी राज्य के महाराज चेटक की छत्रछाया में था मैं चित्रकार हूँ भारतदेश में मेरी चित्रकला को अद्भुत और बेजोड़ माना जाता है और खूब सराहना की जाती है मैं अपनी स्वयं प्रशंसा करके अपने मुँह मिया मिट्ठू नहीं बनना चाहता बल्कि मेरे बनाये गये चित्रों के माध्यम से मैं अपने हुनर का प्रदर्शन करना चाहूँगा मैंने कुछ कारणों से वैशाली राज्य का त्याग कर दिया है और अब मैं आपकी शरण में आया हूँ महाराज ने कहा कि कोई बात नहीं आप हमारे राज्य में निःसंकोच निर्भय होकर रहिये हमारा सौभाग्य है कि ऐसा कलाकार हमारे राज्य की शोभा बढ़ाएंगा हमें आपकी कलाकृतियों को देखने का अब सौभाग्य मिला है तब चित्रकार भरत ने अपने कुछ चित्रों को दरबार में प्रदर्शित करना शुरू किया इन चित्रों में वैशाली राज्य की प्राकृतिक सुंदरता, भव्य मंदिर, राजमहल नर-नारियों व उद्यानों के अद्भुत चित्र देखकर सब आश्चर्यचकित हो गये क्योंकि सभी चित्रों में केवल सौन्दर्य ही नहीं प्राणवत्ता भी थी प्रत्येक चित्र एक सजीव की भांति प्रकट हो रहा

था उन्हीं चित्रों को देखते-देखते राजा श्रेणिक कुमार की नजर एक अद्भुत चित्र पर गड़ गई जो एक राजकुमारी का चित्र था जिसमें सजीवता झलक रही थी उस चित्र में अद्भुत सौन्दर्य था बड़ी-बड़ी आँखे, सौम्य आकृति ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात रति सामने बैठी हो, उस सौन्दर्य में सजीवता और शालीनता तो इतनी थी कि बस देखते-देखते आँखे स्थिर हो जाए। राजा श्रेणिक कुछ समय तक तो उस सौन्दर्य रूपी चित्र को एक नजर से देखते ही रहे कुछ भाव-विभोर होने के बाद बोले यह चित्र काल्पनिक है या वास्तविक क्योंकि ऐसे सौन्दर्य को आज तक हमने सजीव रूप में नहीं देखा है राजा की बात सुनने के बाद चित्रकार ने कहा कि महाराज मैं अपनी चित्रकारिता में आकाश की ऊँची-ऊँची उड़ानों को शामिल नहीं करता मैं कला को केवल कला तक या कला का प्रदर्शन कर प्रशंसा के बजाय कला को जीवित रूप प्रदान करता हूँ।

महाराज ने कहा तो क्या इसका मतलब यह सौन्दर्य किसी देवी या राजकुमारी का है क्या ? आपने ऐसे सौन्दर्य को कहीं पर देखा है ? हाँ, महाराज मैंने वर्षों तक इस सजीव सौन्दर्य का मधुर व अमृत पान किया है। यह चित्र वैशाली की राजकुमारी सुज्येष्ठा का है जो असिम सौन्दर्य और रूप, गुण की साक्षात मूर्ति है और वैशाली की शान है महाराज चेटक की सात कन्याएँ हैं सबसे बड़ी प्रभावती का पाणिग्रहण वीतभय के राजा उदायन के साथ पद्मावती का चंपावती दधिवाहन के साथ, मृगावती का कौशाम्बी नरेश शतानीक के साथ, शिवा का उज्जयिनीपति चंडधोत के साथ तथा ज्येष्ठा कुण्डग्राम के शासक नन्दीवर्धन (भगवान महावीर के ज्येष्ठ भ्राता) के साथ सम्पन्न हो चुका है दो कन्या सुज्येष्ठा एवं चेलणा अभी कुंवारी हैं दोनों ही कन्याएँ अत्यंत रूपवती, गुणवती हैं। लगता है मानो रति एवं सरस्वती एक साथ रूप लेकर प्रकट हो गई हैं।

भरत ने थोड़ा विश्राम लेते हुए फिर कहा कि महाराज ये चित्र सुज्येष्ठा का है उसका वास्तविक रूप तो कलम बयां ही नहीं कर सकती ये चित्र तो उसके वास्तविक सौन्दर्य का सौवां हिस्सा है।

श्रेणिक बार-बार उस चित्र को देखते और उस पर मोहित हुए, उनकी निगाहें उस चित्र से हट ही नहीं रही थी। बार-बार देखते और बार-बार प्रशंसा करते उनकी आँखों में राजकुमारी का चित्र/सौन्दर्य समा गया था।

(क्रमशः)

■■

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

केवल स्नान से आत्मा और मन की शुद्धि होना अपने आपको संतुष्ट करना मात्र है। मल्ली ने अपने गुणों व ज्ञान के प्रकाश से चोक्षा के प्रश्नों के उत्तर इस रूप में दिये तो चोक्षा भगवती मल्ली से ईर्ष्या करने लगी। क्योंकि राजकुमारी मल्ली ने चोक्षा के सामने वास्तविक स्थिति बया की थी। मल्ली राजकुमारी की दासियों ने अनेक प्रकार से चोक्षा का मजाक उड़ाया, दासियों के इस प्रकार के दुर्व्यवहार से चोक्षा को लगा कि मेरा अपमान किया जा रहा है यह देख चोक्षा अपने अनुयायियों के साथ मिथिला की ओर चल पड़ी। कुछ समय बाद चोक्षा को जितशत्रु के अनंतपुर जाने का अवसर मिला। उस समय राजा जितशत्रु अपनी एक हजार रूपवान और गुणवती रानियों के साथ बैठा अपने महल में वार्तालाप कर रहा था। चोक्षा ने राजा के अनंतपुर में प्रवेश किया। चोक्षा परिव्राजिका को देखकर राजा जितशत्रु अपने आसन से उठ गये और चोक्षा (सन्यासन) को प्रणाम किया। चोक्षा ने राजा के जय-जयकार के नारे लगाये और भूमि पर अपने कमण्डल से जल कि कुछ बूंदे लेकर भूमि पर छिटकते हुए अपना आसन ग्रहण किया। चोक्षा ने सभी रानियों से कुशल मंगल पूछा और अपना आशीष दिया। इन सभी वार्तालाप के बाद चोक्षा (सन्यासन) ने राजा के महल में धर्म, दान, शौच के संबंध में उपदेश दिए और सभी को अनुग्रहीत किया, राजा अपने अन्तःपुर में एक सहस्त्र रूपवती व गुणवती रानियों को पाकर अपने आप को गर्वान्वित कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके अन्तःपुर जैसा अन्य कहीं नहीं हैं। राजा जितशत्रु ने चोक्षा परिव्राजिका से पूछा कि आपने मेरे अन्तःपुर जैसा कहीं अन्य राजाओं का अन्तःपुर देखा है क्योंकि राजा

जितशत्रु को भ्रम हो रहा था कि मेरे अन्तःपुर जैसा और कहीं नहीं है ? राजा की बात सुनकर चोक्षा परिव्राजिका हंसने लगी। कुछ समय हंसने के बाद चोक्षा परिव्राजिका राजा को सम्बोधित करती हुई बोली राजन आप समुद्र में रहने वाली एक छोटी बूंद की भांति हो अर्थात आपको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आप समुद्र में एकमात्र बूंद हो पर यह तुम्हारा भ्रम है। उसी प्रकार आप अपने अन्तःपुर को सर्वश्रेष्ठ समझ रहे हैं। चोक्षा ने तब जितशत्रु को बताया कि मिथिला राज्य की राजकुमारी भगवती मल्ली संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी है। हमने आज तक उस जैसी गुणवती और रूपवती स्त्री नहीं देखी है। राजकुमारी मल्ली के सामने आपके अन्तःपुर की एक सहस्त्र रानियां भी तुच्छ हैं।

(क्रमशः)

■■

साहित्य समीक्षा

पुण्यपुंज

पुण्यपुंज-संकलन-गणिवर्य श्री विक्रमसेनविजयजी महा., प्रकाशन-श्री लब्धि भुवन जैन साहित्य सदन, छाणी (गुजरात), प्रकाशन दिनांक 22 फरवरी 2019, प्राप्ति स्थान- श्री लब्धि भुवन जैन साहित्य सदन ठि. राजेश नटवरलाल शाह, कापड़ ना वैपारी, मोईन रोड़, छाणी (जि. बरोडा) फोन नं. 9879526276 पृष्ठ संख्या 244 सभी आर्टपेपर पर बहुरंगी मुद्रित, बड़े आकार में पक्की बाइंडिंग, मुख पृष्ठ- आकर्षक, सफाई -छपाई- उत्तम।

प्रस्तुत ग्रंथ जापनिष्ठ, पुण्य निधान, समाधिरस के साधक जैनाचार्य श्रीमद् विजय पुण्यानंदसूरीश्वरजी म. की स्मृति में उनके त्याग-तप - आराधनामयी जीवन का पारदर्शन करवाने हेतु सचित्र किया गया है। उनमें जैनाचार्यश्री के प्रति अन्य आचार्यों के मत ही नहीं हैं बल्कि जीवन परिचय, उपलब्धियों के संदर्भ में काफी सामग्री है। आपका कालधर्म होने पर प्राप्त संवेदनाओं को भी भावों के रूप में समेटा गया है। श्री ऊंकार तीर्थ पर निर्मित श्री पुण्यानंदसूरि गुरु मंदिर का चित्र भी है। आपको श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई रचनाएँ गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी तीनों भाषाओं में है। ग्रंथ संग्रहणीय तथा प्रशंसनीय बना है। ज्ञान भंडारों में इसे सुरक्षित रखा जाना चाहिए।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

प्रासंगिकम्

रक्षां गिरः पान्तु वः

(पुण्य–सम्राट् गुरुदेवश्री के शिष्य मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा.)

अजितशांति स्तवना की अंतिम गाथा का अंतिम चरण है...

'जिण वयणे आयरं कुणह'

जो आप परम पद प्राप्त करना चाहते हो तो

'जिणवयणे आयरं कुणह'

जो आप चित्त की मलिनता दूर करना चाहते हो तो...

'जिणवयणे आयरं कुणह'

जो आप रत्नत्रयी की आराधना करना चाहते हो तो...

'जिणवयणे आयरं कुणह'

जो आप सुविस्तृत कीर्ति प्राप्त करना चाहते हो तो...

'जिणवयणे आयरं कुणह'

एक छोटा सा शुभ अनुष्ठान है–

'जिणवयणे आयरं कुणह'

लेकिन इसके लाभ कितने बड़े–बड़े हैं।

हमारे जीवन का चिन्तन करें तो यह निष्कर्ष आता है कि हमने आदर तो बहुत किया, लेकिन किसका ? जिनसे हमारा स्वार्थ जुड़ा हुआ था, जिनसे हमें भौतिक सुख प्राप्त होने वाले था, जिनके प्रति हमें विशिष्ट राग था। लेकिन ये सारे आदर परिणाम में शून्य हो जाते हैं। क्योंकि जिनका आदर करना चाहिये, उनका अनादर हमें गुणों से दूर कर देता है। संसार वृद्धि कर देता है।

'जिणवयणे आयरं कुणह'

यद पद हमें यही संदेश दे रहा है कि राग-द्वेष-मोह से रहित परमात्मा के वचन ही हमें भव समुद्र से तिराने के लिये समर्थ है, इसीलिये कहा है-

'जियवयणे आयरं कुणह'

* **बोधागाधं – (संसार दावानल)**
* **भूताहिताय – (ध्यानशतक)**
* **जाइजरामरण सागरूत्तारे – (उपदेशमाला)**
* **सकल संसार भयभेदकं – (शांतसुधारस)**
* **निव्वाणमग्गे-वरजाणकप्पं – (कल्लाणकंदं)**
* **अमयसारस्स – (सन्मति तर्क)**
* **विमलस्वामिनो वाचः कतक क्षोद सोदरा – (सकलार्हत्)**
* **आनन्दाय देहिनाम् – (अष्टक प्रकरण)**

ये सारे शास्त्रोक्त विशेषण जिनवचनों का महीमागान कर रहें हैं।

जैसे आपको पता ही होगा कि रोहिणिया चोर के पिताजी ने अंतिम समय अपने पुत्र को कहा था तूं **'महावीर के वचन'** कभी मत सुनना। जीवन भर चोरी-लूट आदि अनाचार सेवन करने वाले जीव को भी जिन वचनों के प्रति कितना विश्वास था कि अगर मेरा पुत्र रोहिणिया जिन वचन श्रवण कर लेगा तो इसका जीवन परिवर्तन हो जायेगा।

यह कथानक हमें यही प्रेरणा दे रहा है कि **'जिणवयणे आयरं कुणह'**

शांत सुधारस ग्रन्थ की प्रथम गाथा में सुन्दर प्रेरणा दी है जिसमें पांच आश्रवरूपी मेघ बरस रहें हैं, विविध प्रकार की कर्मरूपी वेल से गहन, मोहरूपी अंधकार से व्याप्त, छिद्ररहित ऐसे संसार रूपी जंगल में भटकते जीवों के हित के लिये करूणा से पवित्र तीर्थंकरों के द्वारा प्रवाहित अमृतरस से भरी, मनोहर ऐसी वाणी तुम्हारा रक्षण करे।

रक्षां गिरः पान्तु वः ....

।। शास्त्रवचनम् ।।

किं स्वरूपम् 'मान'

(पुण्यसम्राट् ज्ञानञ्जनम् पर्व–पाटण)

जीवं पाडंति संसार–उपदेशमाला

मान अर्थात् 8 मद, अहंकार, दूसरों की हल्की बातें करना, स्वयं की प्रशंसा करना, दूसरों का पराभव करना, निंदा करना, असहनशील बनना, लांछन लगाना, उपकार नही करना, अक्कड़ता–अनम्रता, अविनय, दूसरों के गुणों को छिपाना... ये सभी **मान** के ही रुप हैं, जो जीवों को संसार में भटकाते हैं।

त्रिवर्गस्य द्यातकः – योगशास्त्र

मान–विनय, विद्या, शील एवं धर्म, अर्थ, काम – ये तीनों पुरूषार्थ का द्यातक हैं, विवेक चक्षु को फोडने वाला है, जाति, लाभ, कुल, एश्वर्य, बल, रूप, तप एवं विद्या–इन आठों का हल्कापना प्राप्त करवाता है, दोषों को बढ़ानेवाला एवं गुणों की हानि करने वाले **मान** को नम्रता रूपी नदी के पूर द्वारा जड़ मूल से उखाड़ देना चाहिये।

मानस्य कोऽवकाशम् – प्रशमरति

श्रुत, शील, विनय को अति दूषित करने वाले एवं धर्म, अर्थ, काम में विघ्न करने वाले **मान** को कौन पंडीत पुरूष एक मुहूर्त भी अवकाश दे अर्थात् ग्रहण करे।

दप्पो मूलं विणासस्स – पुष्पमाला

जैसे धर्म का मूल दया है, सकल व्रतों का मूल क्षमा है, सकल गुणों का मूल विनय है, वैसे सकल विनाश का मूल **मान**–अहंकार है।

तथा नैव तु मानमुक्ति – अध्यात्म कल्पद्रुम

जिस तरह तपस्या में प्रवृति करना सुखरूप–सहज है, वैसे **मान** त्याग करना सुखरूप–सहज नही है। मात्र तप मोक्ष नही दे सकता, लेकिन **मान** त्याग बाहुबलि जैसे अवश्य मोक्ष देनेवाला है।

■■

आत्मसाधना का वर्षायोग

चातुर्मास

जैन धर्म में चातुर्मास स्थापना की परम्परा आरम्भ से ही निरन्तर चली आ रही है। आत्मसाधना में लीन मुनियों, आर्यिकाओं, साधु-साध्वियों के लिए वर्षावास अनिवार्य व महत्वपूर्ण योग है। साधुओं के मूलगुण तथा आचार संहिता को व्याख्या करने वाला प्राकृत भाषा का प्राचीन महत्वूपर्ण ग्रन्थ मूलाचार में चातुर्मास स्थापना को साधुओं के लिए अनिवार्य व आवश्यक माना है। भगवती आराधना की टीका में स्पष्ट उल्लेख है-

'वर्षाकालस्य चतुर्षु मासेषु एकत्रैवावस्थानं भ्रमणत्यागः।'

शास्त्रों में चातुर्मास के अनेक नाम प्राप्त होते हैं, जैसे पर्युषणा कल्प, संवत्सर, वर्षावास तथा वर्षायोग। शास्त्रों में साधुओं के लिए जहां एक तरफ एक जगह पर ज्यादा दिन ठहरने का निषेध है, वहीं दूसरी तरफ बारिश के चार महीनों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का निषेध है। इसके कई कारण हैं। निरन्तर वर्षा होने से यत्र-तत्र भ्रमण या विहार के मार्ग रुक जाते हैं, नदी-नाले उमड़ पड़ते हैं। वनस्पति मार्ग में उग आती है। सूक्ष्म तथा स्थूल जीव उत्पन्न होने लगते हैं। अतः किसी भी जन्तु के घात से बचने के लिए श्रमण धर्म में वर्षाकाल में एकत्र वास का विधान किया गया है। श्रमण (साधु) व श्रावक (गृहस्थ) दोनों के लिए इस चातुर्मास का धार्मिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से महत्व है। वर्षा का समय सामान्यतः आषाढ़ से कार्तिक पूर्वपक्ष तक का रहता है। इसलिए चातुर्मास की अवधि आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्व रात्रि से आरम्भ होकर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की पश्चिम रात्रि तक मानी जाती है। अनगार धर्मामृत नामक ग्रन्थ में वर्षायोग ग्रहण की विधि का वर्णन है। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्व आदि चारों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्य भक्ति चार बार पढ़कर सिद्धभक्ति, योगिभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शान्ति भक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिए तथा कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के पिछले प्रहर में इसी विधि से वर्षायोग को छोड़ना चाहिए। जिस स्थान पर चातुर्मास स्थापना करनी है, उस स्थान का भी परीक्षण जरूरी है। ज्यादा शोर-गुल, भीड़-भाड़ वाले इलाके में चातुर्मास नहीं करना चाहिए। ऐसा स्थान जहाँ आत्मसाधना स्वाध्याय तथा तपस्या आदि में विघ्न हो, चातुर्मास नहीं करना चाहिए। किन्हीं-किन्हीं विशेष परिस्थितियों में

देशान्तर जाने का भी विधान है किन्तु उसके कारण भी निश्चित हैं। चातुर्मास स्थापना के साथ ही साधु संघों में किसी विशेष ग्रन्थ की वाचना तथा स्वाध्याय प्रारम्भ हो जाता है। एक स्थान पर रहने से गृहस्थों को भी उनका सान्निध्य अधिक समय तक मिल जाता है। जहाँ-जहाँ चातुर्मास में मुनि विराजते हैं, वहाँ का वातावरण पूरा धर्ममय हो जाता है। जैनधर्म में सामान्य गृहस्थ रात्रि भोजन नहीं करते तथा जमीकंद सब्जियों का त्याग करते हैं। जो लोग वर्ष भर इन नियमों को किसी कारणवश नहीं पाल पाते हैं, वे भी चार महीने के लिए इनका त्याग कर देते हैं। पर्युषणपर्व दशलक्षण व्रत सोलहकारण व्रत आदि व्रत भी इन चार महीनों में आते हैं। साधु संघ के सान्निध्य के कारण ये पर्व तथा व्रत भी लोग दूने उत्साह से सम्पन्न करते हैं। श्रमण के वर्षावास का समय उसी प्रकार कषाय रूपी अग्नि एवं मिथ्यात्व रूपी ताप को त्याग एवं वैराग्य का शीतलधारा से तथा स्वाध्याय और ध्यान की जलवृष्टि से शान्त करने का होता है, जिस प्रकार जल की शीतल धारा बरसकर धरती की तपन शान्त करती है। ■■

एक प्रशंसनीय पठनीय अंक

महोदय,

शाश्वत धर्म का जुलाई 2019 का सामायिक पर विशेषांक मिला, पढ़ा अत्यंत प्रसन्नता हुई कि बहुत समय बाद किसी एक विषय पर एक अंक का प्रकाशन हुआ। आपको इस हेतु बधाई।

सामायिक -समता भाव में भ्रमण करना, पापवृत्ति कषाय आश्रय आदि का त्याग, स्व की यात्रा है सामायिक, आपकी संपादकीय में सामायिक का अर्थ दो घड़ी समय के लिए चखला, मुँहपत्ति या कटासण लेकर बैठना नहीं ये तो उपकरण हैं , सामायिक का तात्पर्य है - समता भाव में प्रवेश - आत्मा में रमण त्यागी से वितरागी में परिणित होने की प्रक्रिया सामायिक महत्ता की जानकारी पूज्य आचार्य भगवंत के लेख, साध्वी भगवंत श्री श्रुति दर्शनाश्रीजी आचारांग, सूत्र में सामायिक, जीवन और सामायिक (अक्षय ऋषिजी) सामायिक का अर्थ- उपयोगी बातें आदि सामायिक सम्बन्धी जानकारी एक अंक में समाहित कर एक अनुकरणीय व उपयोगी संग्रह पठन योग्य अंक निकला उसके लिए तहेदिल से आपका आभार।

- सुरेन्द्र गंग,
भोयरा बावड़ी, रतलाम

पूजा के दसत्रिक तथा उनके भेद

(मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.)

दसंत्रिक के तीस भेद – 1. निसीहित्रिक, 2. प्रदक्षिणात्रिक, 3. प्रणामत्रिक, 4. पूजात्रिक, 5. अवस्थात्रिक, 6. त्रिदिशिवर्जनत्रिक, 7. भूमिप्रमार्जनत्रिक, 8. आलंबनत्रिक, 9. मुद्रात्रिक, 10. प्रणिधानत्रिक।

उपरोक्त दसत्रिक के हरेक के तीन-तीन भेद होकर कुल 30 भेद होते हैं।

1. निसीहित्रिक के तीन प्रकार – (1) श्री जिन मन्दिर के मुख्य दरवाजा में प्रवेश करते ही घर, व्यापार, वगैरह सांसारिक कार्य मन, वचन, काया से त्याग करने रूप निसीहि कही जाती है और मंदिर संबंधि कार्य करने की छूट रहती है।

दूसरी निसीहि– तीन प्रदक्षिणा देने के बाद में द्रव्यपूजा, प्रक्षाल, चंदन, केसर आदि-आदि के लिये गर्भद्वार (गंभारे) में प्रवेश करते समय आधा शरीर नमा करके दूसरी निसीहि कहनी चाहिए। इस निसीहि कहने का हेतु यह है कि मन्दिर संबंधी कार्य का भी त्याग करके मन, वचन, काया की प्रवृत्ति द्रव्यपूजा में एकाग्र हो जाये जिससे विधिवत् शुद्ध द्रव्य से अष्ट प्रकारी पूजा की जाय।

तीसरी निसीहि– द्रव्य पूजा संबंधी विकल्पों को त्यागने रूप और जिनेश्वर प्रभु की भाव पूजा करने में मन, वचन और काया को प्रकृत करने रूप यह तीसरी निसीही है। तीसरी निसीह कह कर मन, वचन, काया का स्थिर करके विधिपूर्वक इरियावही करके चैत्यवंदन करना चाहिए।

प्रदक्षिणागिक के तीन प्रकार – प्रतिमासी भगवान की दक्षिण बाजू से तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए और तीन प्रदक्षिणा देने का हेतु (1) ज्ञान, (2) दर्शन, (3)चारित्र इन रत्नत्रय को प्राप्त करने के आशय से जयणा पूर्वक भमती में किसी भी प्रकार की कुछ भी आशातना जैसा जानने में आवे तो स्वयंखुद या अन्य किसी के पास वह दूर कराई जावे।

प्रणामत्रिक के तीन प्रकार – (1) चाहे जिनके दूर से प्रतिमासी भगवान के दर्शन होवें वहाँ से तुरन्त ही बहुमान पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर के नमस्कार करना चाहिए। यह अंजली बद्ध प्रणाम नामक प्रथम भेद है।

2. तीन प्रदक्षिणा देने के बाद मूल गम्भारे के पास प्रभुजी के सामने आकर के निसीहि कहने पूर्वक आधा शरीर झुकाकर नमोजिणाणं कहने के बाद द्रव्य पूजा कराएं, पुष्प पूजा करने के लिये गम्भारे में जाना यह अर्धाषनत प्रणाम नामक दूसरा भेद है।

3. जल चंदनादि से विधि पूर्वक द्रव्य पूजा करने के बाद मूल गंभारे से बाहर आकर के चैत्यवंदन करने के स्थान में दो हाथ दो जानु और एक मस्तक ये पांच अंग भूमि के साथ लगाते समय 'इच्छामि खमासमणो वंदिऊजावणि णिजजाएं निसीहिआए मत्थएण वदांमि' यह पाठ बोलना चाहिए यह पंचाग प्रणाम नामक तीसरा भेद है।

पूजात्रिक के तीन प्रकार श्रावक को तीन - 1. प्रभात 2. मध्यान्ह और 3. सायंकाल पूजा करने की शास्त्रों में विधि बतलाई गई है जैसे प्रभात में शरीर हाथ-पांव और वस्त्रादि की शुद्धि पूर्वक वासक्षेप की पूजा, मध्यान्ह में सुगंधि जणादिक की अष्टप्रकारी पूजा और सायंकाल धूप, दीपक आरती से पूजा करने की कही है। प्रथम जब चंदन, कुंकम वगैरह जो प्रभुजी के अंग पर चढ़ाया जाता है यह अंग पूजा नामक पूजाषिक का प्रथम भेद है।

दूसरा- धूप दीपक, अक्षत, नैवेद्य फल वगैरह रखकर प्रभुजी के सामने भावना भाई जाती है यह अग्रपूजा नामक पूजा जिसका दूसरा भेद है।

तीसरी- अंग पूजा और अग्र पूजा के बाद में अंतः करण से उल्लासपूर्वक प्रभुजी की गुण स्तवना रूप चैत्यवंदन करना यह भाव पूजा नामक पूजा का तीसरा भेद है।

■ ■

ध्यान दीजिये

शाश्वत धर्म का प्रकाशन प्रत्येक मास की 3 तारीख को होता है। दिनांक 10 तक आपको अंक प्राप्त न होने पर दोप. 2.30 से 5 के मध्य कार्यालय पर टेलीफोन नं. (07422) 231614 से सम्पर्क करें। प्रकाशनार्थ लेख, रचनाएं प्रत्येक मास की 2 तारीख तक मंदसौर कार्यालय पर प्राप्त हो जाना आवश्यक है। प्रकाशनार्थ समाचार एवं चित्र उस मास की दिनांक 15 तक मंदसौर प्राप्त होने पर ही उनको उस मास के अंक में सम्मिलित किया जाना संभव है। सामाचार कम्प्युटर पर टाइप करवाकर भेंजे। पते पर परिवर्तन या नए ग्राहक की सूचना शाश्वत धर्म के मेल Mail- ID- shaswatdharmajain@yahoo.in पर दी जा सकती है। डाक से लिखित भिजवाने की भी सुविधा है। शाश्वत धर्म के नए ग्राहक बनने व सहायता राशि भिजवाने हेतु शाश्वत धर्म के करंट अकाउंट नं. 63035775492 स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मुखर्जी चौक, मंदसौर में जमा कर रसीद की फोटोकॉपी कार्यालय पर भिजवाएँ।

कालचक्र तथा उसके आरे

(मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)

श्री चन्द्रप्रभ भगवान

तीर्थंकर का नाम	श्री चंद्रप्रभ	चैत्र वदी 5	च्यवन तिथि
पिता का नाम	महसेन राजा	लक्ष्मणा	माता का नाम
जन्म तिथि	पौष वदी 12	चंद्रपुरी	जन्म स्थान
जन्म देश	पूर्व	वैजयंत	किस देवलोक से आये
जन्म नक्षत्र	अनुराधा	वृश्चिक	जन्म राशि
लंछन	चंद्र	श्वेत	वर्ण
गण–नाम	देव	मृग	योनि नाम
जिस कुल में जन्म	इक्ष्वाकु वंश	काश्यप	गौत्र

वर्ग	सिंह	9 महिने 7 दिन	गर्भकाल
कुमारावस्था	2.5 लाख पूर्व	6.5 लाख पूर्व 24 पूर्वांग	राज्यावस्था
गृहस्थ काल	9 लाख पूर्व 24 पूर्वांग	राजा	पद
पत्नी का नाम	-	18	पुत्र पुत्री
दीक्षा तिथि	पोष वदी 13	चन्द्रपुरी सहसाम्रवन	दीक्षा भूमि
दीक्षा शिबिका	मनोरमा	1000 के साथ	कितने मनुष्यों के साथ दीक्षा ली
दीक्षा के दिन तप	2 उपवास	2 दिन बाद	कितने दिन बाद पारणा किया
प्रथम पारणे का स्थान	पद्मखंडपुर	सोमदत्त	प्रथम पारणा किसके घर किया

शांतिलाल रामानी
(संयोजक)

प्यारे गुरुवरजी हैं, हैं सबसे अनमोल
कितने मीठे हैं उनके अनुभव के बोल
श्रीसंघ की वो रौनक हैं क्या मैं करूँ गुणगान
सबके चहेते हैं, है शासन की हैं शान
प्यारे...
गुरु वर ने धर्म की राह पर चलना बताया
अंधियारे में हमको रास्ता है दिखलाया
समझाते सहलाते बच्चे भी मुस्कुराते
बच्चों की तरह फिर वो बच्चे ही होते
तरमपपप.... कहानी और किस्सों को करते हैं वो बयां
प्यारे...
गुरुवरजी संस्कारों की धरोहर देते
हाथ में माला होठों पर प्रभु वीर की वाणी
वो ओघा वो मुँहपति बाजू में ही सोती
साँए की तरह फिर वो साथ में ही होती
तरमपम.... उनके आशीष से मोक्ष हमें मिलता
प्यारे....

– जैनेश अजय जैन, इंदौर
(उम्र 7 साल)

■■

जयंतसेन हस्ताक्षर

(भक्तों को पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रसादी रूप भेजे गये पत्रों का यहाँ क्रमशः प्रकाशन किया जायेगा)

सुश्रावक श्रीसुरेन्द्रजी।
धर्मलाभ।

पत्र मिला।

परम कृपालु पूज्यपाद गुरुदेवश्री की कृपा से हम शाता में हैं। उपधान तप आराधना सुखशान्ति से संपन्न हो रही है। तपस्वी सभी शाता में हैं।

विगत मागशर सुदि ६ को नेल्लोर नगर में जिनालय पर वार्षिक ध्वजारोहण उत्सव संपन्न हुआ।

मुनि मंडल, साध्वी मंडल शाता में हैं। सभी के तरफ से धर्मलाभ ज्ञात करावें। परिवार में भी सभी को धर्मलाभ कहें।

गुरु सप्तमी का मंगल पर्व आ रहा है। यहाँ पर उस की भव्य तैयारियां चल रही है। दि. १७।१।९४ को उपधान तप की माला परिधापन होगा! दि. ११।१।९४ गुरु सप्तमी का आयोजन होगा।

जीवन में स्वपर हितार्थ श्रेयस्कर कार्य करते रहना ही अपने जीवन की सफलता है। परमात्मा का पावनतम शासन प्रत्येक जीव को आत्म हितकारी प्रवृत्ति करते रहने का सभी को सुन्दर मार्गदर्शन करता रहता है।

वहाँ सभी प्रकार से कुशल मंगल होगा।

धर्म उद्यम रखें।

ज्ञातव्य ज्ञात करावें। सभी प्रकार से आनन्द है।
परीक्षा पुरस्कार वितरण का कैसा रखा है?
पाठशाला अनुदान का ज्ञात हुआ।
इस के साथ रिंगणोद परिषद् का पत्र प्रेषित है। योग्य करावें।

राजेन्द्रकुमार
दि. २७।१२।९३

[illegible] का
धर्मलाभ

त्रिस्तुतिक संघ का भाल

(श्रीमती पद्मा हेमेन्द्र सेठ)

जिनशासन के सजग प्रहरी, जैन संस्कृति के उद्गाता राष्ट्रसंत, अनंत आस्था के आयाम, अन्तस आलोक से देदीप्यमान मुखमण्डल, उन्नत-प्रशस्त भाल, अन्तरभेदिनी पारदर्शी दृष्टियुक्त नयन कमल, मुखरित प्रज्ञा, अजातशत्रु, क्रान्तदर्शी, अमृत पुरुष सौम्यमूर्ति, कीर्ति-कौस्तुभ, संयम सूर्य, हृदय शिरोमणी, दयानिधान, जीवन शिल्पी, व्यापक विराट, उर्जास्वल व्यक्तित्व एवं कर्त्तव्य के धनी, खादी का श्वेत शुभ्र परिधान लिये, समता एवं समन्वय के मणिकंचन योग का नाम है- श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने अपनी दिव्य कृपा से सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक संघ को प्रकाशमान किया है।

पुण्य सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म. सा. का जन्म पेपराल (थराद) में मागसर कृष्ण 13 वि.स. 1993 को हुआ था, इनके पिता का नाम स्वरूपचन्दजी धरू व माता का नाम पार्वती देवी था। इनके बचपन का नाम पूनमचन्द था। इनकी दीक्षा वि.स. 2010 में सियाणा राजस्थान में आचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में हुई, दीक्षा के पश्चात् इनका नाम जयन्तविजयजी रखा गया व उपनाम मधुकर दिया गया। दीक्षा लेने के 29 वर्ष पश्चात् आपको वि.स. 2039 में श्री कुलपाकनी तीर्थ पर आचार्य मनोनीत किया गया और भाण्डवपुर तीर्थ पर वि.स. 2040 में सूरिपद प्रदान किया गया, इस तरह जयन्त विजयजी श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी (आचार्य) म.सा. बन गये। एक साधारण परिवार में जन्मा यह बालक त्रिस्तुतिक संघ का भाल बनेगा, किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। पूज्य गुरुदेव के बारे में जितना कहा जाये, उतना कम है, इनके गुणों का वर्णन करना असम्भव है। इनके बारे में कुछ कहना तो सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। यदि सात समुद्र का पानी लाकर एक लेखनी बनाकर लिखें तो भी इनके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। हम सभी का जीवन धन्य है कि हमें ऐसे गुरुवर का सान्निध्य मिला, इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज व संघ को समर्पित कर दिया। आज ये हमारे बीच में नहीं हैं परन्तु इनकी दिव्य कृपा दृष्टि आज भी बरस रही है। आज भी पूरे संघ व समाज के मन में पुण्य सम्राट के प्रति वैसा ही समर्पण भाव, वैसी ही आत्मियता सभी के मन में है।

दूध में चाँवल मिलाने पर खीर बन जाती है।
जयन्तसेन जैसे गुरु मिलें तो तकदीर बन जाती है।

आज से दो वर्ष पूर्व पुण्य सम्राट हम सभी के मन में ज्ञान की ज्योति जलाकर इस लोक से विदा हो गये हैं। परन्तु उनकी यादें जीवन भर हमारे साथ में रहेंगी। उनके कहे गये शब्द हम सभी के लिए अमृत वचन बन गये हैं।

वे वर्तमान युग के महावीर थे, जिन्होंने अहिंसा, प्रेम व त्याग की भावना को समझा और अपने सभी भक्तों को पिता जैसा स्नेह प्रदान किया, एक पिता अपने पुत्र को जो स्नेह देता है, वही स्नेह सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक संघ को पूज्य गुरुदेव ने दिया है, उनकी यादें सदैव सभी भक्तों के मन में बसी रहेंगी।

फूल मुरझा जाता है, सुगन्ध रह जाती है।
धूप जल जाती है, महक रह जाती है।
महापुरुषों की होती है, अजीब सी दास्तान।
विभूति चली जाती है, पर यादें अमिट रह जाती है। ■■

जयंत गुरू वंदनावली

(घेवरचन्दजी नाहर, जमरवण्डी, कर्नाटक)

गुरुवर माता जनमीया, धन्य हुओ पेपराल गाँव गुरुवर जयवंता।
पिता स्वरूप ना लाड़ीला, मा पार्वती ना लाल गुरुवर जयवंता।

नाम पूनम को चन्द्रमा, घर वंश नो दिपायो नाम गुरुवर जयन्त।
जस नाम तस गुण घणा, दिन- दिन वृद्धि लहंत गुरुवर जयवंता।

भाव संयम ना जागीया गुरु यतीन्द्र नो सुमीलियो साथ गुरुवर जयवंता।

दीक्षा ली घणा भाव सुं, विद्या गूट सुमीलियो ज्ञान गुरुवर जयवंता।
आचार्य पद गुरु ने दियो, संघ घणो हर्षायो आज, गुरुवर जयवंता।

साहित्य मा सर्वोपरी, घणी रचना कीनी आप गुरुवर जयवंता।
मधुकर नामे शोभता, पुण्य सम्राट बनिया आप गुरुवर जयवंता॥

श्री जयंतसेन जीवन झलक [10]

(साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

किसी भी प्रकार से रोष को शांत स्वभाव से जीतकर साधना की, महनीयता को अक्षुण्ण बनाये रखने में निष्णात थे।

तिन्नाणं तारयाणं – इस जगत में जीवमात्र को संसार चक्र से पार पाने के लिए चारित्र के सिवाय अन्य कोई आलंबन नहीं है। दी अर्थात दान, क्षि अर्थात् क्षय, कल्याण का दान करना और अकल्याण का क्षय करना दीक्षा है। पू. गुरुदेव ने 200 से अधिक मुमुक्षु आत्माओं को संयम प्रदान किया एवं संसार सागर से उबारा है। सन् 1966 में उनका चातुर्मास राणापुर में हुआ। उनके वैराग्य सभर प्रवचन सुनकर श्री चंपालालजी दसेड़ा एवं धर्मपत्नी श्रीमती कंचनबाई के सुपुत्र बंसीलाल का मन संसार से विरक्त हो गया। सन् 1967 वैशाखवद बीज के दिन गृहग्राम राणापुर में मुमुक्षु बंसीलाल दसेड़ा को दीक्षा का दान दिया एवं नित्यानंद विजय नाम की उद्घोषणा की। उन्होंने कई साधक-साधिकाओं को सामुहिक दीक्षाएँ प्रदान की । जैसे 13 जून सन् 1985 में थराद में 6 दीक्षाएं, 5 दिसंबर 1992 को सूरत में 7 दीक्षाएं, 1995 को थराद में 7 दीक्षाएं, 17 अप्रैल 2002 को थराद में 11 दीक्षाएं, 18 मई 2003 को छत्राल में 7 दीक्षाएं, 2017 में थराद में 9 दीक्षाएं पुनः मई 2011 को थराद में 8 मुमुक्षुओं को दीक्षा, 22 मई 2011 को पेपराल में 10 मुमुक्षुओं को दीक्षा, 10 मई 2014 को सूरत में 8 दीक्षा, 27 मई 2015 को सूरत में 10 दीक्षाएँ, 2017 चुन्नीलाल नागरदास अदानी के द्वारा आयोजित विशाल आत्मोद्धार उत्सव में 25 मुमुक्षु आत्माओं को दीक्षा प्रदान की। ये दीक्षाएं देवलोक गमन के दो माह पूर्व प्रदान की थीं।

उन्होंने सभी मुमुक्षु आत्माओं को मात्र संयम प्रदान नहीं किया वरन् उन सभी अनगढ़ पत्थरों को एक साथ पूरे जतन से गढ़ने का महान कार्य किया। अपनी साधना छेनी एवं अनुभव के हथोड़े से मृतशिला को पूजनीय प्रतिमा में ढाला। पत्थर की शिला को कहाँ पता होता है कि उसमें कितनी सुंदरता का भंडार है ।

(क्रमशः)

■■

कल्पसूत्र का परिचय

पर्युषण पर्व का मुख्य सूत्र– **कल्पसूत्र**

टीकाकार – **श्री भद्रबाहुस्वामी**

कितने वर्ष के बाद वाचन – **993 वर्ष**

कितने वर्ष बाद पुस्तक छपी – **980 वर्ष**

कौन से गाँव में वाचन – **आनंदपुर (हाल– बड़नगर)**

कौन से राजा की समाधि के लिए वाचन हुआ – **ध्रुवसेन राजा**

धर्म है सुखों का बड़ा महल और उत्कृष्ट मंगल

(श्री शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

धर्म उत्कृष्ट मंगल है, स्वर्ग और मोक्ष को देने वाला है और संसार रूपी वन को पार करने में पथ प्रदर्शक है। धर्म माता की तरह पोषण करता है, पिता की तरह रक्षा करता है। गुरु की तरह उजले गुणों में ऊँची जगह चढ़ाता है और स्वामी की तरह बहुत प्रतिष्ठित बनाता है।

धर्म सुखों का बड़ा महल है, शत्रुओं के संकट में कवच है, सरदी से पैदा हुई जड़ता को मिटाने में धूप है और पाप के मर्म को जानने वाला है। धर्म से जीव राजा बनता है, बलदेव होता है, अर्द्धचक्री (वासुदेव) होता है, चक्रवर्ती, देव और इन्द्र होता है। ग्रेवेयक और अनुत्तर विमान होता है इन विमानों में अहमिन्द्र होता है और धर्म ही से तीर्थंकर बनता है। धर्म से सब कुछ मिलता है।

'दुर्गति प्रपत जंतुधारणाद्धर्म उच्यते।'

दुर्गति में गिरते हुए जीवों को जो धारणा करता है, उसे धर्म कहते हैं वह चार तरह का है- 1. तप, दान, शील और भावना।

दान धर्म तीन तरह का है- 1. ज्ञानदान- धर्म नहीं जानने वालों को वाचन या उपदेश आदि का दान देना अथवा ज्ञान पाने के साधनों का दान देना ज्ञानदान कहलाता है। ज्ञानदान केवल ज्ञान पाने का कारण है।

अभयदान- मन, वचन और काया से जीवों को न मारना, न मरवाना और न मारने वाले का अनुमोदन करना अभयदान है। 3. धर्मोपग्रहदान यह दान पाँच प्रकार का है- 1. दायक- दान देने वाला, 2. ग्राहक-दान लेने वाला, 3. देय-दान देने की वस्तु, 4. काल-समय और 5. भाव।

दान देने वाले का धन न्यायोपार्जित हो जो अच्छी बुद्धी वाला हो, जो किसी आशा से दान न देता हो। ज्ञानी हो, दान देकर पछताने वाला न हो। दान देने की इच्छा (चित्र) दान देने को धन (वित्त) और शुद्ध दान देने वाला (पात्र) मिले तो दानी कृतार्थ होता है।

दानी सावद्ययोग से विरक्त याने पाप

रहित रस, गौरव और ऋद्धि और साता गौरव से रहित होते हैं।

दान दाता राग-द्वेष से मुक्त, अठारह हजार शीलांग धारण करने वाला, रत्नत्रय (सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र) धारक, तप धारक, सत्रह, संयम पालक, धर्म और शुक्ल ध्यान जिन स्थिति वाला, अठारह ब्रह्मचर्य पालक, जितेन्द्रीय कुक्षीसंबल होकर ग्राहक शुद्धदान और पात्रदान दाता हो।

42 दोष रहित अशन (भोजन), पान (रस), खादिम (फल मेवा), स्वादिम (लोंग, इलायची), वस्त्र और संथारा (सोने लायक पाट) का दान **देय शुद्ध दान** है। योग्य समय पर योग्य पात्र को दान देना **पात्र शुद्ध दान** है और कामना रहित कोई इच्छा न रखकर (लालसा) दान देना **भाव शुद्ध दान** है।

जो अशनपानादि धर्मोपग्रहदान सुपात्र को देता है वह तीर्थ को अविच्छेद स्थिर करता है और परमवद (मोक्ष) को प्राप्त करता है। ■■

अशुभ कर्मों के कारण

* प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी को 400 दिनों तक आहार-पानी का अन्तराय पड़ा।
* चरम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के कान में कीला ठोंका गया।
* छह खण्ड के अधिपति सगर चक्रवर्ती के 60, 000 पुत्रों की एक साथ मृत्यु हुई।
* सुन्दरतम चक्रवर्ती सनत् कुमार के शरीर में एक साथ सोलह रोग उत्पन्न हुए।
* ब्रह्मदत्त नाम के बारहवें चक्रवर्ती को अंधा बनना पड़ा।
* श्री राम तथा श्री लक्ष्मण दोनों को बारह वर्ष तक वनवास भुगतना पड़ा।
* सत्यवादी हरिशचन्द्र को चंडाल के घर पानी भरना पड़ा।
* बाल ब्रह्मचारी महासती चन्दनबाला को कौशम्बी के बाजार में बिकना पड़ा।
* अगले भव में तीर्थंकर होने वाले महाराजा श्रेणिक को 100 चाबुक की मार प्रतिदिन खाना पड़ी।
* महावीर भक्त कुमीक को तमिस्त्रा गुफा के पास 36 वर्ष की उम्र में मृत्यु सहन करना पड़ी।
* गज सुकुमार के मस्तक पर अंगारे उड़ेले गये।

शान्ति और क्रान्ति के अग्रदूत दादा गुरुदेव

(धीमी गति वाला)

दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का आचार्य और श्री पूज्य पद पर आसीन होने के बाद प्रथम यशस्वी चातुर्मास । सौभाग्यशाली जावरा संघ । गुरुदेव के श्रीमुख से वीर वाणी का रसपान करने को मिला और गुरुदेव के स्फटिक रत्न जैसे निर्मल चारित्र का आनंददायी अनुभव मिला। वीर वाणी का प्रकाश फैलाने वाले अनेकानेक अद्भुत रत्नों में से एक देदीप्यमान रत्न, महान आगम ग्रंथ 'श्री भगवती सूत्र'। भगवती सूत्र को आधार बनाकर दादा गुरुदेव के शान्ति और क्रान्ति को उद्दीप्त करने वाले प्रवचन होने लगे। इन प्रवचनों में शुद्धाचार की शान्ति और उन्मार्ग के विरुद्ध क्रान्ति के स्वर प्रगटित हो रहे थे। गुरुदेव के प्रवचनों में एक अनोखा चुंबकत्व था, जिसके प्रभाव से जनप्रवाह खिंचा चला आता था। दुकानदार अपनी दुकानों का मोह छोड़कर और गृहणियां अपने गृहकार्य को छोड़कर प्रवचन श्रवण के लिए आ जाते थे। प्रवचन के समय जावरा के मोहल्ले और गलियां सुन सपाट हो जाते थे। जैसे प्रवचन, वैसा निष्कपट आचरण, यही गुरुदेव की सबसे बड़ी शक्ति थी। दादा गुरुदेव की ख्याति जावरा तक सीमित रहने वाली नहीं थी। रतलाम, मंदसौर, नीमच आदि नगरों में आसपास के ग्रामों में और धीमे-धीमे संपूर्ण मालवा में धर्म जाग्रति की लहर आ जाती है। शुद्ध साध्वाचार को देखकर सभी के हृदय खिल उठते हैं और शिथिलाचार से ग्रस्त यतिओं का प्रभाव एकदम कम हो जाता है। नये श्रीपूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी सबको मान्य होते जा रहे थे।

त्याग और निःस्पृहता के आगे तो देवों के अधिपति इन्द्र और चक्रवर्ती सम्राट भी नतमस्तक होते हैं। दादा गुरुदेव का शान्ति, नम्रता, सरलता, निर्लोभता का आचरण और वैसा ही उनका उपदेश इसका प्रभाव जावरा के नवाब को भी खींच लाता है। जावरा के नवाब गोस्तमोहम्मद खान और उनके दीवान हजरत नूरखान भी दादा गुरुदेव के प्रवचनों का लाभ लेने के लिए आने लगते हैं और दादा गुरुदेव से बहुत प्रभावित होते हैं।

एक दिन नवाब साहब और दीवान साहब दोनों एक-एक प्रश्न गुरुदेव के सन्मुख रखते हैं, इन प्रश्नों का गुरुदेव अपनी अनेकान्तिक भाषा में ऐसा समाधान प्रस्तुत करते हैं कि दोनों के मनमयूर प्रसन्न हो जाते हैं।

नवाब साहब का प्रश्न था, यदि हम जैन सिद्धान्तों के अनुरूप शुद्ध आचार विचार का पालन करने लगें तो क्या आप हमारे यहाँ गोचरी वहोराने के लिए पधार सकते हैं ? इस पर गुरुदेव ने भगवान का अकाट्य सिद्धान्त बता दिया कि हम तो जन-जन में, प्राणिमात्र में इस अलौकिक आभा को देखते हैं जो कि अरिहंत में या कहें कि आपके अल्लाह में रही हुई है। व्यक्ति वस्तुतः जन्म से ऊंचा नीचा नहीं होता। हम कुल का निर्णय जन्म से नहीं वरन आचार विचारों से करते हैं । घराना बहुत ऊँचा हो लेकिन उनके आचार - विचार हीन हों, अभक्ष्य खानपान हो तो हमारे लिए वहाँ गोचरी जाना वर्जनीय है लेकिन यदि हीन कुल है परन्तु आचरण उच्च है, खानपान में भक्ष्य- अभक्ष्य का ध्यान रखा जाता है तो फिर वहाँ गोचरी जाने के लिए कोई वर्जना नहीं है, वहाँ हम खुशी से जा सकते हैं। आचार्य देव के समाधान से नवाब साहब के चेहरे पर संतुष्टी उभर आती है।

दीवान साहब भी इस प्रश्नोत्तरी से संतुष्ट हुए इसलिए उन्होंने भी अपना एक प्रश्न रखना उचित समझा । उनका प्रश्न था आपके प्रवचनों में स्त्रियां सजधज कर, श्रृंगार करके आती हैं तो क्या उन्हें देखकर आपका मन चल विचल नहीं होता, विकार भाव से ग्रसित नहीं होता ? दादा गुरुदेव ने इस सटीक प्रश्न का उत्तर भी सटीक दिया। जैसे आपके इस्लाम में यह सिद्धान्त बतलाया गया है कि सुअर घृणित वस्तुओं का आहार करता है इसलिए सुअर का मांस वर्जनीय है। (वास्तव में तो मांस मात्र ही घृणित है।) आप लोग मांस भक्षी होते हुए भी सुअर के मांस से घृणा करते हैं, उसे मुंह में डालना तो दूर पर उसका स्पर्श करना भी उचित नहीं समझते हैं। हमारे यहाँ भी भगवान ने सिद्धान्त बतला दिया है कि स्त्री का शरीर मांस, खून, चमड़े आदि घृणित पदार्थों का समुच्चय है (वैसे ही पुरुष शरीर भी घृणित पदार्थों का समुच्चय है) इसलिए हम साधुओं के लिए उसका स्पर्श ही नहीं वरन उसकी ओर कुदृष्टि से देखना भी वर्जनीय है। हमारे लिए समस्त नारियां पुत्री, बहन या माँ के समान हैं, इसी पवित्र दृष्टि से उन्हें देखने का हमारे लिए विधान है, फिर विकार भाव कैसे संभव ? कामविकार बहुत हेय माना गया है, वह अधोगामी

बनाने वाला, पतित करने वाला और ओजस्व को नष्ट करने वाला है इसीलिए उसे त्यागकर निकले हुए हम पथिक हैं। हम भगवान के चरण कमलों से बने पथ पर चलने वाले कामविकार से कोसों दूर रहते हैं। इस उत्तर को सुनकर दीवान साहब गुरुदेव के प्रति और भी अधिक नतमस्तक हो उठते हैं। भविक जनों के प्रश्नों का समाधान गुरुदेव की आध्यात्मिक श्रद्धा, आध्यात्मिक ज्ञान और आध्यात्मिक आचरण से सहज ही हो जाता था।

उधर मारवाड़ (राजस्थान) में बिराजीत श्री पूज्य धरणेंद्रसूरिजी के यहाँ मुनिराज रत्नविजयजी के चले जाने के बाद सारी व्यवस्थाएँ अस्त व्यस्त हो गई थी, जब उन्हें मुनिराज रत्नविजयी के श्री पूज्य बन जाने के समाचार मिले और बाद में जावरा और पूरे मालवा में नए श्री पूज्यजी के शुद्धाचार के प्रति बढ़ती आस्था की बातें सुनी तो उनका नशा उतर गया और उन्हें अपने किये पर पश्चाताप होने लगा वे सोचने लगे कि मुनिराज रत्नविजयजी की कहाँ कोई गलती थी जो मैंने उनको कुछ का कुछ कह दिया, मैं कुछ नहीं कहता तो वे मेरे साथ बने रहते और यह परिस्थिति उत्पन्न ही नहीं होती। अब तो बाजी मेरे हाथ से निकलती दिखाई दे रही है। श्री पूज्य धरणेंद्रसूरिजी चातुर्मास समाप्ति के बाद अपने कुछ यतिओं को मालवा की टोह लेने भेजते हैं, वे मालवा के ग्राम, नगरों में व जावरा में जाकर आते हैं और बतलाते हैं कि संपूर्ण मालव प्रदेश में नये श्री पूज्यजी आलौकिक श्रद्धा के केन्द्र बन गये हैं।

अब क्या किया जाए ? समझौता और क्षमायाचना ही एकमात्र रास्ता है। श्री पूज्य धरणेंद्रसूरिजी अपने मुख्य यतिओं को विचार विमर्श करने के लिए बुलाते हैं। सभी का एकमत था कि अपने आचार में आवश्यक सुधार किए जाएं नहीं तो अपनी मान्यता बनी रहनी मुश्किल है। पन्यास मोती विजयजी और देवसागरजी ने श्री पूज्यजी व स्वच्छंदाचारी यतिओं को साफ-साफ सुना दिया कि शुद्धाचार का पालन ही हमारे रोग की दवाई है। नये श्री पूज्यजी को पुनः अपने साथ लाने के लिए आग्रह करना होगा।

विचार विमर्श चल रहा था लेकिन कुछ यतिओं को जो कि इंद्रिय विषयों के स्वच्छंद पोषण में लगे हुए थे, उन्हें सुधार और समाधान की बातें पसंद नहीं आई। समझौते के लिए मुख्य यतिगण नये श्री पूज्यजी के पास जाएं उसके पहले तो ये स्वच्छंद यति जावरा पहुंच गये और वहां के श्रावकों को नये श्रीपूज्यजी के विरुद्ध भड़काने लगे, मंत्र तंत्र के भय दिखाने

लगे लेकिन वहाँ के श्रावकों को नये श्री पूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी का ऐसा पक्का रंग लग गया था कि वे अब यतिओं के भुलावे में आने वाले नहीं थे और मंत्र तंत्र से डरने वाले भी नहीं थे। जब उन यतिओं के श्रावकों ने थोड़ा धमकाया तो वे रातों रात जावरा से पलायन कर गये। वे यति रतलाम, खाचरौद आदि स्थानों पर भी गये लेकिन उनकी दाल कहीं नहीं गली और उन्हें निष्फल होकर वापस मारवाड़ लौटना पड़ा।

जब ये सब प्रपंच मुख्य यतिओं को पता लगते ही वे बहुत नाराज होते हैं और श्रीपूज्यजी को कहते हैं कि हम तो आत्म कल्याण के लिए निकले हैं, पर यहाँ तो छल-कपट और इंद्रिय पोषण की प्रवृत्तियां चल रही हैं। यतिओं के लिए ऐसे कार्य कलाप शोभास्पद नहीं हैं। यदि आप शीघ्र ही समाधान नहीं निकालते हैं तो हम सब भी नये श्रीपूज्यजी के साथ हो जाएंगे। यहाँ यह रेखांकित करना आवश्यक है कि अच्छा आचरण कितना शक्तिशाली होता है जो विरोधी पक्ष के हृदयों में भी प्रवेश कर जाता है। अब हमें आगे यह देखना है कि दोनों पक्षों में आपस में क्या समाधान होता है और उस समाधान से कौनसी नई क्रान्ति का जन्म होता है ?

■■

जैन शब्दार्थ

भूचर	:	भूमि पर चलने वाला।
खेचर	:	आकाश में चलने वाला।
दृश्य	:	जो देखा जा सके।
अदृश्य	:	जो दिखाई न दे।
भव प्रत्ययिक	:	भव के निमित्त (कारण) से मिलने वाला।
गुण प्रत्ययिक	:	गुणों के निमित्त से मिले सो, गुणों से प्रकट होने वाला।
लब्धि प्रत्ययिक	:	गुण प्राप्त करने से जो लब्धि मिली हो उस लब्धि से मिलने वाला।
पूर्वधर	:	चौदह पर्व सीखे हुए मुनि
संदेह	:	शक।
तीर्थंकरादि	:	चतुर्विध संघ स्वरूप जो तीर्थ है उसके कर्त्ता
भवधारणीयता	:	अपने भव में जीव को धारण कर रखे, पकड़ रखे वह गुण
सोपक्रमी	:	उपक्रम = निमित्त, मरते समय अग्नि आदि निमित्त मिले वैसा
निमित्तों वाला	:	अग्नि, पानी, पहाड़ आदि मृत्यु के निमित्त बनें वैसा
निरूपक्रमी	:	मरते समय निमित्त न मिले वह, सहज-मृत्यु हो वैसा
तद्भवमुक्तिगामी	:	उसी भव में मोक्ष जाने वाला जीव

आध्यात्मिक पर्व पर्युषण

(श्री जोगीराम जैन)

पर्युषण पर्व एक आध्यात्मिक पर्व है। अन्य लौकिक पर्वों में भौतिक लिप्साओं का पोषण होता है परन्तु पर्युषण पर्व में आत्मा को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए कर्मनिर्जरा के हेतु उक्त साधना की जाती है। जैन समाज की परम्परानुसार पर्युषण पर्व में चातुर्मासिक विराजित सन्त-सतीयों के सान्निध्य में पूरे पर्युषण पर्व की अवधी में अनेक धर्मानुष्ठान किए जाते हैं।

प्रत्येक धर्मानुष्ठान का लक्ष्य आत्मोद्धार रहता है। शास्त्र-प्रवचन, श्रावक, स्वाध्याय, सामायिक, व्रत-उपवास, पच्चखाण आदि के द्वारा दिनों में उस उर्जा के बल पर आत्म शुद्धि निरंतर बनी रहती है। आजकल तो यह परम्परा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है कि पर्युषण पर्व विविध आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक एवं जैनधर्म शिक्षा संबंधी अनेक शिविरों एवं प्रतियोगिताओं के आयोजन किए जाने लगे हैं। इससे बच्चों, युवकों, महिलाओं एवं अन्य श्रावक-श्राविकाओं की धार्मिक कार्यों में भागीदारी हो जाती है।

यह ठीक है पर्युषण पर्व में अनेक नर-नारी धर्माराधना में तत्पर रहते हैं परन्तु उन जैनों की संख्या भी कम नहीं है जिन्हें चातुर्मास पर्युषण पर्व आदि धार्मिक कृत्यों में बिल्कुल रुचि नहीं होती है। विशेष रूप से युवा वर्ग इस धर्मलाभ से वंचित ही रहता है। सबसे पहले यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण जैन समाज में जैन धर्म का प्रचार हो। जैन धर्म के प्रचार का तात्पर्य है कि भारत का प्रत्येक जैन अपने जैन होने की अलग पहचान बनावे। जैन धर्म की अच्छाईयों, विचारों तथा आचार से पूर्णतया परिचित हो। कितना अच्छा हो कि भारत का प्रत्येक जैन अपने जैन होने के गौरव का अनुभव करे तथा विशेष धार्मिक कार्यों में अपनी रुचि प्रदर्शित करे। आज संवत्सरी को एक ही मंच से मनाने की आवश्यकता है। इसका समाधान यह हो सकता है कि जैन धर्माचार्य मिलकर चिन्तन करें कि श्वेतांबरों और दिगम्बरों की संवत्सरी एवं अनन्त चतुर्दशी एक ही मंच से मनाने का शुभ संयोग प्राप्त हो सके।

क्योंकि दोनों ही का उद्देश्य पारम्पारिक क्षमा के आदान-प्रदान में आत्मा के राग-द्वेष के आवरण को हटाना है। एक बात इस सम्बन्ध में विशेष उल्लेखनीय है कि आजकल क्षमा पत्रिकाओं का प्रकाशन बहुत अधिक बढ़ता जा रहा है। जो बात व्यक्तिगत महत्व की है उसे एक प्रदर्शन एवं शिष्टाचार या प्रदर्शन नहीं बल्कि हृदय से हृदय का मिलन है।

व्यक्तिगत एवं सामाजिक राग-द्वेषों की एक सदस्य के लिए तिलांजली है। यदि दूरस्थजनों से क्षमा याचना करना भी हो तो उनसे अपने हाथ से हस्तलिखित पत्र द्वारा क्षमा याचना की जानी चाहिए। आजकल तो समाचार पत्रों के माध्यम से क्षमा याचना का रिवाज हो गया है। वह कहां तक आत्मशुद्धि एवं राग-द्वेष निवृत्ति का कारण हो सकता है इस पर विचार करें। ■■

पर्युषण पर्व आ रहा है

(श्री अचलचन्द जैन, गान्धीमुहत्तों का वास, सायला)

पर्वों और त्यौहारों की भारतीय संस्कृति में जैन धर्म में मनाया जाने वाला पर्युषण पर्व जैन परम्परा का महान आध्यात्मिक पर्व है। पर्युषण का शाब्दिक अर्थ हैं- चारों ओर से सिमट कर एक स्थान पर निवास करना अर्थात स्वयं में वास करना। इस अवधि में व्यक्ति सांसारिक प्रपंचों एवं मोह-माया से दूर रहकर क्रोध, अहंकार, घृणा आदि को शान्त करके चित्त को निर्मल करते हैं। जैन धर्म में जैसे नवकार मंत्र मंत्राधिराज है, सिद्धाचल तीर्थ तीर्थाधिराज हैं, वैसे ही पर्युषण पर्व पर्वाधिराज हैं।

यह पर्व क्षमा, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, जप, तप, पौषध, स्वाध्याय, दान आदि विभिन्न प्रकार के उत्तम सन्देशों को लेकर आता है। इन सन्देशों को आत्मसात करते हुए हम जीवन को आध्यात्म के क्षेत्र में गतिमान कर सकते हैं। यह पर्व आत्म साक्षात्कार और आत्मशक्ति के जागरण का शंखनाद करता है। इसलिए इसे महापर्व की संज्ञा दी गई है। यह पर्व हजारों वर्षों के गौरवपूर्व त्याग, तपस्या एवं क्षमाशीलता के इतिहास को दोहराता है। इतना ही नहीं यह पर्व दान, शील, तप और भावना के चतुर्विध साधना-आराधना की पुनित प्रेरणा देता है।

पर्व के इन दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए तपस्या की अलख जगाकर कर्मों का क्षय करते हैं, तो कोई दान की गंगा बहाकर मन के पापों का प्रक्षालन करता है, तो कोई क्षमा का अमृत पान करते हैं। कुछ लोग पौषध में व्याख्यान सुनकर एवं स्वाध्याय कर ज्ञान की अभिवृद्धि करते हैं। इस प्रकार पर्युषण पर्व विशुद्ध रूप से आराधना का पर्व है। इन दिनों व्यक्ति धर्म के विविध आयामों को अपनाकर आत्मसाक्षात्कार करता है। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार 8 दिवसीय यह पर्व चातुर्मास के वर्षाकाल के अन्तर्गत भादवा महीने में मय संवत्सरी (क्षमापना दिवस) के आता है एवं दिगम्बर परम्परा के अनुसार दस लक्षणी क्षमावाणी पर्व भी भादवा महीने में ही आता है। इन दिनों वर्षाऋतु का मौसम होने से वातावरण में ठण्डक रहती है। अतः यह समय तपस्या के लिये उपयुक्त होता है।

इस पर्व को मनाने का तरीका लौकिक पर्वों से अलग है लौकिक पर्वों में शरीर का श्रृंगार कर उसे बहुमूल्य वेशभूषा से सजाया जाता है। परन्तु इस आध्यात्मिक पर्व में आत्मा का श्रृंगार आत्मिक सद्गुणों तथा तपश्चर्या की साधना- आराधना से किया जाता है। इस पर्व के आठ दिनों में हिंसा, क्रोध, वैर, चोरी, झूठ आदि का मन, वचन और काया के योग से त्याग किया जाता है एवं किसी के हृदय को ठेस नहीं पहुंचे ऐसे वचनों का प्रयोग किया जाता है इस महान पर्व की सार्थकता अतीत के सिंहावलोकन और

आत्मकल्याण के लिये नया संकल्प लेने में है। इस अवसर पर हमें मन, वचन और कर्म से पवित्रता बनाये रखने का संकल्प लेना चाहिये।

पर्युषण केवल परिपाटी नहीं, वरन दायित्व बोध का महापर्व है। दूसरे शब्दों में यह आध्यात्मिक जीवन निर्माण का अनुपम अवसर है। दिखावे और भौतिकवाद से दूर यह आत्म साक्षात्कार का एक विशेष अवसर है। इस अवसर पर हम स्वयं का स्वयं से परिचय करते हैं, अर्थात स्वयं के द्वारा स्वयं को देखना। ऐसा करने का अर्थ है- हमारी गलतियों का हम खुद पता लगाकर उनका परिष्कार करें। पर्युषण के अन्तिम दिन आत्मशुद्धि के लिये सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करके 84 लाख जीवयोनियों में जी रहे समस्त प्राणियों से क्षमा मांगकर अपने वैरभाव को समाप्त करते हैं। ■■

राजेन्द्र जयंत का साथ हमने पाया...

किया होगा पुण्य कोई हमने प्रभु महावीर का शासन पाया,
मिल रही है कृपा हमें ऐसे राजेन्द्र जयंत का साथ पाया,
प्रभु ने भी खुद से ऊँचा, गुरु का स्थान बताया,
गुरु में संसार समाया, गुरु ने ही जीना सिखाया...

मन तृप्त बने चरणों में, आत्मकल्याण करने वाला,
अज्ञानता को भगाने वाला सही मार्ग बताने वाला,
अपने करुणामयी वात्सल्य से सबके हृदय में बसने वाला,
ऐसे गुरु राजेन्द्र जयंत का साथ हमने पाया...

अवसर आया फिर से चार्तुमास का आँखें आज भी नम हैं,
मालवा की धरती पर जयनाद गूंज रहा पर सूनापन है लग रहा ,
शब्द नहीं गुणगान के पर रतलाम चातुर्मास याद आ रहा,
ऐसे गुरु राजेन्द्र जयंत का साथ हमने पाया,

करें भक्ति तन मन से प्रभु तेरी कर्मों को हम खपा लें,
त्याग तपस्या की खुशबु से पिपलौदा नगर को महका दें
पुण्य सम्राट का इतिहास फिर से वही भक्ति रंग उड़ा दे
ऐसे गुरु राजेन्द्र जयंत का साथ हमने पाया...

– प्रियंका प्रवीण डूंगरवाल, नयागांव

चातुर्मास-श्रमण संस्कृति का प्रतीक

(प्रस्तुति- श्री अरविंद शास्त्री)

चातुर्मास - धार्मिक आस्था का प्रदीप है।
चातुर्मास - धर्म कमाने का मौसम है।
चातुर्मास - संत समागम का माध्यम है।
चातुर्मास - सामाजिक एकता का सूत्र है।
चातुर्मास - वैराग्य जागरण का दूत है।
चातुर्मास - साधु और श्रावक का योग है।
चातुर्मास - प्रभावना का सफल प्रयोग है।
चातुर्मास - साधना सिद्धि का मंत्र है।
चातुर्मास - आत्मिक उपलब्धि का तंत्र है।
चातुर्मास - प्रकृति की मधुर मुस्कान है।
चातुर्मास - खुशहाली की पहचान है।
चातुर्मास - आत्म स्वरूप में प्रयाण है।
चातुर्मास - अध्यात्म- उन्नति का सोपान है।
चातुर्मास - ज्ञान वर्षा का अवसर है।
चातुर्मास - गुण पुष्पों का तरूवर है।
चातुर्मास - चतुर्विध संघ का मेल है।
चातुर्मास - मुक्तिपुरी की रेल है।
चातुर्मास - पूजा-भक्ति का त्यौहार है।
चातुर्मास - मंदिर-चैत्यालयों की बहार है।
चातुर्मास - आत्मज्ञान का शिविर है।
चातुर्मास - धर्म-जागृति की लहर है।
चातुर्मास - धर्म सुगंधी का झोंका है।
चातुर्मास - तप-त्याग का मौका है।
चातुर्मास - सदुपयोग की बेला है।
चातुर्मास - ज्ञानीजनों का मेला है।
चातुर्मास - आत्मा को निहारने का दर्पण है।
चातुर्मास - सद्गुण भरने का बर्तन है।
चातुर्मास - मन मयूर का नर्तन है।
चातुर्मास - चौबीस प्रभु का अर्चन है।
चातुर्मास - सीखने-समझने का समय है।
चातुर्मास - संयम रक्षा का प्रयास है, जीवों के लिए अभय है।
चातुर्मास - आत्मिक गुणों का विकास है।
चातुर्मास - आत्म सज्जा का आभूषण है।
चातुर्मास - लाता पर्व पर्युषण है।
चातुर्मास - जागने चलने और पीने का इशारा है।
चातुर्मास - निर्ग्रंथ गुरु का जयकारा है।
चातुर्मास - आध्यात्मिकता की दीवाली है।
चातुर्मास - बाह्य अंतरंग की हरियाली है।
चातुर्मास - श्रमण संस्कारों का उद्घोष है।
चातुर्मास - महावीर प्रभु का जयघोष है। ■ ■

शाश्वत धर्म

धर्म की अनन्यता में अनंत शाश्वतत्ता का प्रतीक

शाश्वत धर्म पत्रिका आपके पोस्टल अड्रेस पर भेजी जायेगी.

आप सभी से यह निवेदन है यह पत्रिका जरूर मंगवाइए

पत्रिका का शुल्क 10 वर्ष का सिर्फ 1100/- रुपए है

निवेदन : श्री सौधर्म बृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के
घर-घर में शाश्वत धर्म पत्रिका होनी चाहिए।

पत्रिका बुकिंग : शाश्वत धर्म पत्रिका
(गुजरात प्रतिनिधि)

विपुलकुमार बाबूलाल दोशी (जेतडा वाले)
9427969984, 84012 35001

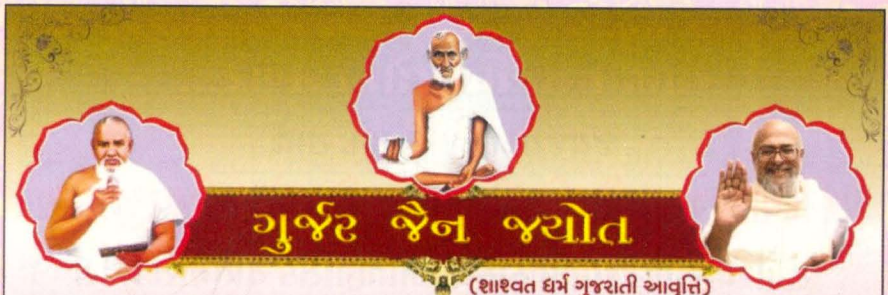

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી
ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,
ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અનંત ઈચ્છા

"ઇચ્છા હુ આગાસસમા અણંતિયા ।।"

(ઇચ્છા આકાશના જેવી અનંત હોય છે.)

આપણે દુઃખી શા માટે છીએ ? એટલા માટે કે આપણે કાંઇક ઇચ્છીએ છીએ. એનો અર્થ ? અર્થ એ જ કે ઇચ્છા સ્વયં દુઃખ છે. જ્યાં સુધી ઇચ્છા છે ત્યાં સુધી દુઃખ છે. જેનામાં ઇચ્છા છે તે દુઃખી છે. ઇચ્છાનો જન્મ શા માટે થાય છે ? આપણી અંદરના અભાવના અનુભવે. આ અનુભવનું કારણ ? આત્માના વાસ્તવિક સ્વરૂપનું અજ્ઞાન. સ્વરૂપ ? અનંત આનંદમય !

જ્યાં સુધી આત્માના આ વાસ્તવિક સ્વરૂપનું અજ્ઞાન રહે છે. ત્યાં સુધી વ્યક્તિ સુખની ખોજમાં બહાર ભટકતો રહે છે. એ માટે તે વિષયોને શરણે જવાનો પ્રયાસ કરે છે, જ્યાં સુખ નથી. ફક્ત સુખનો આભાસ છે - અસ્થાયી અથવા અચિરસ્થાયી સુખ છે. વળી વિષયોથી પણ મન તૃપ્ત ક્યાં થાય છે ? એક ઇચ્છા પછી બીજી, અને નાની ઇચ્છા પછી મોટી ઇચ્છા ઉત્પન્ન થતી રહે છે. ઇચ્છાની પૂર્તિનો પ્રયાસ એટલા માટે નિષ્ફળ છે. ઉપર જુઓ ! આકાશ કેવું છે ? અનંત છે - ન ક્યાંય આદિ છે, ન અંત છે ! ઇચ્છા પણ એવી જ અનંત છે.

- ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર ૯/૪૮

માળવાના પિપલોદા નગરે...

જયજયકારના ઉન્માદ સાથે

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.

સપરિવારનો રજવાડી ઠાઠથી ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ પ્રવેશ

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી, લાખો લોકોના હૃદય સમ્રાટ, સમસ્ત જીવ પ્રત્યે મૈત્રી રાખવાવાળા લોકસંત, પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારનો માળવાના પિપલોદા નગરે રજવાડી ઠાઠથી ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ પ્રવેશ થયો હતો.

પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીએ ઈન્દોર ખાતે જિનાલયની તેમજ પુણ્ય સમ્રાટની પ્રતિમાની પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન કરાવી ખાચરોદ નગરે ભવ્યાતિભવ્ય શોભાયાત્રા સહ સામૈયા સાથે પ્રવેશ કર્યો હતો. આ શોભાયાત્રામાં વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પ્રતિમાઓને બિરાજાન કરવામાં આવી હતી.

પ્રતિષ્ઠા સંપન્ન થવાવાળી બંને પ્રતિમાઓનો શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ જિનાલયમાં પરોણારૂપે પ્રવેશ કરાવાયો હતો. આ બંને પ્રતિમાઓને પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રી દ્વારા મંત્રોચ્ચારથી અસ્થાઈ રૂપથી પાટ પર બિરાજમાન કરાઈ હતી. બંને પ્રતિષ્ઠા કરાવવાનો લાભ શ્રી અજીતકુમારજી ઉલ્લાસમલજી વાગરેચા પરિવારે લીધો છે. ત્યાંથી આ શોભાયાત્રા લીમડાવાસ સ્થિત શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન પૌષધશાળા ખાતે પહોંચી હતી અને ધર્મસભારૂપમાં પરિવર્તીત થઈ હતી. ત્યાં પૂજ્યશ્રીએ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. શ્રી સંઘ તરફથી શ્રી સુરેશજી મહેતા, શ્રી દેવેન્દ્રજી બનવટ, શ્રી ધેવરચંદજી નાન્દેચા, શ્રી અનોખીલાલજી ભંડારી, શ્રી રાજેશજી બનવટ, શ્રી પ્રવિણજી ચૌહાણ, શ્રી અજીતજી વાગરેચા

વિગેરેએ પૂજ્યશ્રીને કાંબળી ઓઢાડી હતી. પૂજ્યશ્રી સપરિવારે બપોરે વિહાર કરી જાવરા રોડ સ્થિત શ્રી રાજરાજેન્દ્ર - જયંતસેન વિદ્યાપીઠ ધામ ખાતે પધરામણી કરી હતી. જ્યાં નવનિર્મિત પ્રથમતલ સજન શ્રી અભિજ્ઞાન પ્રકલ્પનો લોકાર્પણ સમારોહ પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં ઈન્દોર નિવાસી શ્રીપાલજી સકલેચા દ્વારા સંપન્ન કરવામાં આવ્યો હતો. વિદ્યાપીઠના બીજામાળનું ભૂમિપૂજન પણ કરાયું હતું. ત્યાંથી વિહાર કરી ચાતુર્માસ હેતુએ જાવરા તરફ વિહાર કર્યો હતો.

સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ - ૧૧ ને શુક્રવાર તા. ૧૨-૭-૨૦૧૯ની સુપ્રભાતે શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ રાજેન્દ્ર યતિનન્દ્ર - જયંતસેન વાટિકા (દાદાવાડી) ખાતેથી ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના ચાતુર્માસ નગર પ્રવેશ નિમિત્તે ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા)નું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ, મોહનખેડા ખાતે ગત ચૈત્ર સુદ - ૧૫ના રોજ પિપલોદાનગરે ચાતુર્માસ કરવાની ઘોષણા કરી હતી ત્યારથી જ પિપલોદા સંઘ ચાતુર્માસની તડામાર તૈયારીઓમાં લાગી ગયો હતો. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પિપલોદા આતુરતાપૂર્વક રાહ જોઈ રહ્યો હતો તે ઘડી પળ આવી પહોંચી હતી. પિપલોદા શ્રી સંઘના મનોરથ ફળતાં પિપલોદાવાસીઓ હરખાઈ ઉઠ્યા હતા.

ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારને આવકારવા સમસ્ત માળવા સહિત રાજસ્થાન, ગુજરાત, ઉત્તર ભારત, દક્ષિણ ભારત વિગેરે સંઘોના અધ્યક્ષો, પ્રતિનિધિઓ અને ભક્તો તેમજ પિપલોદાનગરના ભક્ત સમુદાય સહિત અંદાજિત ૧૦૦૦૦ ભક્તો પિપલોદાનગરે ઉમટી પડ્યા હતા. ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા)માં રાજસ્થાનના લોકપ્રિય રાજેન્દ્ર મ્યુઝીકલ બેન્ડ, કલાકારો દ્વારા પ્રસ્તુતિ, હાથી, ઊંટ, ધ્વજ, ઘોડા, ઉંટગાડીઓ, બગીઓ, નાસિક ઢોલ પાર્ટી, આદિવાસી નૃત્ય મંડળી, ૨૦૧૬ વર્ષની પ્રતિષ્ઠા ઝલક, આત્મોદ્ધારની યાદ સ્વરૂપ ઝલક વિગેરે મંત્રમુગ્ધ કરી દેતી રચના અદકેરા આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની હતી.

આ પ્રસંગ નિમિત્તે પિપલોદા નગરના દરેક વિસ્તારોને અદ્‌ભૂત રીતે શણગારવામાં આવ્યા હતા. ધજા-પતાકા, તોરણો તેમજ કમાનો અને વિવિધ સ્થળે પૂજ્યશ્રી સપરિવારને આવકારતા વિશાળ દરવાજા ઉભા કરાયા હતા. ઠેર ઠેર ગહુલી, અવનવા વસ્ત્રોમાં સજ્જ યુવાનો, વૃદ્ધો, રંગબેરંગી સાડીઓમાં સજ્જ સન્નારીઓ અને પરિષદ પરિવારના કાર્યકરોએ પણ અકદેરું આકર્ષણ જમાવ્યું હતું.

આ ચાતુર્માસ પ્રસંગે કળશધારી બાલિકાઓ અને મહિલાઓએ સામૈયું કરી પૂજ્યશ્રી પરિવારના અક્ષતથી વધામણા કર્યા હતા. સંઘ, પરિષદ, ચાતુર્માસ સમિતિના સભ્યો સહિત સમાજજનો ૩ થી ૪ કિ.મી. ફરેલી શોભાયાત્રામાં મન મૂકીને નાચ્યા હતા. આ સમયે વાતાવરણ એક તરફી ગુરુમય બની ગયું હતું. સમાજની મહાન હસ્તીઓને મુક્તપણે નાચતી નિહાળી ઉપસ્થિત હજ્જારો જૈન-અજૈન લોકો આનંદિત બની ગયા હતા. આ શોભાયાત્રા મોટું અંતર કાપી શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ રાજેન્દ્ર યતિન્દ્ર જયંતસેન વાટિકા ખાતે પહોંચી હતી. બંગાળી કારીગરો દ્વારા થર્મોકોલ કટીંગથી રચાયેલા ૧૮૦ × ૮૦ ફૂટના વિરાટ મધુકર પ્રવચન મંડપમાં ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારે પ્રવેશ કર્યો હતો. ત્યાં આ વિરાટ ચલ સમારોહ (શોભાયાત્રા) ધર્મસભારૂપમાં પરિવર્તીત થઈ હતી. હજ્જારો ગુરુભક્તો જ્યાં જગ્યા મળે ત્યાં ગોઠવાઈ ગયા હતા. પ્રવચન મંડપ ખીચોખીચ ભરાઈ ગયો હતો. આ પ્રસંગે જાપાનથી તુલસીબેન સાથે જાપાની ભક્તજનો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

પૂજ્યશ્રીએ માંગલિક સંભળાવ્યું હતું અને સમાજના અગ્રણીઓ દ્વારા દિપ પ્રગટાવી કાર્યક્રમનો શુભારંભ કરાયો હતો. ત્યારબાદ સમાજના અગ્રણીય વક્તાઓએ પ્રાસંગિક પ્રવચનો આપી તેમનું વ્યક્તવ્ય રજુ કર્યું હતું. અંતમાં પૂજ્યશ્રી તથા શ્રમણ ભગવંતોએ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું. બહારથી પધારેલા મહેમાનો માટે આવાસ-નિવાસ અને ત્રણેય ટાઈમના ભોજનની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. પુણ્ય સમ્રાટ નગરીની પણ ૧૮૦×૮૦ ફૂટની રચના કરાઈ હતી.

આ ચાતુર્માસને અત્યંત સફળતા અપાવવા વિવિધ સમિતિઓની

સર્વાનુમતે વરણી કરાઈ હતી. જેમાં ચાતુર્માસ સમિતિ : અધ્યક્ષ શ્રી રાકેશજી જૈન (ઈન્દોર), ચાતુર્માસ પ્રભારી શ્રી રાકેશજી જૈન (આર.કે.), ઉપાધ્યક્ષશ્રી નરેન્દ્રજી બોહરા, શ્રી સતીશજી ચંદ્રાવત, સચિવ શ્રી મુકેશજી રાયલ, કોષાધ્યક્ષ શ્રી રાજેન્દ્રજી કોઠારી, સહકોષાધ્યક્ષ શ્રી શાંતિલાલજી મોગરા, શ્રી નવલજી જૈન, મીડિયા પ્રભારી શ્રી જીતેન્દ્રજી બાબેલ, સંરક્ષક શ્રી બાબુલાલજી ધીંગ, શ્રી રીતેશજી બોહરા (ટોપીવાળા) શ્રી કૈલાસજી નાંદેચાએ સંપૂર્ણ જવાબદારી અદા કરી હતી. દેશભરના વિવિધ ક્ષેત્રોમાંથી પધારેલા ગુરુભક્તો માટેની આવાસ વ્યવસ્થાની જવાબદારી શ્રી મહેશજી બોહરા, શ્રી રાહુલજી કોઠારી, શ્રી જીગ્નેશજી નાંદેચા, શ્રી સંતોષજી બાબેલે સંભાળી હતી. ચાતુર્માસ સંબંધી કોઈપણ જાણકારી માટે શ્રી રાકેશજી જૈન (આર.કે.) મો. ૯૬૯૧૦-૧૩૩૩૩, શ્રી મુકેશજી રાયલ મો. ૯૧૭૯૬ ૨૩૩૦૯નો સંપર્ક કરી શકાશે. નવકાર મંત્ર આરાધના હેતુ શ્રી શિખરજી બોહરા મો. ૯૯૯૩૧૨૪૭૫૯, શ્રી હર્ષજી કટારીયા મો. ૮૮૨૭૮ ૩૭૫૫૦, શ્રી હિમાંશુજી પટવા મો. ૮૯૬૨૬ ૮૯૫૪૪ શ્રી સંજયજી નાંદેચા મો. ૯૧૭૯૧ ૭૧૦૦૧નો સંપર્ક કરી શકાશે.

દેશભરના સમસ્ત ગુરુભક્તોને નમ્ર વિનંતી સાથે જણાવાયું હતું કે, ચાતુર્માસમાં પિપલોદાનગરે પધારતા પહેલા સમિતિને સૂચના આપવી જેથી સંપૂર્ણ વ્યવસ્થા કરી શકાય.

પિપલોદા નગરે પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ મહામંગલકારી શ્રી ઉપધાન તપની આરાધનાનું આયોજન

પ્રથમ પ્રવેશ : ૨૦૭૫ના ભાદરવા સુદ ૯ ને શનિવાર તા. ૭-૯-૨૦૧૯, દ્વિતીય પ્રવેશ : ૨૦૭૫ના ભાદરવા સુદ ૧૧ ને સોમવાર તા. ૯-૯-૨૦૧૯, રથયાત્રા વરઘોડો : ૨૦૭૫ના આસો વદ - ૯ ને મંગળવાર તા. ૨૨-૧૦-૨૦૧૯, મોક્ષમાળા : ૨૦૭૫ના આસો વદ ૧૦ ને બુધવાર તા. ૨૩-૧૦-૨૦૧૯.

ધાનેરા નગરે...

ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક પરમપૂજ્ય આચાર્ય

શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારનો

ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ પ્રવેશ

પરમ પૂજ્ય યોગિરાજ સંયમવય સ્થવીર શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ભાંડવપુર, તીર્થોદ્ધારક, તેજસ્વી વક્તા પરમ પૂજ્ય આચાર્યશ્રીમદ્ વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારે શ્રી સૌધર્મ બૃહતતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ ધાનેરાના તત્વાધાનમાં સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૨ને શનિવાર તા. ૧૩-૭-૨૦૧૯ના મંગલમય દિવસે ધાનેરાનગરે ઐતિહાસિક યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

પૂજ્ય આચાર્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ પ્રવેશ નિમિત્તે ભવ્યાતિભવ્ય શોભાયાત્રાનું આયોજન કરાયું હતું. પૂજ્ય આચાર્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ પ્રવેશ નિમિત્તે ધાનેરાનગરના પ્રાસંગિક વિસ્તારોને અદ્‌ભુત રીતે શણગારવામાં આવ્યા હતા. ધજા-પતાકા, તોરણો તેમજ કમાનો અને વિવિધ સ્થળે વિશાળ દરવાજા ઉભા કરાયા હતા. ધાનેરાનગરને ઈન્દ્રપુરી જેવો ઓપ અપાયો હતો. આ શોભાયાત્રામાં ઢોલ-નગારા, બેન્ડ, હાથી, ઘોડા, બગીઓ, વિવિધ પ્રકારની નૃત્ય મંડળીઓ ઠેર ઠેર ગહુલીઓ સાફામાં સજ્જ ભક્તો અને રંગબેરંગી સાડીઓણાં સજ્જ સન્નારીઓ વિગેરે આકર્ષણનું કેન્દ્ર બન્યા હતા.

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પ્રસંગને દીપાવવા અન્ય રાજ્યોમાંથી સંઘના અગ્રણીઓ અને ભક્તો મોટી સંખ્યામાં ઉમટી પડ્યા હતા. ઉમટી પડેલ શ્રદ્ધાવંત ભક્તોએ જયજયકારના નારાથી શોભાયાત્રાને ગજવી દીધી હતી. આ ચાતુર્માસ પ્રવેશથી ધાનેરાવાસીઓ સહિત શ્રદ્ધાળુ ભક્ત સમુદાયમાં અનોખો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો. પૂજ્યશ્રી સપરિવારના કળશધારી બાલિકાઓ અને મહિલાઓએ ભવ્ય સામૈયું કરી અક્ષતથી વધામણા કર્યા હતા. પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશને દીપાવવા પધારેલા શ્રદ્ધાવાન ભક્તો સાથે શોભાયાત્રા નાચ-ગાન અને આનંદની છોળો ઉડાડી વાજતે-ગાજતે ધાનેરાનગરના ત્રિસ્તુતિક

ઉપાશ્રયમાં પ્રવેશ કર્યો હતો. જ્યાં શોભાયાત્રા ધર્મસભારૂપમાં પરિવર્તિત થઈ હતી. ધર્મસભામાં પૂજ્યશ્રીએ મંગળાચરણ સંભળાવ્યું હતું અને દિપ પ્રાગટ્ય બાદ કાર્યક્રમની શરુઆત કરાઈ હતી. સમાજના વક્તાઓએ ગુરુગુણ ગાતા વિચારો પ્રગટ કર્યા હતા અને પૂજ્યશ્રીએ પ્રાસંગિક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું અને ચાર માસ દરમ્યાન સહુને ધર્મ આરાધનામાં જોડાવા પ્રેરણા કરી હતી. આ રીતે પૂજ્યશ્રીનો ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ પ્રવેશ દીપી ઉઠ્યો હતો.

તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય ભટ્ટારક પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરુદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના છઠ્ઠા વારસ..

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીશ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનો ઠેર ઠેર સામૈયા અને શોભાયાત્રા સાથે ભવ્યાતિભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ

શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદનો ચાતુર્માસ પ્રવેશ

જોધપુર (રાજ.) : વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રીવીરરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી વિનિતરત્નવિજયજી મ.સા., આદ્રિઠાણા - ૨ એ સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૯ ને બુધવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૯ના રોજ તારાજૈન ભુવન, અમરનગર જોધપુર ખાતે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

પાલિતાણા (ગુજ.) : મુનિરાજશ્રી અપૂર્વરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી વિનયરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી અજિતસેન વિજયજી મ.સા.એ યતિન્દ્રભુવન પાલિતાણા ખાતે વાજતે-ગાજતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

પાટણ (ગુજ.) : મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા., આદિઠાણા - ૬ એ સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૩ ને રવિવાર તા. ૧૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર, પંચાસરા ઢેરાસર પાછળ પાટણ ખાતે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

બીજાપુર (કર્ણાટક) : મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૩ એ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર બિજાપુર ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

અમદાવાદ (મીઠાખળી) : મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા - ૬ તથા સાધ્વીજી શ્રી રંજનમાલાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી રત્નયશાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાએ રતનપોળ હાથીખાનાથી યતિન્દ્રભવન મીઠાખળી ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૦ને ગુરુવાર તા. ૧૧-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતો આરાધનાભવન મીઠાખળી અને પૂજ્ય સાધુ ભગવંતો યતિન્દ્રભુવન મીઠાખળી ખાતે સ્વાધ્યાયમાં લીન બિરાજમાન છે. જ્યારે સાધ્વીજી શ્રી રત્નયશાશ્રીજી મ.સા. તુલસી વિહાર ખાનપુર ખાતેના ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન છે.

અમદાવાદ (સાબરમતી) : માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૪ સાબરમતી ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

અમદાવાદ (પાલડી) : વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૮ તેમજ સાધ્વીજી શ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી શ્રી સિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૧૦એ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધનાભવન પાલડી, અમદાવાદ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો. સાધ્વીજીશ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા ૬ અષાઢી ફ્લેટ ખાતે સ્વાધ્યાય નિમિત્તે

બિરાજમાન છે. જ્યારે સાધ્વીજી શ્રી સિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા., આદિઠાણા ૧૦ વૈશાલી ફ્લેટ પાલડી, અમદાવાદ ખાતે બિરાજમાન છે.

અમદાવાદ (નવા વાડજ) : માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - ૪ એ થીરપુરનગર સોસાયટી, નવા વાડજ, અમદાવાદ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૯ ને બુધવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

ધાનેરા (ગુજ.) : સાધ્વીશ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાએ પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતના સાનિધ્યમાં સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૨ ને શનિવાર તા. ૧૩-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

શંખેશ્વર તીર્થ (ગુજ.) : માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલત્તાશ્રીજી મ.સા.એ ગુરુરાજ નવકારતીર્થ શંખેશ્વર તીર્થ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

અમદાવાદ (પાછીયાની પોળ) : સાધ્વીજી શ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - ૨એ રીલીફ રોડ, પાછીયાની પોળ ખાતેના ત્રિસ્તુતિક ઉપાશ્રય અમદાવાદ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૦ ને ગુરુવાર તા. ૧૧-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

થરાદ (ગુજ.) : સાધ્વીજી શ્રી દિવ્યદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા ૪ એ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર થરાદ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

અમદાવાદ (મોટેરા) : સાધ્વીજીશ્રી અનુપમદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા ૧૧ એ શ્રી રાજેન્દ્રનગર (અશોકનગર) મોટેરા અમદાવાદ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૧ ને શુક્રવાર તા. ૧૨-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો. ઉલ્લેખનીય છે કે સાધ્વીજી અવિચલદષ્ટા શ્રીજી મ.સા. તથા સાધ્વીજીશ્રી અનુપમદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી શ્રી ચૈત્યપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૬ તુલસી વિહાર,

ખાનપુર અમદાવાદ ખાતે ધર્મપ્રભાવનાના કાર્યક્રમો સાથે ધર્મ આરાધના સંપન્ન કરાવી રહ્યા છે.

ઉંઝા (ગુજ.) : માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી શ્રી કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા., આદિઠાણા - ૩ એ ત્રિસ્તુતિક ઉપાશ્રય ઉંઝા ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૧ ને શુક્રવાર તા. ૧૨-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

મુંબઈ (ખેતવાડી) : સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા., આદિઠાણા એ. શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર, ખેતવાડી મુંબઈ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

ધાર (મ.પ્ર.) : સાધ્વીજી શ્રી શશીકલાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - ૭ એ જવાહર માર્ગ ધાર ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૪ ને શનિવાર તા. ૬-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

અમદાવાદ (અમરાઇવાડી) : સાધ્વીજીશ્રી ચિરાગકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૨ એ અમરાઇવાડી અમદાવાદ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

ડીસા (ગુજ.) : સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી શ્રી સવેંગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - ૧૧ એ નેમિનાથનગર સ્થિત શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર ડીસા ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૫ ને રવિવાર તા. ૭-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો. સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશ નિમિત્તે મહેમાનો માટે સાધર્મિક ભક્તિનું આયોજન કરાયું હતું. જેનો લાભ ભોરડુનિવાસી ડીસા સ્થિત વેદલીયા મફતલાલ ભાણજીભાઈ પરિવારે લીધો હતો.

જાવરા (મ.પ્ર.) : સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાએ પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીના સાનિધ્યમાં જાવરા ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૯ ને બુધવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

જોધપુર (રાજ.) : સાધ્વીજી શ્રી ભુવન પ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાએ શ્રી રાજેન્દ્રભવન જોધપુર ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૫ ને રવિવાર તા. ૭-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

પાટણ (ગુજ.) : સાધ્વીજી શ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - ૪ તથા સાધ્વીજી શ્રી રૂચિદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા -૨ એ પાટણ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૩ ને રવિવાર તા. ૧૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ધર્મઅભ્યાસ હેતુએ ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

સુરત (ગુજ.) : સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજી શ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. સુશિષ્યાઓએ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત (થરાદવાળા)ના તત્વાધાનમાં સુરતના વિવિધ વિસ્તારના ત્રિસ્તુતિક સંઘના ઉપાશ્રયોમાં સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૫ ને રવિવાર તા. ૭-૭-૨૦૧૯ના રોજ ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો. સાધ્વીજીશ્રી યોગનિધિશ્રીજી મ.સા., આદિ ઠાણા અડાજણ, સાધ્વીજીશ્રી વિરાગનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - વેડદરવાજા, સાધ્વીજીશ્રી પાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - ઉમરા, સાધ્વીજીશ્રી અધ્યાત્મકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - પાલ ખાતે ચાતુર્માસ આરાધના કરાવશે.

આલોટ (મ.પ્ર.) : માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા તપસ્વીરત્ના સાધ્વીજીશ્રી વિધ્વદ્ગુણાશ્રીજી મ.સા., તપસ્વીરત્ના સાધ્વીજીશ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાએ શ્રી નાગેશ્વર તીર્થ સમીપ આલોટ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૨ ને ગુરુવાર તા. ૪-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

સિયાણા (રાજ.) : સાધ્વીજીશ્રી દર્શનકલા શ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી સુમનકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાએ રાજસ્થાનના સિયાણા ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૪ ને શનિવાર તા. ૬-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

નાગદા (મ.પ્ર.) : પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી ભુવનપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૨ એ મ.પ્ર.ના નાગદા જં. ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૬ ને સોમવાર તા. ૮-૭-૨૦૧૯ના રોજ

વાજતે-ગાજતે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

મુંબઈ (ભાયંદર વેસ્ટ) : સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી રિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા., આદિઠાણા-૫ એ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર, ૬૦ ફૂટ રોડ ભાયંદર (વેસ્ટ) ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૨ ને શનિવાર તા. ૧૩-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

આહોર (રાજ.) : સાધ્વીજી શ્રી શાસનલતાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાએ રાજસ્થાનના આહોરનગરે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ - ૧૧ ને શુક્રવાર તા. ૧૨-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

અંજડ (મ.પ્ર.) : સાધ્વીજીશ્રી પુણ્યદર્શનશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૨ એ મધ્યપ્રદેશના બડવાની જિલ્લાના અંજડનગરે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ - ૯ ને બુધવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

પિપલોદા (મ.પ્ર.) : સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી યશપ્રિયાશ્રીજી, સાધ્વીજીશ્રી યુગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાએ સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૧ ને શુક્રવાર તા. ૧૩-૭-૨૦૧૯ના રોજ પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીના સાંનિધ્યમાં પિપલોદા ખાતે વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

બેંગ્લોર (કર્ણાટક) : સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી કૈલાશશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી વિપુલદર્શિતાશ્રીજી મ.સા., આદિ ઠાણાએ કીલ્લારી રોડ, શ્રી રાજેન્દ્રભવન, બેંગ્લોર ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૧૨ ને શનિવાર તા. ૧૩-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

દાઘાલ (રાજ.) : સાધ્વીજીશ્રી પ્રિતિદર્શનશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા ૪ એ રાજસ્થાનના દાઘાલ ખાતે સંવત ૨૦૭૫ના અષાઢ સુદ ૯ ને બુધવાર તા. ૧૦-૭-૨૦૧૯ના રોજ વાજતે-ગાજતે ભવ્ય સામૈયા સાથે ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

પૂજ્ય રાષ્ટ્ર સંતશ્રી સમુદાયના શ્રમણ ભગવંતોના ચાતુર્માસની યાદી

પિપલોદા (જિ. રતલામ – મ.પ્ર.) :

* **ગચ્છાધિપતિ આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.**
* મુનિરાજ શ્રી સિદ્ધરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજ શ્રી વિધ્વદ્‌રત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી પ્રશમસેનવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી તારકરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી નિર્ભયરત્નવિજયજી મ.સા.

સરનામું : શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ રાજેન્દ્ર યતિન્દ્ર જયંતસેન વાટિકા, પીપલોદા, જિલ્લો - રતલામ-૪૫૭૩૩૧, મધ્યપ્રદેશ.

ધાનેરા (ગુજરાત)

* **આચાર્યદેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.**
* મુનિરાજશ્રી અશોકવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી આનંદવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી જિનરત્નવિજયજી મ.સા.

સરનામું : ધાનેરા, જિલ્લો - બનાસકાંઠા, ઉત્તર ગુજરાત.

અમરનગર (જોધપુર – રાજસ્થાન)

* મુનિરાજશ્રી વિરરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી વિનીતરત્નવિજયજી મ.સા.

સરનામું : શ્રી સંભવનાથ મંદિર પાસે, અમરનગર, પાલ રોડ, જોધપુર.

પાલિતાણા (ગુજરાત)

* મુનિરાજશ્રી અપૂર્વરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી વિનયરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી અજિતસેનવિજયજી મ.સા.

સરનામું : શ્રી યતિન્દ્રભવન જૈન ધર્મશાળા, તળેટી રોડ, પાલિતાણા, જિ. ભાવનગર, ગુજરાત.

પાટણ : (ગુજરાત)

* મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી પ્રત્યક્ષરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી પવિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી નિક્ષેપરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી નૈમિશરત્નવિજયજી મ.સા.

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, પંચાસરા મંદિર પાછળ, પાટણ, ગુજરાત.

બીજાપુર (કર્ણાટક)

* મુનિરાજશ્રી વૈભરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી શંખેશરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી ગોયમરત્નવિજયજી મ.સા.

સરનામું : શ્રી રાજરાજેન્દ્ર જૈન આરાધના ભવન, રામમંદિર રોડ, બીજાપુર, કર્ણાટક.

સરદના શહેર (ઉત્તરપ્રદેશ)

* મુનિરાજશ્રી સંયમરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી ભુવનરત્નવિજયજી મ.સા.

સરનામું : શ્રી સુમતિનાથ જૈન શ્વેતાંબર મંદિર, ચોક બજાર, સરદના-૨૫૦૩૪૨, જિ. મેરઠ, ઉત્તરપ્રદેશ.

અમદાવાદ (ગુજરાત)

* મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી નિર્દોષરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી નિર્વાણરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી નિધાનરત્નવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી જંબુસેનવિજયજી મ.સા.
* મુનિરાજશ્રી સુધર્મસેનવિજયજી મ.સા.

સરનામું : શ્રી યતિન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન, કોટક મહિન્દ્ર બેંક પાછળ, પેન્ટાલૂન શૉ રૂમ સામે, મીઠાખળી, અમદાવાદ.

सद्गुरु समर्पणम्

मारा गुरु महान छे...

(गतांकथी चालुं...)

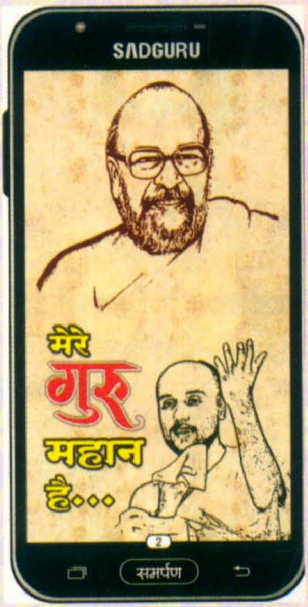

૬૮. ગુરુ પ્રભુનો પડછાયો છે, શિષ્ય ગુરુનો પડછાયો છે.

૬૯. ગુરુનો મહિમા વધતો હોય એવા કાર્યમાં પૂર્ણ સહયોગી બનવું જોઇએ.

૭૦. ગુરુએ જે આપ્યું છે તે આપણા આચાર, વિચાર, વ્યવહારમાં જોવું જોઇએ.

૭૧. ગુરુને સમર્પિત થયા વિના મોક્ષ પ્રાપ્તિ અસંભવ છે.

૭૨. ગુરુને સમજવા માટે દીમાગ નહીં દિલ જોઇએ.

૭૩. ગુરુના પગલે ચાલવાવાળાને ક્યારેય પાછળ નથી જોવું પડતું.

૭૪. ગુરુપાસેથી ઘણું મેળવ્યું છે, પરંતુ ગુરુથી વધારે કંઇ નથી મેળવ્યું.

૭૫. ગુરુ શિષ્યનું ભવિષ્ય ઉજજવળ બનાવે છે કોઇ શર્ત વિના શિષ્યએ પૂર્ણ સમર્પિત રહેવું અનિવાર્ય છે.

૭૬. ગુરુએ જ અમને યોગ્ય બનાવ્યા છે અમને તો કોણ પૂછતું હતું.

૭૭. ગુરુએક એવી ચાવી છે જે દરેક સમસ્યાના તાળાને ખોલી દે છે.

૭૮. ગુરુગુણોથી સમૃદ્ધ છે. એટલા માટે ગુરુસેવા કરવાવાળા ગુણવાન બને છે.

૭૯. ગુરુની મહિમા વધારવા વાળાની મહિમા સ્વયં વધી જાય છે.

૮૦. ગુરુની સેવા કરવાવાળાની સેવા પણ પુણ્યથી પ્રાપ્ત થાય છે.

૮૧. ગુરુના બંધનમાં રહેવાવાળા કર્મોના બંધનમાંથી મુક્ત થઇ જાય છે.

૮૨. ગુરુજેને મળે છે તેના જીવનમાં ખુશીઓના ફૂલ ખીલી ઉઠે છે.

ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના અંતરાત્મામાં વ્યાપેલો વાસ્તવિક નિચોડ

વ્યવહારમાં ઉદારતા તથા અનુકંપા હોવી જોઈએ

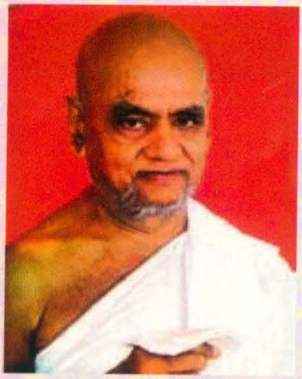

જૈન ધર્માવલંબીઓ ઉપર ઘણા તીખા વ્યંગ કરાય છે કે તેઓ એકેન્દ્રિય જીવોને (નાના) તો જીવનદાન આપે છે, પરંતુ માણસ જેવા પંચેન્દ્રિય જીવો (મોટા) પ્રત્યે એમનામાં ઉદારભાવ નથી. જૈન સમાજનું વ્યવસાયિક કામ છે એટલે દરેક જ્ઞાતિના વ્યક્તિઓ સંપર્કમાં આવે છે. જેમાં દરેક વ્યવસાય સાથે-સાથે વ્યાજનો વેપાર પણ કરાય છે. પોતાના વ્યવસાયમાં જે ઉદારતા અને સહૃદયતાનું પ્રદર્શન કરવું જોઈએ તેવું દેખાતું નથી. જૈન વ્યવસાયી શોષણ માટે કુખ્યાત થવા લાગ્યો છે. વ્યાજ, તોલ, મોલ તથા હિસાબમાં એમને પ્રમાણિક માનવામાં નથી આવતા તેના કારણે દેશની અધિસંખ્ય આબાદીમાં એમના પ્રત્યે દુર્ભાવનો ભાવ પણ વ્યાપ્ત છે. 'વાણીયા' શબ્દથી નફરત જાગવા માંડી છે. 'વાણીયા' જાતિમાં અધિકાંશ જૈન આવે છે. પોતાના વ્યવસાયમાં ક્યારેક વ્યાજના મારથી એવા જકડી લે છે કે પેઢીઓ સુધી મૂળરકમ બનીને જ રહે છે. એટલું જ નહીં વર્ષે ચૂકવ્યા પછી પણ મૂળરકમ વધતી રહે છે. આ અભ્યાસે વ્યવસાયીઓ માટે શોષક વર્ગનો શબ્દ પ્રચલિત કરી દીધો છે. ઉદારતા તથા સહૃદયતા માત્ર ધાર્મિક કાર્યોમાં નહીં જીવનના દરેક ક્ષેત્રમાં હોવી જોઈએ. ધાર્મિક સિદ્ધાંતોનું વ્યવહારિક આચરણ ન હોવાને કારણે આ સ્થિતિ છે. જૈનોએ માનવીય મૂલ્યોની પ્રાપ્તિને અનુરૂપ પોતાનો વ્યવહાર બનાવવો અપેક્ષિત છે. આઠમ, ચૌદશ તથા પર્વ તિથિઓના દિવસે લીલી શાકભાજીનો ત્યાગ કરો છો તે શ્રેષ્ઠ છે, પણ માણસ પ્રત્યે ઉદારતા, અનુકંપા, સહૃદયતાનો વ્યવહાર રાખો તો તે સર્વશ્રેષ્ઠ છે.

હે માણસ ! સવારે ઉઠીને એટલું ચિંતન કર, કે હું કોણ છું ? શું છું ? ક્યાંથી આવ્યો છું અને મારે ક્યાં જવાનું છે ?

कुमकुम सने पगलिये

शानदार चातुर्मास प्रवेश की धूम

पिपलौदा

पिपलौदा (जावरा)। गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा. का मुनिमंडल तथा साध्वी समुदाय सहित चातुर्मास व्यतीत करने हेतु पिपलौदा में मंगल प्रवेश शानदार रूप से ऐतिहासिक हुआ।

देश-विदेश से हजारों गुरुभक्त इस अवसर पर यहाँ पहुँचे। जापान से भक्तों के एक दल का आगमन हुआ था। पूरा नगर नित्यसेनमय हो गया, उसे सजाया गया था तथा सभी धर्मों व जातियों के नगरवासी अगवानी में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर विधायक श्री चेतन्य काश्यप, पूर्व मंत्री व विधायक श्री पारस जैन, अभा त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू आदि श्रीसंघ तथा परिषद के पदाधिकारी एवं विभिन्न मंदिर ट्रस्टों के अध्यक्ष आदि भारी संख्या में उत्सव में सम्मिलित हुए। वाटिका ट्रस्ट प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने बताया कि श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम से प्रारंभ चल समारोह नाका नं. 1 भूला चौराहा नवीन बस स्टेण्ड, नाका नं. 2 झंडा चौक, जवाहर चौक, पुराना बस स्टेण्ड होते हुए पुनः वाटिका स्थित प्रवचन पांडाल में पहुंचा व धर्म सभा में परिवर्तित हुआ। नगर में मंगल प्रवेश को लेकर विद्युत सज्जा के साथ आकर्षक सजावट भी की गई थी। जैन-अजैन सभी ने मिलकर उत्साह से चल समारोह में भाग लिया। चल समारोह में सर्वप्रथम रंगोली गाड़ी, गगन साउंड, ऊंट, धर्म ध्वज लिए घोड़े, आदिवासी नृत्य, हाथी, ऊंट रथ व गाड़ी, नासिक ढ़ोल, 7 बग्गी, शहनाई, सरस्वती बैंड, कलश लिए महिलाएँ, ढोल, बीजापुर राजस्थान का बेंड, गवली रथ आदि झांकियां आकर्षण का केन्द्र रही। गच्छाधिपति के मंगल प्रवेश में महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, बैंगलोर, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश व जापान से विदेशी गुरु भक्त हजारों की संख्या में शामिल हुए। चल समारोह में बहु परिषद ने साड़ी नृत्य, बालिका व महिला परिषद ने डांडिया रास किया। वहीं अलीराजपुर के कलाकारों द्वारा आदिवासी नृत्य कर मनमोहक

प्रस्तुतियां दी गईं। पिपलोदा नगर के समस्त व्यापारियों ने अपना व्यापार, व्यवसाय बंद रखकर चल समारोह की शोभा बढ़ाई। धर्मसभा में स्वागत भाषण चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने दिया। त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता विधायक श्री चेतन्यजी काश्यप ने सामाजिक गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए आह्वान किया कि सभी गुरुभक्त एक होकर त्रिस्तुतिक समाज तथा दादा गुरुदेव व पुण्य सम्राट द्वारा प्रतिपादित मूल्यों को प्रबल बनाएँ जीवन का उत्थान करें।

गच्छाधिपति की प्रथम गवली व नवकारसी व सुबह शाम का स्वामी-वात्सल्य का लाभ चातुर्मास समिति के अध्यक्ष राकेश कुमार, मुकेश कुमार, रतनलाल जैन परिवार इंदौर, प्रथम कलश का लाभ चेतन, विवेक, प्रकाशचन्द्र परिवार सांवेर ने लिया। साथ ही गच्छाधिपति को काम्बली ओढ़ाने का लाभ मिलापचंद्रजी परिवार (बैंगलोर) व गुरुपूजन का लाभ भेरूलाल सेठ (जालोर) ने लिया। आयोजन में श्रीसंघ के प्रदेश अध्यक्ष सुरेश तांतेड़, परिषद राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री व जावरा नपा अध्यक्ष अनिल दसेड़ा, परिषद राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीमाल, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा, नवयुवक परिषद प्रदेश अध्यक्ष रमेश धारीवाल, प्रदेश उपाध्यक्ष मोहित तांतेड़, प्रदेश महामंत्री सुधीर लोढ़ा, नपं. अध्यक्ष श्याम बिहारी पटेल, पूर्व नपं. अध्यक्ष अतुल गौड, भाजपा मंडल अध्यक्ष बद्रीलाल शर्मा आदि तथा परिषद परिवार के सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी व सदस्य, नगर व क्षेत्र के ग्रामीणजन भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलाल पुराणिक, कुक्षी ने किया। आभार वाटिका अध्यक्ष शैलेन्द्र कटारिया ने माना। समारोह में गच्छाधिपति जैनाचार्यश्री ने चार छःरिपालक श्री संघ के मुहूर्त दिये तथा भरतपुर (राज.) में गुरुश्री जयंतसेन समाधि मंदिर के निर्माण की आज्ञा दी। वाटिका निर्माण का प्रतिवेदन श्री राजकुमार जैन ने पढ़ा। आचार्य श्री ने घोषणा की कि पिपलौदा चातुर्मास में 45 दिवसीय उपधान तप आयोजित होगा। मुनिमंडल में आचार्यश्री के साथ मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म., श्री विद्वदरत्न विजयजी म., श्री प्रसमसेनविजयजी म., श्री तारकरत्नविजयजी म., श्री निर्भयरत्न विजयजी म. तथा साध्वी श्री भाग्यकला श्रीजी म. आदि साध्वीगण हैं।

* **पिपलौदा।** जिसके जीवन में गुरु नहीं है उसका जीवन अधूरा सा है। गुरु के इशारों को समझने वाला व्यक्ति मोक्ष अधिकारी होता है और वो गुरु ही है जो हमें परमात्मारूपी समंदर में पहुँचा देता है इसलिए गुरु के प्रति समर्पित भाव रखकर गुरु का आदर करना चाहिए। उक्त बात पावनिय चातुर्मास महोत्सव के दूसरे

दिन गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने गुरु की महिमा का उल्लेख करते हुए कही।

सिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि अनादि काल से जन्म मरण का चक्र चल रहा है इसका अन्त नहीं होने का कारण गुरु की आज्ञापालन में कमी होने के कारण सब भटक रहे हैं। गुरु बिना जीवन कभी शुरू नहीं हो सकता। श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि गुरु तत्व की जितनी व्याख्या की जाए वह कम है गुरु गति, प्रगति, उन्नति और मोक्ष मार्ग तक जाने का एक सुगम साधन है और गुरु को समझने के लिए दिल की आवश्यकता होती है दिमाग की नहीं। मंगलाचरण के पश्चात मुनि तारक रत्नविजयजी म.सा. द्वारा आत्म भावना करवाई गई। साथ ही प्रशमसेन विजयजी म.सा., निर्भयरत्नविजयजी म.सा. व साध्वी श्री भाग्यकलाश्रीजी, यश प्रियाश्रीजी, युगप्रियाश्रीजी ने भी गुरु की महिमा का बखान किया। पिपलौदा में गुरु पूर्णिमा के दौरान देश के विभिन्न नगरों के श्री संघों के प्रतिनिधियों ने गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व मुनि मण्डल का आशीर्शाद लेकर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ व दादा गुरुदेव के दर्शन लाभ लिए। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ श्रीसंघ नामली द्वारा लिया गया व प्रभावना का लाभ अभिषेक विनोद चन्द्रावत पिपलौदा, कांतिलाल वागरेचा, खवासा, उपेन्द्र कोठारी रतलाम, गजेन्द्र हिंगड मन्दसौर, श्रीसंघ टांडा, धनराजमल बोहरा पारा द्वारा लिया गया। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पिपलौदा नगरवासियों के साथ ही उज्जैन, रतलाम, नीमच, बड़नगर, जावरा, खवासा, खट्टालि, मंदसौर, नागदा, टांडा, नामली, सरसी, मेघनगर, सैलाना, ढोढर, बदनावर, पारा, रोजाना, झाबुआ, निम्बाहेड़ा, महिदपुर रोड़, राजगढ़ आदि स्थानों के श्रीसंघ पहुँचे। संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने किया।

* **पिपलौदा** । पावनिय चातुर्मास महोत्सव के चौथे दिन पुण्य सम्राट श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर सैंकड़ों गुरु भक्तों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि सभी जीवों के प्रति मैत्री और करुणा के भाव स्नेह संघ के साथ रहेंगे तो इसमें सब की भलाई है। मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा. द्वारा आत्म-भावना प्रार्थना करवाई गई । साथ ही मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि संसार में भटकने से अटकने हेतु हमें धार्मिक क्रिया और गुरु के बताए मार्ग पर आगे बढ़ना होगा संसार में जिस प्रकार सरवाया करते हैं वैसे ही पाप और पुण्य का सरवाया करना चाहिए। खाना-

पीना और मौज करना ही आत्मा का धर्म नहीं है। संसार की असारता पर पुण्य सम्राट जयंतसेनसूरीश्वरजी द्वारा रचित उपदेशक सज्झायों का उदाहरण देकर विशालजन समुदाय को उपदेश दिया।

मुनिराजश्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि जन्म-मरण का चक्र चल रहा है। इसे सफल करने के लिए धार्मिक पारमार्थिक कार्य करते रहना चाहिए। भगवान महावीर के समय से श्रमण-श्रमणियों के आचार-विचार नहीं बदले किन्तु मानव मात्र वर्तमान व फैशन में अत्यधिक मोबाइल, नेट, फेसबुक आदि में व्यस्त होने के कारण परिवार में विघटन का कार्य कर रहे हैं। चार गति में मानव गति ही ऐसी है जिसे तप धर्म आराधना कर मानव जीवन को सफल कर सकते हैं। मानव जीवन जंक्शन जैसा है जहाँ से नरक तिर्यंच देव और मानव गति में जाया जा सकता है।

मुनिराज श्री प्रशम से न विजयजी म.सा., मुनिराज श्री निर्भय रत्नविजयजी म.सा., साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 उपस्थित थे।

स्व. श्रीमती जानिबाई रतनलाल कोठारी की स्मृति में अंतरायकर्म पूजन का आयोजन हुआ। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ सज्जनलाल, उछ्छवलाल कटारिया परिवार राणापुर द्वारा लिया गया। समग्र जैन चातुर्मास सूची के प्रकाशक बाबूलाल जैन उज्जवल बम्बई का श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया। संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने किया। उक्त जानकारी श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने दी। ■■

विधायक डॉ. पाण्डेय का किया बहुमान

पिपलौदा । क्षेत्रीय विधायक डॉ. राजेन्द्रजी पाण्डेय ने गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व मुनिराजश्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. का आशीर्वाद लिया। साथ ही गुरु मन्दिर में दादा गुरुदेव के दर्शन लाभ लिए।

बहुमान लाभार्थी सुरेशजी बोहरा द्वारा विधायक डॉ. पाण्डेय का शाल-श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने वाटिका पेढ़ी पर श्री पाण्डेय को आगामी आयोजन संबंधी जानकारी दी। इस अवसर पर चातुर्मास समिति उपाध्यक्ष नरेन्द्र जैन, भाजपा नगर अध्यक्ष मुकेश मोगरा, नारायण धनगर, महेश बोहरा, सुरेश बाबेल, राजेश महावीर, संजय नांदेचा, जितेश नांदेचा, प्रफुल्ल जैन, मनीष जैन, विपिन नांदेचा, विनय जैन, निमिष छाजेड़ आदि उपस्थित थे। ■■

चिंतन करने से आगे का मार्ग प्रशस्त होता है–गच्छाधिपति

पिपलौदा । पावनिय चातुर्मास महोत्सव के दौरान श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर रविवार को देशभर के अनेक श्रीसंघों ने गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व मुनि मंडल का आशीर्वाद लिया।

गच्छाधिपति ने कहा कि चिंता और चिता में एक बिन्दु का फर्क होता है चिंता का चिंतन करना चाहिए क्योंकि चिंतन करने से हमारा आगे का मार्ग प्रशस्त होता है व हमारी सारी चिंता दूर होती है इसलिए जीवन में हमेशा चिंतन मनन कर आगे बढ़ना चाहिए साथ ही एक सेठ-सेठानी का कथानक सुनाते हुए बताया कि जागते हुए रहने का अर्थ ये नहीं की घर का सब माल लुट जाए और उठें नहीं इसी प्रकार मानव के पीछे क्रोध, माया व लोभ के डाकू लगे हुए हैं उनका अंत केवल धर्म आराधना से ही सम्भव है जो हमें नित प्रतिदिन करना चाहिए। मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा. ने आत्म भावना करवाई।

मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि भव भ्रमणा के निवारण हेतु प्रमाद का त्याग कर धर्म आराधना के मार्ग पर प्रशस्त होना चाहिए लेकिन मानव कहता कुछ है और करता कुछ है आत्मा को धारण करने से मानव जन्म सार्थक हो जाता है।

मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि जिनशासन जयवंत है उसी प्रकार परमात्मा व प्रभु की वाणी भी जयवंत है मानव सुखी होने हेतु मृग तृष्णा की भांति संसार में दौड़ा चला जा रहा है किन्तु उसे धीरज नहीं होता है मानव को धीरज प्राप्त करने हेतु ज्ञान और श्रद्धा की ज्योति हृदय में प्रकट करना

होगी। मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा., मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा. आदि उपस्थित थे।

पुण्य सम्राट की प्रतिमा को प्रवचन मण्डप में विराजमान करने का लाभ श्री कांतिलाल राजकमल दुग्गड़ रतलाम परिवार व उत्तराध्ययन सूत्र ग्रंथ वोहराने का लाभ बाबूलाल ऋषभ कुमार धींग पिपलौदा व विक्रम चरित्र वोहराने का लाभ बाबूलालजी कोलन परिवार जावरा, दादा गुरुदेव व पुण्य सम्राट की आरती का लाभ राजेन्द्र कुमार पीतलिया परिवार व प्रभावना का लाभ कांतिलाल राजकमल दुग्गड़, विजय रतनलाल मेहता दलौदा, जयंतीलाल खाबिया, नरेन्द्र मेहता रतलाम, श्री संघ चित्तौड़गढ़ द्वारा लिया गया।

संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन व तरुण परिषद अध्यक्ष हर्ष कटारिया ने किया। उक्त जानकारी श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने दी। ■■

तप आराधना के साथ पुण्य सम्राट की 27 वीं मासिक पुण्यतिथि मनाई गई

खुशी नांदेचा के 9 उपवास का हुआ पारणा

पिपलौदा । पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की 27 वीं मासिक पुण्यतिथि पर पावनिय चातुर्मास महोत्सव के दौरान श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि व्यक्ति का जन्म अगर निश्चित है तो उसकी मृत्यु भी निश्चित है व्यक्ति के जन्म के समय मुट्ठी बंद होती है और जब वह संसार को छोड़ कर जाता है तो मुट्ठी खुली रहती है इसलिए जीवन में धर्म आराधना कर गुरु की वाणी का चिंतन करना चाहिए क्योंकि जीवन में भाग दौड़कर कमाया सारा धन व वैभव यहीं धरा रह जाता है व मनुष्य को खाली हाथ जाना पड़ता है।

मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि कस्तूरी मृग की नाभि में होता है फिर भी वह उसको प्राप्त करने के लिए दौड़ता रहता है किन्तु उसे कस्तूरी प्राप्त नहीं होती ठीक उसी प्रकार मानव भी मृग की भांति संसार में भटकता रहता है फिर भी उसे सुख शांति प्राप्त नहीं होती विनय गुण आने से मनुष्य को सुख संतोष और शांति प्राप्त होती है।

मुनिराज विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि जिस प्रकार आत्मा अजर-अमर है जिन शासन भी अमर है आत्मा का स्वभाव धूप जैसा है जो ऊपर जाता है और खुशबू फैलाता है। संत संस्कृति है संस्कार दाता है जो संसार में खुश्बू फैलाता है। मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा., श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा. आदि उपस्थित थे।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने बताया कि दादा गुरुदेव पुण्य सम्राट की आरती का लाभ ओमप्रकाश श्रीमाल परिवार जावरा व प्रभावना का लाभ गुरुभक्त परिवार बागरा हाल मुकाम चेन्नई, भक्ताम्बर की प्रभावना का लाभ शंकरलाल ताराचंद्र दंगवाड़ा परिवार बड़नगर, गवली का लाभ रवि कुमार सरदारमल बोहरा परिवार द्वारा लिया गया।

संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन व वाटिका उपाध्यक्ष शिखर बोहरा ने किया।

'प्रतिदिन चल रही तप आराधना' - अष्टसिद्धि महातप की आराधना में श्रावक - श्राविकाएं उत्साह से भाग ले रहे हैं साथ ही तप आराधना में खुशी संजय नांदेचा के 9 उपवास की तपस्या पूर्ण हुई जिनका पारणा श्री संघ द्वारा करवाया गया साथ ही संस्कृति श्रीमाल जावरा, राखी भंडारी पारा, बाबेल पिपलौदा, शानू अंकित बोहरा पिपलौदा की उपवास की तपस्या चल रही है। ■■

क्रोध, मान, माया से व्यक्ति जीवन में सफल नहीं होता-गच्छाधिपति

पिपलौदा । चातुर्मास महोत्सव के दौरान श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि मानव को अपनी वाणी को मधुरता के साथ प्रकट करना चाहिए क्रोध, मान, माया से व्यक्ति कभी सफल नहीं होता सफलता पाने के लिए जीवन में सहजता और सरलतापूर्वक प्रयास करना चाहिए किसी को नीचा दिखाकर जीवन में आगे नहीं बढ़ा जा सकता।

मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी ने आत्म भावना प्रार्थना करवाई। मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि कर्म सत्ता के आगे किसी का जोर नहीं चलता है व्यक्ति जैसा बोएगा वैसा फल पायेगा।

मानव अनुकूलता-प्रतिकूलता में जीना पसंद करता है संयोग मिला है तो वियोग भी निश्चित है मन को नियंत्रण में रखने से पाप प्रवृत्ति रुक जाती है जैसा कर्म करेंगे वैसा फल भी भुगतना पड़ेगा।

श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि कंकर और कांटों पर चलने वाले व्यक्ति की मंजिल उसको पास दिख रही है लेकिन अगर वो कांटों से घबरा गया तो मंजिल काफी दूर चली जायेगी। इसी प्रकार महापुरुषों ने अनेक कष्ट सहकर अपनी मंजिल को प्राप्त किया है जिस प्रकार सूर्य के बाद चन्द्रमा व चन्द्रमा के बाद सूर्य आता है ठीक उसी प्रकार सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता है। इसलिए जीवन में सद्कार्य करें व दया का भाव रखें।

श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा. , श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा. आदि उपस्थित थे। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने बताया कि दादा गुरुदेव व पुण्य सम्राट की आरती का

लाभ पारसमल जैन परिवार राकोदा व प्रभावना का लाभ वीरेन्द्र कुमार शांतिलाल सकलेचा नागदा व सुरेश कुमार चौधरी परिवार गुलाबपुरा राजस्थान द्वारा लिया गया। साथ ही किरण भण्डारी द्वारा स्तवन प्रस्तुत किया गया संचालन वाटिका उपाध्यक्ष शिखर बोहरा ने किया।

प्रतिदिन चल रही तप आराधना- दिनांक 21 जुलाई से प्रारम्भ 16 दिवसीय अष्टसिद्धि महातप की आराधना में मुनि श्री तारकरत्नविजयजी म.सा. के साथ ही समाज के श्रावक-श्राविकाएँ तप आराधना में उत्साह से भाग ले रहे हैं इस तप आराधना में एक दिन उपवास व एक दिन बियासना व तीन समय देव वंदन, सुबह-सायं प्रतिक्रमण, खमासणा, स्वास्तिक, प्रदक्षिणा, काउसग्ग के साथ ही अणिमा पद की बीस माला प्रतिदिन गिनी जा रही है साथ ही तप की कड़ी में खुशी संजय नांदेचा के 8 उपवास की तपस्या पूर्ण हुई।

■■

वर्तमान को सुधारो भविष्य अपने आप सुधर जाएगा-गच्छाधिपति

विहिप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने लिया आशीर्वाद

पिपलौदा । पावनिय चातुर्मास महोत्सव के छठे दिन अपने प्रवचन के दौरान गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर सैकड़ों गुरु भक्तों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमें किसी से भेद-भाव करने से अच्छा है कि हम सभी से स्नेह व भाईचारे का व्यवहार करें हम अपने वर्तमान को सुधारेंगे तो हमारा भविष्य अपने आप सुधर जाएगा। मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी म.सा. द्वारा आत्म भावना प्रार्थना करवाई गई।

साथ ही मुनिराजश्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि नवकार महामंत्र महाप्रभावक है जिसका स्मरण व ध्यान करने से आदि, व्याधि, उपाधि से छुटकारा मिल सकता है इसलिए हमें नित नियम से नवकार की आराधना करना चाहिए साथ ही हमें देव गुरु के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिए भेंट, दक्षिणा स्वरूप उन्हें कुछ भी अर्पण करना चाहिए जिससे मनवांछित फल की प्राप्ति हो सकती है।

मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि समय और मानवभव अमूल्य है अपने ही अच्छे कर्मों से मानव महामानव बन सकता है नहीं तो दानव तो बन ही जाता है हम भारतवासी भाग्यशाली हैं कि हमने भरतक्षेत्र व आर्य भूमि में जन्म लिया है जिसमें राम, महावीर जैसे विभिन्न धर्म ग्रंथ के धर्म गुरुओं ने समाज को जाग्रत करने हेतु प्रयास किया है साथ ही कमाया का संधि विच्छेद करते हुए उन्होंने बताया कि व्यक्ति को उसकी आय के अनुरूप धन मिलने पर भी उसे संतोष नहीं होता है जिसे कम+आया कहते हैं साथ ही मानव जन्म राजमार्ग जैसा होता है जहाँ से अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न गतियों में पहुँचा जा सकता है।

विहिप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने लिया आशीर्वाद– विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुकुमचंद साँवला ने गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. मुनि मंडल का आशीर्वाद लेकर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ व दादा गुरुदेव मन्दिर पर दर्शन लाभ लिए।

चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर द्वारा श्री साँवला का शाल श्रीफल द्वारा बहुमान किया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री साँवला ने कहा कि जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा व नदी किसी एक की नहीं होती ठीक उसी प्रकार संत भी किसी एक समाज के ना होकर सम्पूर्ण मानव समाज के होते हैं उन्होंने गाय के बारे में विभिन्न उदाहरण देते हुए बताया कि मानव जीवन व गाय के जीवन में अनेक समानताएँ होती हैं तभी गाय को माता कहा जाता है साथ ही सभी को गो रक्षा व जीवदया हेतु सभी को संकल्पित किया।

श्री संघ पिपलौदा व नगरवासियों ने गोरक्षा हेतु दान देने की घोषणा की। मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा., मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा. आदि उपस्थित थे। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ श्री राजमल सरदारमल धारीवाल परिवार जावरा द्वारा लिया गया। प्रभावना का लाभ महिला परिषद महिदपुर सिटी द्वारा लिया गया। संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने किया। उक्त जानकारी श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने दी। ■■

धानेरा

आचार्यश्री जयरत्नसूरिजी म.सा. का भव्य मंगल प्रवेश

धानेरा । परम पूज्य चर्चा-चक्रवर्ती आचार्यदेव श्रीमद् विजय धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की पाटगादी पुण्यवन्त धर्मधरा धानेरा नगरी में आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमणवृन्द एवं विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. आदि श्रमणिवृन्द का दिनांक 13 जुलाई 2019 को भव्य ऐतिहासिक चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ।

भव्य शोभायात्रा श्री पारस सोसायटी, धानेरा से प्रारम्भ हुई जिसमें सुसज्जित बग्घियाँ, दादा गुरुदेव का चित्र, श्री बृहद् अभिधान राजेन्द्र कोष एवं पुण्य सम्राट का चित्र लिए बैण्ड-बाजों की मधुर स्वरावलियों के साथ, ढोल आदि की थाप पर नृत्य करते हुए नवयुवक जयघोष गुँजाते हुए चल रहे थे। महिलाएँ मस्तक पर मंगल कलश लिए केसरिया परिवेश में गीत गुँजार करते चल रही थी। समाज के गणमान्य अतिथियों एवं हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में भव्य शोभायात्रा नगरपालिका, रेलवे स्टेशन, बस स्टेण्ड से मुख्य बाजार में परिभ्रमण करती हुई श्री शान्तिनाथ जिनालय पहुँची जहाँ दर्शन-वन्दन करने के पश्चात् गुरुमन्दिर में दर्शन-वन्दन करते हुए दाखा दरवाजा स्थित श्री अम्बाजी मन्दिर प्रांगण में पहुँच कर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

धर्मसभा का शुभारम्भ आचार्यदेवेशश्री ने मंगलाचरण करते हुए किया। आचार्य देवेशश्री ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि धानेरा नगर की पुण्यवन्त धरा पाटगादी भूमि है एवं इसके कण-कण में धर्म की सुवास फैली हुई है। इस चातुर्मास में तप-जप एवं धर्मक्रियाओं के माध्यम से धर्माराधना करते हुए इस मनुष्य जन्म को सफल बनाते हुए उत्कृष्ट जिनशासन प्रभावना के कार्य करते हुए समाज को एकसूत्र में पिरोने का कार्य करना है।

मंगल प्रवेश की वेला में पधारे अतिथियों एवं गुरुभक्तों ने शब्दों के द्वारा आचार्यदेवेशश्री एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द का आत्मीय अभिनन्दन करते हुए स्वागत किया। जिसमें श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई - अहमदाबाद, श्री

ओ.सी. जैन-बैंगलोर, श्री जयन्तीलालजी वकील सा.- थराद, मध्यप्रदेश त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष श्री सुरेशजी तातेड़, श्री प्रकाशजी कांठेड़-जावरा, परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्रीश्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, श्री सुनीलजी डैडी-बाग आदि ने आचार्य देवेशश्री के द्वारा किए जा रहे जिनशासन के कार्यों की अनुमोदना करते हुए चातुर्मास की सफलता के लिए मंगलकामना अभिव्यक्त की।

इस अवसर पर आचार्यदेवेशश्री ने सायला निवासी श्री छोगालालजी वरदाजी फोलामुथा परिवार को श्री सम्मेदशिखरजी आदि तीर्थयात्रा 'फोलामुथा एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन' का एवं वल्लभीपुर तीर्थ से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छःरि पालित संघ का मुहूर्त्त प्रदान किया। जिसका वाचन मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म.सा. ने किया।

यतीन्द्रवाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पंच प्रतिक्रमण सूत्र (सचित्र) पुस्तक एवं पूज्या विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. के 50 वें संयम पर्याय के उपलक्ष्य में सूर्य संयम स्वर्ण स्मारिका फोल्डर का लोकार्पण श्री भाण्डवपुर महातीर्थ से पधारे श्री नरपतजी-सुराणा, श्री मूलचन्दजी बालगोता, काजूभाई- भीनमाल, यतीन्द्र वाणी के स. सम्पादक कुलदीप प्रियदर्शी आदि ने किया।

इस अवसर पर नगर निवासियों के अतिरिक्त बड़नगर, जावरा, थराद, बाग, डीसा, अहमदाबाद, जालोर, सायला, भीनमाल, सुराणा, मेंगलवा आदि नगरों के अतिरिक्त निकटवर्ती नगरों के श्रीसंघ प्रतिनिधि एवं कई गुरुभक्त उपस्थित थे।

भांडवपुरतीर्थ । जैनाचार्य श्री जयरत्न सूरीश्वरजी आदि तथा साध्वी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. आदि की शुभ निश्रा में यहाँ स्थित पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के अंतिम विश्राम स्थल श्री यतीन्द्र विहार उपाश्रय में नवनिर्मित आरस पाट पर पुण्य सम्राट के चित्र की स्थापना शुभ मुहूर्त्त में म.प्र. इकाई के अध्यक्ष श्री सुरेशजी तातेड़ राजगढ़ ने की। आपने विधि सहित पूजा अर्चना भी की।

भांडवपुरतीर्थ । मुनिराज श्री आनन्दविजयजी म. ने विशेष जानकारी देते हुए कहा कि आचार्य-देवेशश्री के कुशल निर्देशन में महातीर्थ की विकास यात्रा तीव्र गतिमान है। तीर्थाधिपति श्री महावीर प्रभु के 52 जिनालयों का कार्य अपने अन्तिम चरण में गतिमान है। तीनों गुरु मन्दिरों के पत्थरों को तराशने एवं जोड़ने का कार्य चालू है। कमलाकार चार शाश्वत जिनालय का कार्य भी कुशल शिल्पियों द्वारा चल रहा है।

72 जिनालय के निर्माता श्रीमती सुआदेवी सुमेरमलजी लुंकड़ परिवार द्वारा सम्पूर्ण लाभ लेकर यात्रियों की सुविधा हेतु अत्याधुनिक धर्मशाला का निर्माण भी तीव्र गति से चल रहा है। मुनिराजश्री ने बताया कि शीघ्र ही सारे निर्माण कार्य पूर्ण होने पर अतिशीघ्र ही भव्य प्रतिष्ठा की दिनांक घोषित की जायेगी। ■■

पाटण

पाटण। गुजरात के पाटण नगर में आषाढ़ शुक्ल 13 रविवार 14 जुलाई 2019 को अध्ययन हेतु बिराजमान मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी महाराज, मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी महाराजा आदि ठाणा 6 एवं साध्वी श्री तत्वलताश्रीजी आदि ठाणा 4, साध्वीश्री कुमुद प्रियाश्रीजी आदि ठाणा 4, साध्वीश्री रुचि दर्शनाश्रीजी आदि ठाणा 2 का भव्य चातुर्मास प्रवेश हुआ।

मुनि भगवंतों एवं साध्वी भगवंतों के चातुर्मास प्रवेश की शोभायात्रा नगर के प्रमुख स्थल बगवाडा चौक से प्रारंभ हुई जिसमें अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में सुप्रसिद्ध बैंड के संगीत में परमात्मा और गुरुदेव के भाव भरे गीतों के गुंजन के बीच कलशधारी बालिकाओं और सौभाग्यवंती महिलाओं ने सामैया किया। रजवाड़ी बगी में विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज एवं पुम्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय

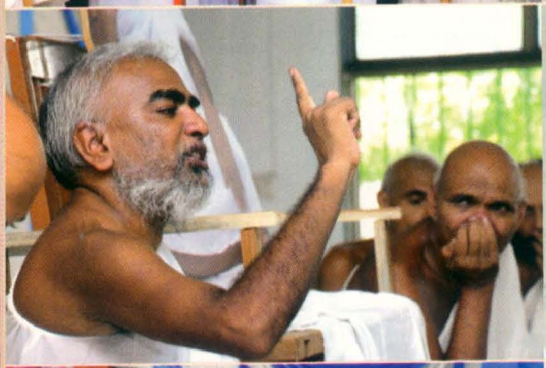

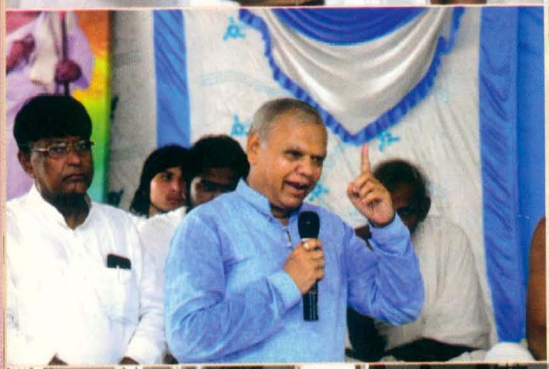

जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज के फोटो के साथ शोभायात्रा नगर के राजमार्ग पर परिभ्रमण कर चातुर्मास स्थल त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में सम्पन्न हुई।

शोभायात्रा में पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के फोटो को पालखी में बिराजमान कर युवा वर्ग लेकर चल रहे थे वो फोटो श्रद्धा का केन्द्र रहा, हर भक्त गुरुदेव का स्मरण करते हुए गुरुदेव की निश्रा में बिताए पल को याद कर गुरुदेव की यादों में फोटो को देख आंखों से आंसू बहते नजर आए । चातुर्मास प्रवेश प्रसंग पर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटणं द्वारा श्रमण-श्रमणी भगवंतों की पावन निश्रा में धर्मसभा का आयोजन हुआ। नगर में बिराजमान पन्यास श्री मोक्षेसरत्न विजयजी महाराज, पन्यास श्री कल्पज्ञ विजयजी महाराज, मुनिराज (ऊंकारसूरी समुदाय), श्री ऋषभचन्द्र सागरजी महाराज (भक्ति सूरी समुदाय) आदि श्रमण भगवंत एवं विभिन्न समुदायों के श्रमणी भगवंतों की उपस्थिति में जैन धर्म की एकता के दर्शन हुए। सभी श्रमण भगवंतों ने मांगलिक प्रवचन दिये एवं मुनिराज श्री चारित्र रत्नविजयजी महाराज आदि ठाणा की सरलता और आत्मीय भावों का एवं प्रसंग की एकता का उल्लेख किया।

मुनिराजश्रीजी को त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से कामली वहोराने का लाभ थराद जैन संघ के अग्रणी परिवार श्री बाबुलाल लल्लुभाई के सुपुत्र रमेशभाई (नडियादवाले) ने लिया। लाभार्थी परिवार की ओर से पधारे सभी समुदाय के श्रमण भगवंतों को कांबली वहोरा कर लाभ लिया।

पाटण नगर के इस प्रसंग पर गुरु राजेन्द्र जन्म भूमि ट्रस्ट भरतपुर, जयन्तसेन म्युजियम ट्रस्ट मोहनखेड़ा, गुरु जयन्तसेन तीर्थ ट्रस्ट भूमि पेपराल ट्रस्ट, राज राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट, यतीन्द्र भवन ट्रस्ट पालीताणा, गुरु जयन्तसेन साधना भूमि ट्रस्ट बाग, स्वर्णगिरी तीर्थ ट्रस्ट जालोर सहित अनेक ट्रस्ट के ट्रस्टी और जावरा, राजगढ़, पारा, बाग, महिदपुर, झाबुआ, रतलाम, बड़नगर, करवड़, थराद, अहमदाबाद, डीसा, दाहोद, नडियाद, सूरत, नारोली, पीलुडा, उंदराणा, सियाणा, लाखणी, वासणा, पेपराल, मेंगलवा, सुराणा, लोवाणा आदि अनेक संघ के सदस्य उपस्थित रहे। त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण ने पधारे हुए ट्रस्ट के ट्रस्टी ओर संघों के सदस्य के आगमन का सम्मान करते हुए उन सभी से दादा गुरुदेव और पुण्य सम्राट गुरुदेव के फोटो पर पुष्प अर्पण करवाये।

धर्मसभा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से गुरुदेव के फोटो के सन्मुख श्रमण - श्रमणी भगवंतों एवं मुमुक्ष रत्नों को अध्ययन में सहायता प्रदान करने वाले

पाटण नगर में स्थित पंडितवर्य श्री रमणीकभाई, चन्द्रकान्त भाई, प्रवीणभाई, विजयभाई आदि ने गुरुदेव के सन्मुख दीप प्रगट किये।

चातुर्मास प्रवेश प्रसंग पर पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा से जैन धर्म एवं भारतीय संस्कृति को ग्रहण करने वाले विदेश के भक्तों में से आठ सदस्य के समूह ने पदार्पण कर गुरु भक्ति का परिचय दिया। धर्मसभा का श्री ओमप्रकाश आचार्य ने संचालन किया, कार्यक्रम में संगीत के सुरों से गुरु भक्ति की पुण्य सम्राट गुरुदेव के कृपा पात्र मन मधुकर ग्रुप के संगीतकार कैलाशजी एवं राजुजी ने, संचालक एवं संगीतकार ने किसी प्रकार की राशि लिए बिना पधारकर उपस्थिति दर्ज करवाई। स्थानीय संगीतकार जितुभाई नायक ने संपूर्ण टीम के साथ संगीत से गुरु भक्ति की।

'धर्मसभा को संबोधित किया'- चातुर्मास प्रवेश प्रसंग की धर्मसभा को मध्यप्रदेश त्रिस्तुतिक जैन संघ के अध्यक्ष श्री सुरेशजी तांतेड़, थराद के अग्रणी श्री जयंतीभाई वकील एवं श्री सुनीलजी, श्री चन्द्रकान्त भाई संघवी ने धर्मसभा को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर पाटण नगर के सागर उपाश्रय, नगीनभाई पौधशाला, खेतरवसही, भारती सोसायटी, आशीष सोसायटी सहित विभिन्न उपाश्रय के आराधक वर्ग एवं पाटणं के वाव पथक संघ, तेरापंथ संघ, स्थानक वासी संघ के कार्यक्रम के अंतिम समय तक उपस्थित रहकर कार्यक्रम को गरिमामय बनाने के लिए आभार माना।

शोभायात्रा पंचासरा जैन मंदिर के समीप पहुंच पर पाटण नगरपालिका की ओर से मुनिराजश्री चारित्र रत्न विजयजी महाराज के परम भक्त और नगर पालिका अध्यक्ष श्री महेन्द्रभाई पटेल ने मुनि भगवंतों के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद लेकर शोभायात्रा का स्वागत किया धर्मसभा में स्थानीय जननेता उपस्थित रहे और मुनि भगवंतों के आशीर्वाद ग्रहण किए।

त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण के वर्तमान में निवास कर रहे सदस्य के सिर्फ पांच घर हैं लेकिन जबसे श्रमण एवं श्रमणी भगवंत अध्ययन हेतु पाटण पधारे हैं तब से उनकी वैयावच्च और आने वाले श्रीसंघ एवं गुरु भक्तों की भक्ति में कभी थकान महसूस नहीं की। श्रमण - श्रमणी भगवंतों के अध्ययन में अवरोध किये बिना पाटण नगर में जैन शासन और गुरु गच्छ के अविस्मरणीय कार्यक्रम कर अनेक संघों के अनुमोदन के सहभागी बने।

- ब्रजेश बोहरा
(राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी)

■■

सरधना

सरधना (मेरठ)। चैन्नई चातुर्मास करके तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, झारखंड, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश व उत्तराखंड की क्षेत्र स्पर्शना करते हुए आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी के शिष्य मुनिश्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी का मेरठ के निकट सरधना शहर के चौक बाजार स्थित जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक आराधना भवन में 11 जुलाई, गुरुवार को चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। मुनिश्री ने कहा कि जो आनंद देने में है, वह लेने में नहीं। भूखे को भोजन कराने में जो संतोष होता है, वह स्वयं के करने में नहीं, किसी दुःखी पीड़ित की सहायता करने में मन को जो सुख का अनुभव होता है, वह धन की गठरी भरकर रखने में नहीं होता।

इकट्ठा करने में कटुता या मलीनता आ जाती है और बांटते रहने में सरलता व निर्मलता आती है। नदियों का पानी सागर में संग्रहित होता है, तो वह खारा बन जाता है, बादल इकट्ठा करता है तो काला पड़ जाता है और वही सागर का पानी पुनः भाप बनकर उड़ता है तो मीठा बन जाता है और बादल संग्रहित जल का त्याग करते हैं तो उजले बन जाते हैं। इस अवसर पर महिला मंडल, बालिका मंडल एवं संघ के प्रधान सतेन्द्रजी जैन ने स्वागत गीत के माध्यम से अपने भाव प्रकट किये।

मुनिद्वय श्री को कामली ओढ़ाने का लाभ कोच्चि से पधारे विक्रम भाई ने लिया। श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. संघ विजयवाड़ा के उपाध्यक्ष अशोकजी सोलंकी व कोच्चि के विक्रम भाई का बहुमान सरधना जैन संघ ने किया। अल्पाहार का लाभ सुभाषचंद्र जैन परिवार ने लिया। चातुर्मास के दौरान इसिभासियाइं आगम का वाचन किया जाएगा। ■■

---

* मुनिराजश्री संयमरत्नविजयजी म.सा. मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी म.सा. ने चैन्नई चातुर्मास सम्पन्न करके शिखरजी पंचतीर्थी की यात्रा करते हुए हिमालय स्थित बद्रीनाथ (अष्टापद) की यात्रा सम्पन्न की त्रिस्तुतिक समुदाय के ये पहले संत हैं जिन्होंने

हिमालय की यात्रा सम्पन्न की है। मुनि श्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी का जूनापीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानंदगिरिजी महाराज से आध्यात्मिक आंतरिक सस्नेह मिलन हरिद्वार में हुआ। स्वामीजी ने मुनिश्री का भावपूर्वक स्वागत किया। कुछ दिनों पूर्व ही स्वामी अवधेशानंदजी के गुरु पद्मभूषण से विभूषित स्वामी सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज के देवलोकगमन होने पर मुनिश्री ने स्वामी अवधेशानंदजी को एक भाव भरा श्रद्धाजंलि पत्र अर्पित किया। इस अवसर पर मुनिश्री ने स्वामी अवधेशानंदजी को आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी द्वारा आलेखित व स्वलिखित साहित्य भी प्रदान किया। दोनों ही परंपरा के संतों में परस्पर आध्यात्मिक विचार विमर्श हुआ।

*** सरधना ।** मेरठ जिले के निकट स्थित सरधना शहर में चातुर्मास करने हेतु विहाररत आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी के सुशिष्य मुनिश्री संयमरत्नविजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी का पतंजलि योगपीठ के स्वामी रामदेवजी से यौगिक मिलन हुआ। मुनिश्री ने स्वामी रामदेवजी को साहित्य प्रदान किया। स्वामी रामदेवजी ने भी अपना यौगिक साहित्य प्रदान कर मुनिश्री ने स्वामी रामदेवजी को जैन दर्शन में उल्लेखित योग साधना के विषय में बताया। जैन परंपरा में प्रतिक्रमण, सामायिक व पौषध जैसी क्रियाओं में यौगिक क्रियाओं व आसनों का समावेश सहज व सरल रूप में दर्शाया गया है। रामदेवजी ने मुनिश्री से मिलकर अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

■■

जावरा

आचार्यश्री मुनि मंडल और साध्वी मंडल का मंगल प्रवेश

जावरा । मोह, ममत्व, कामना, वासना, कषाय सभी हमें पतन की ओर धकलने वाले हैं। हमें दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त हुआ। अपने आचरण से वीतराग पथ पर चलें, ज्ञान की आराधना करें, तप-आराधना से जीवन को अलंकृत करें।

जीवन में प्रतिपल इस बात का चिंतन करें कि यह जीवन हमें छोड़कर प्रभु वीतराग की शरण में जाना है। यह बात आचार्यश्रीमद् नित्यसेन सूरीश्वरजी म. ने आयोजित धर्मसभा में फरमाई। उन्होंने कहा कि यह मानव जीवन बड़ी मुश्किल से मिला है मिच्छामी दुक्कडम कर वैरभाव खमा कर तप, त्याग, तपस्या और ध्यान करके एवं प्रतिदिन नवकारसी सामायिक प्रतिक्रमण एवं सूर्यास्त पूर्व भोजन करके चार्तुमासिक आराधना करके जीवन को सफल बनाना है। चातुर्मास समिति के प्रचार सचिव अरविन्द जैन एवं संजय धारीवाल ने बताया कि गच्छाधिपति का साधु-साध्वी मंडल सहित नगर प्रवेश इन्द्रराज विला रतलामी गेट से प्रारंभ हुआ। श्री इंदरमलजी दसेड़ा परिवार की ओर से आगन्तुक अतिथियों की नवकारसी थी। उपरान्त चल समारोह में घोड़े, बग्घियां, कलश लेकर महिलाएँ श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह पूर्वक अपने गुरुदेव की आगवानी की एवं जगह -जगह गहुली की गई। चल समारोह नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ जैन मन्दिर पिपली बाजार पर धर्मसभा में परिवर्तित हुआ। श्रीमती अंजु तांतेड़ ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रकाशजी मोदी द्वारा स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में अतिथिगण श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा (राष्ट्रीय महामंत्री, अ.भा. श्रीस्तुतिक श्रीसंघ) का बहुमान श्री संघ अध्यक्ष बाबुलालजी तातेड़, महासचिव प्रवीण कोलन, कोषाध्यक्ष राधेश्याम सुराणा, चातुर्मास समिति अध्यक्ष प्रकाश मोदी, महासचिव पारस सकलेचा, कोषाध्यक्ष चोरडिया, सुजानमल दसेड़ा, राजमल धारीवाल, महेन्द्र कोलन द्वारा किया गया। श्री सुरेश तांतेड़ (प्रदेश अध्यक्ष, म.प्र. श्री स्तुतिक श्रीसंघ) अनिल दसेड़ा (राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री, अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद), श्री ब्रजेश बोहरा (राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद), सूरत के प्रवीणभाई अडाणी एवं श्री राकेश जैन (अध्यक्ष पिपलौदा चातुर्मास समिति) का बहुमान श्रीसंघ द्वारा शाल, श्रीफल से किया। अतिथि श्री सुरेन्द्र लोढ़ा का उद्बोधन हुआ। मुनि सिद्धरत्नविजयजी म.सा. तथा मुनिराजश्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने चातुर्मास में अधिक से अधिक आराधना करके जीवन को सफल बनाने को कहा। प्रकाशचन्द मोदी परिवार द्वारा गुरुदेव को कांबली ओढ़ाई गई एवं जावरा में चातुर्मास हेतु पधारे साध्वीवर्या श्री अमित दृष्टाश्रीजी म.सा. को कांबली वोहराई गई। श्री सुजानमलजी दसेड़ा परिवार द्वारा गुरुदेव राजेन्द्रसूरीजी की आरती उतारी गई। संचालन श्री पारस सकलेचा, श्री संजय धारीवाल एवं श्री धमेन्द्र तांतेड़ द्वारा किया गया। आभार श्री सुरेश चौरडिया ने माना।

धार

धार। साध्वी श्री अविचलद्रष्टा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा7 का नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। लालबाग से जुलूस शुरू हुआ और नगर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ राजेन्द्र भवन पहुंचा जहाँ वह धर्म सभा में परिवर्तित हुआ। जुलूस में महिलाएँ सिर पर कलश लेकर आगे चल रही थीं और शहर में जगह –गवली की गई। सभा में पूज्य साध्वी श्री अविचल द्रष्टाश्रीजी म.सा. ने चातुर्मास काल के महत्व को और तप, दर्शन, ज्ञान, चरित्र को पाकर हम आत्मा को परमात्मा से जोड़ सकते है बात को समझाया। साथ ही साध्वी श्री निरूपमकलाश्रीजी ने भी सभी को धर्म आराधना के लिए प्रेरित किया। सभा में अतिथि के रूप में श्री मनोहरलालजी पुराणिक संघ के सहमंत्री, श्री सुरेशजी तांतेड़ प्रदेश अध्यक्ष म.प्र. संघ, श्री सुशीलजी गिरिया राष्ट्रीय उपाध्यक्ष परिषद, श्री रमेशजी धाड़ीवाल प्रदेश अध्यक्ष, सुधीरजी लोढ़ा प्रदेश महामंत्री आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता और स्वागत उद्बोधन श्री प्रकाशजी बाफना ने दिया। श्री पुराणिकजी और धाड़ीवाल ने अपने उद्बोधन में धार श्रीसंघ की तैयारी की प्रशंसा की। साथ ही श्री राजेन्द्रजी मोदी, श्री महेशचंद्र बिल्लोरे का अभिनंदन जैन श्रीसंघ द्वारा उनकी जैन समाज को दी जाने वाली सेवा के लिए किया।

गुरुदेव के वासक्षेप पूजन का लाभ श्री राजेशजी संजयजी नाहर परिवार ने लिया। कार्यक्रम में श्री वर्धमान सुराना, श्री मनोहरलालजी जैन आदिनाथ, श्री हेमंत मेहता, श्री मनोजजी श्रीश्रीमाल, श्री महेन्द्र धोका, प्रकाश डूंगरवाल, महेन्द्र अम्बोर, घेवरचंद जैन, सुभाष जैन, श्री शरद धोका, श्री मनोज हरण, श्री दीपक बाफना, अजय छाजेड़, श्री विपिन लुनिया आदि लोगों ने अतिथियों का स्वागत किया। समाजजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मोहित तांतेड़ प्रदेश उपाध्यक्ष नवयुवक परिषद ने किया और आभार आदित्य धोका ने माना।

■■

मोहनखेड़ा म्युजियम

राजगढ़। साध्वीश्री डॉक्टर दर्शितकलाश्रीजी म.सा. साध्वीश्री डॉक्टर चिंतनकलाश्रीजी म.सा. का राजगढ़ राजेन्द्र भवन से मोहनखेड़ा तीर्थ स्थित श्री जयंतसेन म्यूजियम पर चातुर्मास मंगल प्रवेश 12/7/19 शुक्रवार प्रातः 7 बजे

बड़े ही हर्षोल्लास के साथ हुआ जिसमें म्युजियम ट्रस्ट मण्डल परिवार, राजगढ़, टांडा, पारा, इन्दौर, रिंगनोद आदि श्रीसंघ परिषद परिवार के सदस्यों ने भाग लिया।

श्री जयंतसेन म्युजियम ट्रस्ट मंडल परिवार द्वारा साध्वीजी म.सा. की अगवानी की गई। पार्श्वनाथ भगवान, दादा गुरुदेव, पुण्य सम्राट के पुण्य कलश के दर्शन वंदन कर साध्वीजी म.सा. के प्रवचन- मांगलिक हुई पश्चात् ट्रस्ट मंडल द्वारा नवकारसी रखी गई।

■■

बैंगलोर

बैंगलोर । फूलों की नगरी बैंगलोर में आषाढ़ शुक्ल 12 शनिवार 13 जुलाई को प.पू. गुरुणीमैया श्री लावण्यश्रीजी म.सा. एवं दमयंतीश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. श्री सूर्योदयश्रीजी म.सा. कैलाशश्रीजी म.सा., विपुलदर्शिताश्रीजी म.सा., आदि ठाणा का भव्य चातुर्मास प्रवेश हुआ।

साध्वीवर्या के चातुर्मास प्रवेश की शोभायात्रा नगर के प्रमुख स्थल एवेन्यु रोड़ सर्कल से प्रारंभ हुई जिसमें अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में सुप्रसिद्ध बेंड के संगीत में परमात्मा और गुरुदेव के भाव भरे गीतों के गुंजन के बीच कलशधारी बालिकाओं और सौभाग्यवंती महिलाओं ने सामैया किया।

रजवाड़ी बग्गी में विश्व पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज एवं पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज के फोटो के साथ शोभायात्रा नगर के राजमार्ग पर परिभ्रमण कर चातुर्मास स्थल राजेन्द्र भवन किलारी रोड़ में सम्पन्न हुई। शोभायात्रा में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं महिला परिषद् के युवा और बुजुर्ग खुशी व्यक्त करते हुए नृत्य के साथ जैन धर्म के जयघोष कर रहे थे। चातुर्मास प्रवेश की शोभायात्रा में पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के फोटो को पालखी में बिराजमान कर युवा वर्ग लेकर चल रहे थे। वो फोटो श्रद्धा का केन्द्र रहा। हर भक्त गुरुदेव का स्मरण करते हुए गुरुदेव की निश्रा में बिताए पल को यादकर गुरुदेव की यादों में फोटो को देख आँखों से आंसू बहते नजर आए।

चातुर्मास प्रवेश प्रसंग पर साध्वीवर्याश्री को श्री सिमन्धर स्वामी जैन संघ बैंगलोर की ओर से कामली वहोराने का लाभ अध्यक्षः प्रेमा बेन माँगीलालजी गांधी मुथा सायला वालों ने लिया।

*** बेंगलरू ।** यहाँ नगरथपेट स्थित मांगीलालजी वालाजी गांधीमुथा (मुथा पेपर मार्ट) के निवास पर विराजित साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा., कैलाशश्रीजी म.सा. व विपुदर्शिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक

परिषद के सदस्यों व महिला इकाई की सदस्याओं ने दर्शन वंदन का लाभ लिया एवं परिषद के अध्यक्ष डूंगरमल चौपड़ा ने बताया कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी परिषद् द्वारा जरूरतमंद विद्यार्थियों को बेग व पाठ्यसामग्री वितरण का कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। इस कार्यक्रम में साध्वीवृंद से निश्रा प्रदान करने का अनुरोध किया गया।

जिसे साध्वीजी म.सा. ने स्वीकार किया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में करीब तीन हजार छात्र-छात्राओं को बेग व पाठ्यसामग्री वितरित होगी। चोपड़ा ने बताया कि यहाँ विराजित 21 जून तक साध्वीजी के प्रतिदिन सुबह 9.30 बजे से प्रवचन व्याख्यान होंगे, इस अवसर पर अनेक परिषद के सदस्यगण मौजूद थे। ■■

नागदा जंक्शन

नागदा जंक्शन । 'सखी मैं तो सजाए घर आंगनिया- गुरुजी आया हमारे पामनिया... साची कहुं तोरे आवन से गुरूणीजी- हमारे आंगन में बहार आई गुरूणीजी' जैसे भजनों एवं साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री निरागरसाश्रीजी मसा. आदि साध्वीमंडल का चातुर्मासिक मंगल भवन में जन्मेजय मार्ग से हुआ। चल समारोह से पूर्व लक्ष्मीबाई मार्ग स्थित पाठशाला भवन में मूर्तिपूजक जैन श्रीसंघ की नवकारसी का आयोजन किया गया जिसका लाभ बोहरा एवं भारतीय परिवार ने लिया। प्रवेश के चल समारोह में त्रिशला महिला मंडल, पार्श्व बहू मंडल, अचरा बहू परिषद, नवकार बहू परिषद की महिला कलश लेकर एवं डांडिया रास कर, श्रावक-श्राविकाओं ने चावल के स्वस्तिक कर साध्वीवृन्द की अगवानी की। चल समारोह, जन्मेजय मार्ग से महात्मागांधी मार्ग, स्टेशन चौराहा, जवाहर मार्ग, महावीर मार्ग रामसहाय मार्ग, सुभाष मार्ग, थाना चौराह, महात्मागांधी मार्ग, औझा मार्ग होते हुए लक्ष्मीबाई मार्ग स्थित पाठशाला भवन पर धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हुआ।

धर्मसभा की शुरूआत साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. के मंगलाचरण से हुई। सामूहिक गुरुवंदन की प्रस्तुति हेमंत कांकरिया ने दी। साध्वीश्री के प्रथम

नगर आगमन पर स्वागत उद्‌बोधन संघ अध्यक्ष विरेन्द्र सकलेचा एवं चातुर्मास समिति अध्यक्ष दिलीप नांदेचा औरा ने दिया। स्वागत गीत की प्रस्तुति आयुष बोहरा, निरंजना बोहरा, रंजना चौपड़ा, मनोहरलाल कांठेड़ ने दी। धर्मसभा को भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष राजेश धाकड़, नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल इन्दौर, राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री अनिल दसेड़ा जावरा, महिला परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गुणमाला नाहर उज्जैन, प्रदेश अध्यक्ष पुष्पा भंडारी, मनावर, मनोज वागरेचा ने संबोधित कर चातुर्मास की महत्ता पर प्रकाश डाला। धर्मसभा के दौरान नवकारसी लाभार्थी एवं अन्य शहर से पधारे श्रीसंघ प्रमुखों एवं साध्वीश्री के सांसारिक माता-पिता का बहुमान श्रीसंघ एवं चातुर्मास समिति पदाधिकारियों द्वारा किया गया। धर्मसभा में साध्वीश्री के प्रथम नगर प्रवेश पर काम्बली अर्पण करने का लाभ राजमल अशोक कुमार नरेन्द्रकुमार नांदेचा औरा परिवार ने लिया। धर्मसभा का संचालन श्रीसंघ के पूर्व अध्यक्ष सुनील वागरेचा ने व आभार मधुकर चातुर्मास समिति के सचिव ब्रजेश बोहरा ने माना।

धर्मसभा के पश्चात पाठशाला भवन में श्रीसंघ के स्वामीवात्सयल का आयोजन किया गया। साध्वीश्री के मंगल प्रवेश के मौके पर इन्दौर, उज्जैन, महिदपुर, महिदपुर रोड़, खारवा, रतलाम, मेघनगर, मनावर, झाबुआ, आलोट, बड़नगर आदि अनेक शहरों से गुरुभक्त पधारे।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. ने कहा कि हर व्यक्ति को इस बात का पता होता है कि एक दिन यह तन राख की ढेर में परिवर्तित होना है फिर भी व्यक्ति अपने तन को संवारने में पूरा जीवन लगा देता है। यदि वह तन संवारने के स्थान पर धर्म आराधना कर अपने मन को संवार कर अपनी आत्मा का कल्याण करे तो 84 लाख जीवयोनी के परिभ्रमण से मुक्ति प्राप्त मोक्ष पद को प्राप्त किया जा सकता है। साध्वीश्री निरागरसाश्रीजी म.सा. ने कहा कि हर वर्ष चातुर्मास आता है और चला जाता है। हम चार माह तक तप आराधना करेंगे।

चार माह के कुम्भ कलश का लाभ सुरेशकुमार मनोहरलाल, राजकुमार भारतीय परिवार एवं अखण्ड दीपक का लाभ अशोककुमार आशीष चौधरी परिवार द्वारा लिया गया। चातुर्मासिक आराधना में चार माह तक प्रतिदिन सुबह 6.30 बजे भक्ताम्बर पाठ सुबह 9.30 बजे प्रवचन, दोपहर 2 बजे धार्मिक अध्ययन, शाम 7 बजे प्रतिक्रमण का आयोजन किया जाएगा। प्रवचन के दौरान साध्वीश्री चार माह तक शांतसुधारश ग्रंथ एवं भीमसेन चरित्र पर धर्म की गंगा बहाएंगे।

– विपिन वागरेचा ■■

आहोर

आहोर। शासनलताश्रीजी आदि ठाणा 9 का भव्यप्रवेश दिनांक 11 जुलाई को आहोर में हुआ।

बाहरगांव अलीराजपुर, सियाणा, सायला, जालोर, जबसियाणा, विजयवाड़ा, राजमहेन्द्री, लोनावला आदि के गुरुभक्त पधारे थे। चातुर्मास हेतु आए गुरु भक्तों के ठहरने व भोजन की व्यवस्था की हुई है।

चातुर्मास में सूत्र अध्यात्म कल्पद्रुम का वोहराने का लाभ मुथा कमलेश कुमार कांतिलालजी भगुजी ओस्तवाल ने लिया।

चरित्र उदयभाण, वीरभाण वोहराने का लाभ मुथा पारसमल वालचंद ओस्तवाल (परिषद) आहोर लोनावाला ने लिया। ज्ञानपूजा के पाँच चढ़ावे भी गुरु भक्तों ने लिये।

■■

जालोर

जालोर। त्रिस्तुतिक जैन संघ जालोर में चातुर्मास हेतु साध्वीश्री दर्शनकलाश्रीजी आदि ठाणा 6 का मंगलमय प्रवेश दिनांक 10 जुलाई को सूरजपोल से हुआ। शोभायात्रा पंच शिरवरीजी जिनालय तथावास, काकरिया पार्श्वनाथ, सदर बाजार होते हुए धर्मशाला पहुंची। साध्वीजी म.सा. का मंगलमय प्रवचन हुआ। 'अहंकार' विषय पर विवेचना करते हुए फरमाया कि गुरु गौतम ने अहंकार छोड़ा तो भगवान महावीर की शरण मिली। बाहुबली के द्वार पर केवल ज्ञान आकर ठहर गया, 'बड़े भ्राता भरत को वन्दन कैसे करूँ' यह अहम छोड़ने का भाव जगा केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।

मंगलमय प्रवेश में जालोर संघ के साथ बाहर गांव- सियाणा, आहोर, सायला, डीसा, बड़नगर आदि स्थानों से मेहमानों की उपस्थिति सराहनीय रही। संघ द्वारा स्वामीवात्सल का आयोजन रखा गया जिसके लाभार्थी शा. भंवरलालजी गणेशमलजी भंडारी थे।

दिनांक 11 जुलाई को साध्वी श्री दर्शनकलाश्रीजी की निश्रा में त्रिस्तुतिक धर्मशाला में राजेन्द्र कोष के 7 भाग के साथ गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की दर्शनीय मूर्ति विधी -विधान से प्रतिष्ठित की गई। गुरुपद महापूजन का आयोजन रखा गया। विजय मुहूर्त में सभी कार्य सम्पन्न हुए। संघ का स्वामीवात्सल रखा गया। सभी कार्यक्रम के लाभार्थी शा. सोहनराजजी कल्याणमलजी बोहरा परिवार (फतेह ग्रेनाइटस, जालोर) रहे।

– हीराचंद संघवी ■■

'अष्ट महासिद्धि तप'

नागदा । पार्श्व पाठशाला में विराजित साध्वी श्री अमृतरसाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में अष्ट महासिद्धि तप आयोजित किया गया। इसमें 1 उपवास और 1 बियासना करना है । यह तप 8 दिन चलता है। 8 उपवास व 8 बियासना करना है। सुबह का बियासना पार्श्व प्रधान पाठशाला पर हुआ।

– दिलीप ओरा

* जावरा में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर अमित दृष्टाश्रीजी आदि ठाणा 7 की निश्रा में आज पाठशाला के बच्चों को 45 दिन की नियमावली दी गई गुरु पूजा कराई गई। ■ ■

हैदराबाद में आदि–गौतम–राजेन्द्र जिनालय की प्रतिष्ठा सम्पन्न

हैदराबाद। प्रेमबाग स्थित सिद्धाचल जैन सोसाइटी के अन्दर सा. उत्तमचन्दजी खुशालचन्दजी डामराणी परिवार व श्री चैतन्य कुमार रमेशकुमारजी म्याडम परिवार ने मिलकर एक भूभाग में संगमरमर पत्थर के जैन मंदिर का निर्माण करवाया। दि. 12 जुलाई को प.पू. साध्वीश्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. व प.पू. साध्वी मोक्षरसाश्रीजी आदि ठाणा 8 के पावन सान्निध्य में सर्वप्रथम विधीकारक– कन्नु गुरुजी एवं नरेन्द्र कुमार राठौड़ व मंदिर निर्माणकर्ता परिवार के सभी सदस्यों ने भगवान आदिनाथ, पारसनाथ, मुनिसुव्रत स्वामी, गणधर गौतम स्वामी व गुरुदेव राजेन्द्र सूरीश्वरजी व गुरुदेव जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. व अधिष्ठायक देव नाकोड़ा भैरव व अधिष्ठायक देवी अम्बादेवी की प्रतिमाएँ मूल गंभारे में पवासन पर विराजमान की। उसके पश्चात् संगीतकार कालूराम एण्ड पार्टी कोयम्बटुर ने जोरदार वाद्ययंत्रों से भक्ति कर भगवान के जयकारे लगाये। साध्वीवृंद के दिशा निर्देशन में प्रतिष्ठा विधी सम्पन्न की गई। दि. 10.6 को श्रीमती लीलाबाई लोढ़ाजी वेदमुथा परिवार के गृह जिनालय से पधारी श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी, श्री आदिनाथजी, श्री शांतिनाथजी भगवान की प्रतिमाओं को भी विधीवत प्रतिष्ठित कर जिनालय के गंभारे में विराजमान की गई। इस प्रकार भगवान 2, गुरुदेव 1, नाकोड़ा भैरव व अम्बामाता देवी कुल 11 प्रतिमाओं से सुसज्जित एक विशाल जिनालय सभी के लिए अतिदर्शनीय व पूज्यनीय बन गया। प्रचार संयोजक जसराज देवड़ा धोका ने बताया कि मंदिर परिसर के बाहर अंकित लोढ़ा एण्ड पार्टी द्वारा प्रभुजी की भव्य भक्ति का कार्यक्रम लक्की ड्रा के साथ हुआ। अच्छी संख्या में भक्तजन उपस्थित थे। दि. 12.6 को प्रातः 7 बजे से शादी करवाकर अल्पाहार व विजय मुर्हूत में शांतिस्नात्र महापूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शुभ मुहूर्त में प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के पश्चात् श्रीसंघ की बड़ी नवकारसी हुई जिसका लाभ डामरानी व म्याडम परिवार ने लिया। शाम 5 बजे नवकारसी व रात्रि 8 बजे प्रभु भक्ति का कार्यक्रम रखा गया है। द्वारोद्घाटन कर सकल संघ को प्रभुदर्शन वन्दन का लाभ दिया गया। ■ ■

परिषद प्रांगण से

छात्रों को पौधों का वितरण

रतलाम। परिषद परिवार द्वारा संचालित धार्मिक पाठशाला में पाठसाला के संचालक श्री सुरेन्द्रजी गंग ने पाठशाला के बच्चों को गमले व पौधों का वितरण किया। जिसके अन्तर्गत नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री श्री सुशीलजी छाजेड़ द्वारा इस परामर्श के साथ पौधे वितरण किए गए कि उनको लगभग चार माह तक इनका पालन करना है। उसके पश्चात हम सबके आस्था के केन्द्र 'पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंत' सेन सूरी महाराज साहब की अंतिम चातुर्मास स्थली श्री 'जयंत सेन धाम' तीर्थ पर अगस्त माह में समारोह पूर्वक वहाँ पर रोपण किया जाएगा। इस मौके पर रतलाम श्रीसंघ के श्री राजेन्द्रजी लुणावत, परिषद अध्यक्ष विनय सुराना, राजकमल दुगड़, पंकज राठौर, विपिन भंडारी, धर्मेन्द्र रांका, नीलेश लोढ़ा, सन्नी पोरवाल, देवेन्द्र मेहता, दिलीपजी ओरा, पौधों के (लाभार्थी श्री राकेशजी शेखरजी घोचा), महिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती मंजू मेहता, श्रीमती चंदा चोरड़िया, श्रीमती श्रृद्धा लुणावत, श्रीमती लेखनी पोरवाल, श्रीमती राजकुमारी सकलेचा, श्रीमती पुष्पा घोचा, श्रीमती चोपड़ा, श्रीमती सारिका, श्रीमती संध्या एवं तरुण परिषद के पूर्व अध्यक्ष पंजाल काठी आदि द्वारा गमले एवं पौधे बच्चों को वितरित किए गए। पाठशाला संचालक श्री सुरेन्द्रजी गंग द्वारा सभी के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया गया।

■■

मंदसौर। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद शाखा मंदसौर द्वारा गठिया रोग निदान शिविर का निःशुल्क परामर्श शिविर सम्पन्न किया गया जिसमें गठिया रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अक्षत पांडे द्वारा 68 मरीजों का परीक्षण किया गया। शिविर का शुभारंभ सकल जैन समाज के अध्यक्ष श्री लोकेन्द्रजी धाकड़ त्रिस्तुतिक श्री संघ के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी हींगड़ की अध्यक्षता में किया ।

केन्द्रीय प्रतिनिधि श्रीमती निर्मलाजी लोढ़ा एवं प्रदेश महामंत्री श्रीमती हेमाजी हिंगड़ एवं परिषद अध्यक्ष श्रीमती सुनीता खाबिया एवं पूर्व अध्यक्ष श्रीमती भारती पोरवाल मंचासीन थे। मंगलाचरण श्रीमती रत्ना डोसी एवं श्रीमती वर्षा चपड़ोद ने गाया। अतिथियों द्वारा गुरुदेव के चित्र के सम्मुख धूप दीप और माल्यार्पण किया गया एवं डॉ. पांडे द्वारा गठिया रोग के लक्षण तथा रोग के कारण होने वाले विभिन्न बीमारियों की विस्तृत जानकारी दी गई।

स्वागत उद्‌बोधन एवं परिषद द्वारा अब तक किये मानव सेवा व धार्मिक कार्यों का विवेचन परिषद अध्यक्ष श्रीमती सुनीता खाबिया ने बोला। अंत में आभार श्रीमती हेमा लोढ़ा ने माना। स्वागत परिषद सचिव श्रीमती आभा दुग्गड, टीना सीमा हींगड़, निधी संघवी, सुधा हंसा बाफना, माधुरी खाबिया, राखी हींगड़, विजय लोढ़ा, सरोज रश्मि चपड़ोद, विनीता करनावट, मंजुला मारू, सरेकुंवर डोसी, सारिका पोरवाल आदि ने किया। ■■

मंदसौर। मधुकर धार्मिक ज्ञान व संस्कार का 7 दिवसीय शिविर श्री पार्श्व पद्‌मावती मंदिर के गुरु मंदिर में 55 बच्चे व बहुओं की उपस्थिति में श्री राजेन्द्र महिला परिषद द्वारा गुरुदेव के चित्र के सम्मुख धूप, दीप लगाकर नमस्कार महामंत्र की धुन से प्रारंभ हुआ।

शिविर संचालिका श्रीमती भारती पोरवाल ने धर्म कैसे करें विषय पर विस्तृत समझाया, प्रश्न मंच हुआ। लक्की ड्रा निकालकर पुरस्कार दिए गए। इससे पूर्व बच्चों का कुमकुम तिलक से बहुमान व ज्ञान सामग्री महिला परिषद एवं मानमल खाबिया परिवार द्वारा दी गई। ■■

श्री संघ सौरभ

* **मंदसौर।** भगवान श्री अजीतनाथ दादा के द्विशिखर के जिनालय पर वार्षिक ध्वजारोहण का कार्यक्रम अषाढ़ सुदी नवमी 10.7.2019, बुधवार को सम्पन्न हुआ। श्री जवाहरलाल, राजेन्द्र कुमार, विरेन्द्रकुमार, रक्षित, शोभित, सिद्धांश व मोक्षित पोरवाल थे।

* **पारा।** राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर की 20 वीं वर्षगाँठ पर सुबह भक्ताम्बर गुरु इक्कीसा के बाद मन्दिरजी में परमात्मा मूलनायक आदिनाथ भगवान के साथ गुरुदेव और देवी-देवताओं के अठारह अभिषेक हुए। 15 अभिषेक के पश्चात् लाभार्थियों ने भगवान को चन्द्र, सूर्य दर्शन कराए। अभिषेक के बाद अष्टप्रकारी पूजन, आरती और शांति कलश का लाभ लाभार्थियों ने लिया। सुबह ध्वजा का वरघोड़ा संघवी वालीबाई सागरमलजी छाजेड़ परिवार के यहाँ से ध्वजा की थाल को सर पर रखकर बाजे गाजे के साथ वरघोड़ा निकाला। गुरुमंदिर में विधिकारक ने 'ॐ प्रियंतांम प्रियंतांम ॐ पुण्यांहम पुण्याहम' के मंत्रों से ध्वजा चढ़ाने की विधि प्रारंभ कराई। उसके बाद सामूहिक गुरुवंदन कर आरती उतारी। 10 जुलाई 1999 रविवार को पुण्य सम्राट परम पूज्य लोक संत राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी गुरुदेव वृहदहस्त से पारा में गुरु ज्ञान मंदिर की भव्यातिभव्य प्रतिष्ठा हुई थी। 'विधिकारक' - 'संगीत पार्टी' संजय छाजेड़ सुवासरा थे। दोपहर गुरुपद महापूजन - श्रेणिकजी, राजेन्द्रजी, सुनीलजी पगारिया परिवार की ओर से हुई। 'अंगरचना' बालिका परिषद द्वारा भगवान और गुरुदेव की आकर्षक रचना की। प्रातः व सायं के स्वधर्मी वात्सल्य हुए।

■■

सामायिक बीमा योजना शुरू

* **मंदसौर।** बड़े साथ ओसवाल महिला मंडल मंदसौर में धार्मिक कार्य के अंतर्गत सामायिक बीमा योजना की शुरुआत की गई। महिला मंडल महामंत्री हेमा हिंगड़ ने बताया सामायिक बीमा योजना की मंदसौर में 150, जावरा में 125, बड़नगर में 30, खवासा में 20, करवड़ में 18 से 20 वर्ष के लिए शपथ ली। व्यवहारिक रूप में बीमे की परिपक्वता स्वयं या दावा राशि हमारे परिवार को मिलती है, लेकिन सामायिक बीमें में सामायिक का लाभ स्वयं एवं स्वयं की आत्मा को मिलता है। श्रीमती हिंगड़ ने बताया कि सामायिक की आराधना, साधना आत्म तत्व को उजागर करने में पूर्ण सहायक होती है।

■■

पुण्य सम्राट की द्वितीय पुण्य तिथि

जावरा। वाटिका तीर्थ प्रेरक पुण्य सम्राट की द्वितीय वार्षिक पुण्य तिथि श्रीसंघ एवं परिषद परिवार द्वारा संयुक्त रूप से मनाई गई। जिसमें निम्नानुसार आयोजन सम्पन्न हुए। प्रातः 7.30 बजे सामूहिक स्नान पूजन, स्नान श्री राजराजेन्द्र वाटिका खाचरौद रोड़ जावरा प्रातः 8.30 बजे भाता वितरण, प्रातः 9 बजे इमखार गौशाला में गायों के गुड़ व रोटी बहूपरिषद द्वारा खिलाई गई।

प्रातः 9.45 बजे जीवदया सौसाइटी में नवयुवक परिषद द्वारा गायों को हरी घांस खिलाई गई। प्रातः 11.30 बजे श्रीसंघ द्वारा सामूहिक आयंतीक करवाये गये जिसमें 25 आयंबिल हुए।

दोपहर 12.30 बजे तरूण परिषद द्वारा खाचरौद रोड़ पर प्याऊ का शुभारंभ किया गया व पक्षियों को पानी पिलाने के लिए कटोरे बाँटे गए।

दोपहर 1.30 बजे श्री राजराजेन्द्र वाटिका पर पुण्य सम्राट श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की गुरुपद महापूजन का आयोजन लाभार्थी श्री शान्तिलालजी सुजानमलजी दसेड़ा परिवार के सहयोग से हुआ। जिसमें बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे। ■■

जैन विश्व

* ग्वालियर की मनीषा सिंघई ने भक्तामर की 26 वीं तथा 24 वीं गाथा पर पी.एच.डी. की है। ऐसी उपलब्धि वाली यह पहली जैन महिला है।
* दांता कस्बे में घाटवा रोड़ पर विहार कर रहे जैन मुनि श्री विश्वनाथ सागरजी को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। उन्हें जयपुर ले जाते समय उनका निधन हो गया।
* मदुरै स्थित तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती जयन्त पारख निर्वाचित हुई। कार्य समिति का गठन भी किया गया।
* रायगढ़ (छत्तीसगढ़) की निवासी यशी जैन ने यूरोप की सबसे ऊँची पर्वत चोटी माकण्ड एलडुस पर पांच दिन की चढ़ाई से विजय प्राप्त की तथा चोटी पर भारत का तिरंगा एवं जैन धर्म का पचरंगा ध्वज फहराये। उसने संकल्प लिया है कि वह विश्व के

सातों महाद्वीपों की सबसे ऊँची चोटियों पर चढ़ेगी तथा भारत का तिरंगा लहरायेगी।

* इंदौर स्थित जैन धर्म संस्कृति रक्षा समिति ने अभियान चलाया है कि मांसाहार वाले स्थलों तथा मांसभोजी पांच सितारा होटलों में जैन अनुयायियों को कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं करना चाहिये।
* इंदौर में श्वेताम्बर आचार्यश्री रत्नसुन्दर सूरीश्वरजी म. तथा दिगम्बर संत श्री प्रसन्नसागरजी म. अभय प्रशाल में आयोजित एक कार्यक्रम में अपने -अपने संतों के साथ डेढ़ घंटे तक एक मंच पर रहे। यह भी कहा कि जैन एकता के लिए हम दोनों एक साथ चातुर्मास करने के लिये तैयार हैं।
* मदुरै में श्री सुमतिनाथ जैन नया मंदिर ट्रस्ट के तत्वाधान में श्री आराधना भवन में शुक्रवार को श्री गुणहंसविजय म.सा. के शिष्य मुनिराज भुवनभूषण विजय म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास प्रवेश हुआ। शंखेश्वर टॉवर से गुरु भगवन्तों की शोभायात्रा गाजे-बाजे व मंगल गीतों से शुरू हुए।
* **चातुर्मासिक आराधना-** नगपुरा (दुर्ग)। श्री उवसग्गहरं पार्श्व तीर्थ नगपुरा में चातुर्मासिक आराधना प्रारंभ हुई। साध्वीवर्या श्री लक्ष्ययषा श्री, साध्वीश्री लब्धियषाश्री, साध्वीश्री आज्ञायषा श्रीजी म.सा. की निश्रा में 2 माह तक जप -जप साधना के साथ चार्तुमासिक आराधना हेतु देशभर से श्रावक एवं श्राविकाओं का आगमन हुआ। विभिन्न स्थानों से 183 आराधकों ने प्रविष्ठि दर्ज करायी है।
* मदुरै में श्री जैन युवा मंच की वार्षिक आमसभा में नई कार्यसमिति (2019-20) के निर्वाचन में श्री जयन्तिलाल कांकरिया अध्यक्ष, श्री धनराज चौपड़ा व प्रकाश वोहरा उपाध्यक्ष, श्री महावीर श्रीश्रीमाल महामंत्री आदि निर्वाचित घोषित किये गये।
* चैन्नई में जयंति जैनम् साधना तीर्थ, भिवरी पूणे द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग का प्रवचन हुआ।

उनका सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम साध्वी डॉ. मंजूश्री के 75 वें अमृत जन्मोत्सव पर आयोजित हुआ।

* बैंगलोर के अकीपेठ में चातुर्मास हेतु श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. तथा साध्वी श्री पुनीत ज्योतिजी म.सा. का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हुआ।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

पू. जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के धानेरा में चातुर्मास प्रवेश की झलकियाँ

विशाल शोभायात्रा

जन समुदाय का अनुमोदन

साध्वीजी समूह का प्रवेश

स्वागत में कलशधारी महिलाएँ

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजीभाई का भाषण

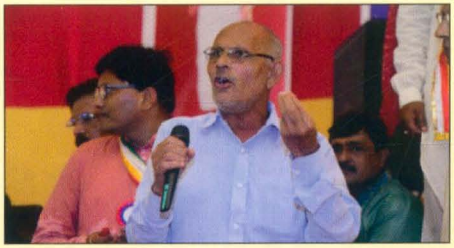

स्वागत भाषण

काम्बली समर्पण

श्री प्रकाशजी कांठेड़जी कविता

श्री सुरेशजी तांतेड़ का सम्बोधन

शाश्वतधर्म का सितंबर अंक 'क्षमापना अंक' होगा । तत्सम्बन्धी रचनाएँ आगामी 15 अगस्त तक मंदसौर कार्यालय पर पहुँचने की अपेक्षा है ।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- | वर्ष-66, अंक-8 | कुल पृष्ठ कवर सहित -108

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. का पिपलौदा चातुर्मास प्रवेश

ऐतिहासिक उपस्थिति

प्रवचन

मंत्रमुग्ध श्रोतागण

आरती द्वारा श्रद्धा

वंदन

प्रवचन

पुण्य सम्राट हमारे सिरताज

विहिप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हुकुमचंद सांवला

पिपलौदा में उपधानतप का आयोजन प्रथम प्रवेश दि. 7 सितंबर 19 द्वितीय प्रवेश दि. 9 सितंबर 19
सम्पर्क करें - राकेश जैन (आर के) 96910-13333, मुकेश जैन 91796-23309

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001